मेरी खेती

मार्च, 2024 मुल्य: 49रु

*खेत खलियान
*सब्जी
*फल
*फूल
*मशीनरी
*मौसमी व अन्य कृषि सुझाव
*सरकारी नीतियां
*किसान समाचार
*औषधीय खेती
*पशुपालन–पशुचारा
*मिट्टी की सेहत – खाद
*प्रगतिशील किसान

मेरीखेती अब 6 भाषाओ में उपलब्ध है

हिंदी | English | తెలుగు (Telugu) | ಕನ್ನಡ (Kannada) | ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi) | தமிழ் (Tamil)

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय	
सलाहकार मंडल	
खेत खलियान	01 - 08
सब्जी	09 - 18
फल	19 - 25
फूल	26 - 28
मशीनरी	29 - 35
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	36 - 38
सरकारी नीतियां	39 - 40
किसान समाचार	41 - 43
औषधीय खेती	44 - 48
पशुपालन–पशुचारा	49 - 51
मिट्टी की सेहत – खाद	52
प्रगतिशील किसान	53 - 54

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार (9 जनवरी, 2024) को भारत रत्न के लिए तीन और लोगों के नाम की घोषणा की गयी। पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव, चौधरी चरण सिंह और हरित क्रांति के जनक कहे जाने वाले एम. एस. स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा। भारत सरकार की इस घोषणा के बाद उनके घर वालों ने अपनी खुशी जाहिर की है और सरकार का आभार प्रकट किया है।

पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव की बेटी वाणी राव ने कहा कि यह बहुत खुशी का पल है। उन्होंने कहा कि पहले ही ऐसा होना था, लेकिन कहते हैं न कि भगवान के घर देर है, लेकिन अंधेर नहीं है। वानी राव ने आगे कहा, श्बहुत खुशी का दिन है पूरा तेलंगाना खुश है।
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार को मैं धन्यवाद देती हूं।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के पोते जयंत चौधरी ने भी घोषणा को लेकर खुशी जाहिर की है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट करके अपनी खुशी जाहिर की है। जयंत चौधरी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ट्वीट साझा करते हुए कैप्शन में लिखा, श्दिल जीत लिया! भारत सरकार ने इस साल भारत रत्न के लिए पांच लोगों के नाम की घोषणा की है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 फरवरी को एक्स पर नरसिम्हा राव, चौधरी चरण सिंह और एम एस स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किए जाने की घोषणा की थी।

अपने ट्वीट में उन्होंने लिखा कि हमारी सरकार का यह सौभाग्य है कि उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया जा रहा है।

धन्यवाद,

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

श्री कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय, मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर, राजस्थान

डॉ जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक आई ए आरआई

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन (एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

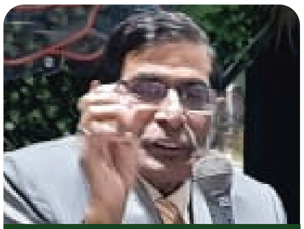
डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

खेत खलियान

मार्च माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

मार्च के महीने में रबी की फसले पक कर तैयार हो जाती है इस समय किसानों को बहुत सी बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। यहां आप जानेगे की इस महीने में आप आपने कृषि कार्यों को आसानी से कैसे करें।

दलहनी फसलें

मार्च माह में चने, मटर और मसूर की फसल पर कीट और रोगों का ज्यादा प्रकोप होता है। चने की फसल में छेदक कीट का प्रकोप भारी मात्रा में होता है, यह पत्तियों और पौधों के कोमल हिस्सों से रस चूसकर उन्हें नुक्सान पहुंचाते है। इस कीट के रासायनिक नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस 1 लीटर को 600–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर दे या फिर इसके स्थान पर 250 उस इमामेक्टिन बेंजोएट का भी उपयोग कर सकते है।

मसूर की फलियों पर इस कीट के प्रभाव को कम करने के लिए फेनवालरेट रसायन की 750 मिली लीटर या मोनोक्रोटोफास 1 लीटर को 600 – 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़क दे। साथ ही मटर और मसूर की खेती में चेपा कीट को नियंत्रित करने के लिए मैलाथियान की 50 इ सी की 2 लीटर मात्रा या फारमेथियन 25 इ सी की 1 लीटर मात्रा को 600 –700 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर में छिड़काव करे। मार्च माह यानी ग्रीष्मकाल में उड़द और मूँग की भी बुवाई की जाती है। मूँग और उड़द की विभिन्न किस्में है जिनकी बुवाई मार्च में की जाती है। उड़द की कुछ उन्नत किस्में इस प्रकार हैरू आजाद उड़द, पंत उड़द 19, पी डी यू 1, के यू 300, के यू जी 479, एल यू 391 और पंत उड़द 35। इसके अलावा मूँग की भी कुछ उन्नत किस्में है मेहा, मालवीय, जाग्रती, सम्राट, पूषा वैशाखी और ज्योति आदि है।

गेहूँ और जौ

इस समय गेहूँ और जौ की खेती में किसान को समय समय पर सिंचाई का कार्य करते रहना चाहिए। गेहूँ और जौ की खेती में 15 –20 दिन के अंतराल पर खेत में पानी लगाया जाना चाहिए। लेकिन ध्यान रहें खेत में सिंचाई का कार्य कभी तेज हवाओं के दौरान न करें। तेज हवाओं के दौरान सिंचाई का कार्य किया जाता है, तो इससे फसल के गिरने का डर रहता है। बदलते मौसम के दौरान गेहूँ और जौ में पीला रतुआ रोग होने की ज्यादा संभावनाएं रहती है। यदि गेहूँ की फसल में आपको काले रंग पुष्क्रम दिखाई दे तो उन्हें तोड़कर फेंक दे या फिर मिटटी में अच्छे से दबा दे।

ज्यादा तापमान बढ़ने की वजह से गेहूँ की पीली पत्तियां काली धारियों वाली पत्तियों में बदल जाती है। किसान इस रोग की रोकथाम के लिए प्रोपीकोनजोल 25 इ सी की 1% की दर का छिड़काव करें। यदि रोग का प्रकोप ज्यादा होता है, तो इसका फिर से छिड़काव किया जा सकता है। इस रासायनिक दवा का छिड़काव करनाल बंट रोग को भी नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। यदि गेहूँ की फसल में माहू रोग लगता है तो 2 मिली लीटर डाइमेथोएट या 20 ग्राम इमिडाक्लोप्रिड को 1000 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर दे। यदि प्रकोप ज्यादा देखने को मिलता है तो इसका फिर से छिड़काव किया जा सकता है।

ग्रीष्मकाल की चारा फसलों की बुवाई

पशुओं के चारे के लिए किसानों द्वारा ग्रीष्मकाल में चारा फसलें उगाई जाती है जैसे ग्वार, लोबिया, ज्वार, मक्का और बाजरा। इस मौसम में चारा फसलें आसानी से उगाई जा सकती है। चारा फसलों की अच्छी पैदावार के लिए किसानों को सही बीज का चयन करना चाहिए। बुवाई से पहले किसान बीज का उपचार कर ले। बीज उपचार के लिए किसान 1 किलो बीज में 2.5 ग्राम थीरम और बाबिस्टीन का उपयोग कर सकता है।

बरसीम में बीज उत्पादन

बरसीम एक चारा फसल हैं, जिसे मुख्यत पशुओं के चारे के लिए उगाया जाता है। मार्च के दूसरे सप्ताह से बरसीम की कटाई बंद कर देनी चाहिए। यदि आप बरसीम का बीज बनाना चाहते हो तो खेत में नमी खत्म न होने दे। जब तक बरसीम में फूल आये और उसमे दाना न पड़े तब तक उसमे सिंचाई करनी चाहिए। बरसीम में दाना पड़ने के बाद, पौधों पर सूक्ष्म पोषक तत्वों के मिश्रण का छिड़काव किया जा सकता है। इससे बीज की अधिक पैदावार होती है। बरसीम में फूल आने के बाद उसमे खरपतवार जैसी परेशा. नियां भी देखने को मिलती है, खरपतवार के पौधों को उसी समय उखाड़ कर फेंक दे।

गन्ने की बुवाई

मार्च के माह में उत्तरी भारत में गन्ने की खेती की जाती है। गन्ने की खेती करने के लिए गन्ने के बीज टुकड़ो का रोग रहित रहना जरूरी है। पेड़ी का बीज उपयोग करने से फसल में रोग लगने की ज्यादा संभा. वनाएं रहती है। इसलिए बुवाई से पहले गन्ने के बीज टुकड़ो का उपचार कर ले। बीज उपचार करने के लिए किसान 2 ग्राम बाबिस्टीन में गन्ने के बीज टुकड़ो को 15 मिनट तक भिगो कर रखे। रबी की फसल की कटाई के बाद किसान भूमि की उर्वरकता को बढ़ाने के लिए हरी खाद वाली फसलों की बुवाई कर सकते है। हरी फसलों में सम्मिलित है ढेंचा, सनई, लोबिया और ग्वार। किसानों द्वारा हरी खाद के लिए ज्यादातर दलहनी फसलें उगाई जाती है। यह फसलें मिट्टी की भौतिक दशा को सुधारने के साथ साथ मिट्टी में जीव. ांश की मात्रा को भी बढ़ाती है। हरी खाद के प्रयोग से दूसरी फसल में कम खाद की जरूरत पड़ती है।

कपास की उन्नत किस्मों के बारे में जानें

कपास की खेती भारत में बड़े पैमाने पर की जाती है। कपास को नकदी फसल के रूप में भी जाना जाता है। कपास की खेती ज्यादातर बारिश और खरीफ के मौसम में की जाती है। कपास की खेती के लिए काली मिट्टी को उपयुक्त माना जाता है। इस फसल का काफी अच्छा प्रभाव हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है, क्योंकि यह एक नकदी फसल है। कपास की कुछ उन्नत किस्में भी हैं ,जिनका उत्पादन कर किसान मुनाफा कमा सकता है।

1 सुपरकॉट BG II 115 किस्म

यह किस्म प्रभात सीड की बेस्ट वैरायटी में से एक है। इस किस्म की बुवाई सिंचित और असिंचित दोनों क्षेत्रों में की जा सकती है। यह किस्म कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगना और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में ज्यादातर की जाती है। इस किस्म के पौधे ज्यादातर लम्बे और फैले हुए होते है। इस बीज की बुवाई कर किसान एक एकड़ जमीन में 20 –25 क्विंटल की पैदावार प्राप्त कर सकता है। यह फसल 160 –170 दिन में पककर तैयार हो जाती है।

2 Indo US 936, Indo US 955

कपास की यह वैरायटी इंडो अमेरिकन की वेरायटीज में टॉप पर आती है। कपास की इस किस्म की खेती गुजरात और मध्य प्रदेश में की जाती है। इसकी खेती के लिए बहुत ही हल्की मिट्टी वाली भूमि की आवश्यकता रहती है। इस किस्म में कपास के बोल का वजन 7 –10 ग्राम होता है। कपास की इस किस्म में 45 –48 दिन फूल आना शुरू हो जाते है। यह किस्म लगभग 155 –165 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म में आने वाले फूल का रंग क्रीमी होता है। Indo US 936, Indo US 955 की उत्पादन क्षमता प्रति एकड़ 15 –20 क्विंटल है।

3 Ajeet 177BG II

यह किस्म सिंचित और असिंचित दोनों क्षेत्रों में उगाई जा सकती है। इस किस्म में कपास के पौधे की लम्बाई 145 से 160 सेंटीमीटर होती है। कपास की इस किस्म में बनने वाली बोल का वजन 6 –10 ग्राम होता है। Ajeet 177BG II में अच्छे किस्म के रेशें होते हैं। कपास की इस किस्म में पत्ती मोड़क कीड़े लगने की भी बहुत कम संभावनाएं होती हैं। यह फसल 145 –160 दिन के अंदर पककर तैयार हो जाती है। प्रति एकड़ में इसकी उत्पादन क्षमता 22 –25 क्विंटल होती है।

4 Mahyco Bahubali MRC 7361

इस किस्म का ज्यादातर उत्पादन राजस्थान, महाराष्ट्रा, कर्नाटक, तेलंगना, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु में होता है। यह मध्यम काल अवधि में पकने वाली फसल है। कपास की इस किस्म का वजन भी काफी अच्छा रहता है। प्रति एकड़ में इस फसल की पैदावार 20 –25 क्विंटल के आस पास हो जाती है।

5 रासी नियो

कपास की यह किस्म हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, तेलंगाना, गुजरात और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में ज्यादातर उगाई जाती है। चूसक कीड़ों के लिए यह किस्म सहिष्णु होती है। कपास की इस किस्म के पौधे हरे भरे होते है। रासी नियो की उत्पादन क्षमता प्रति एकड़ 20 –22 क्विंटल होती है। इस किस्म को हल्की और मध्यम भूमि के लिए काफी उपयुक्त माना गया है।

जायद में मूंग की इन किस्मों का उत्पादन कर किसान कमा सकते है अच्छा मुनाफा

मूंग की खेती अन्य दलहनी फसलों की तुलना में काफी सरल है।

मूंग की खेती में कम खाद और उर्वरकों के उपयोग से अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। मूंग की खेती में बहुत कम लागत आती है, किसान मूंग की उन्नत किस्मों का उत्पादन कर ज्यादा मुनाफा कमा सकते है। इस दाल में बहुत से पोषक तत्व होते है जो स्वास्थ के लिए बेहद लाभकारी होते है। मूंग की फसल की कीमत बाजार में अच्छी खासी है, जिससे की किसानों को अच्छा मुनाफा होगा। इस लेख में हम आपको मूंग की कुछ ऐसी उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी देंगे जिनकी खेती करके आप अच्छा मुनाफा कमा सकते है।

मूंग की अधिक उपज देने वाली उन्नत किस्में

पूसा विशाल किस्म

मूंग की यह किस्म बसंत ऋतू में 60 –75 दिन में और गर्मियों के माह में यह फसल 60 –65 दिन में पककर तैयार हो जाती है। मूंग की यह किस्म IARI द्वारा विकसित की गई है। यह मूंग पीला मोजक वायरस के प्रति प्रतिरोध है। यह मूंग गहरे रंग की होती है, जो की चमकदार भी होती है। यह मूंग ज्यादातर हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और पंजाब में ज्यादा मात्रा में उत्पादित की जाती है। पकने के बाद यह मूंग प्रति हेक्टेयर में 12 –13 क्विंटल बैठती है।

पूसा रत्न किस्म

पूसा रत्न किस्म की मूंग 65 –70 दिन में पककर तैयार हो जाती है। मूंग की यह किस्म IARI द्वारा विकसित की गई है। पूसा रत्न मूंग की खेती में लगने वाले पीले मोजक के प्रति सहनशील होती है। मूंग की इस किस्म पंजाब और अन्य दिल्ली एनसीआर में आने वाले क्षेत्रो में सुगम और सरल तरीके से उगाई जा सकती है।

पूसा 9531

मूंग की यह किस्म मैदानी और पहाड़ी दोनों क्षेत्रों में उगाई जा सकती है। इस किस्म के पौधे लगभग 60 –65 दिन के अंदर कटाई के लिए तैयार हो जाते है। इसकी फलिया पकने के बाद हल्के भूरे रंग की दिखा. ई पड़ती है। साथ ही इस किस्म में पीली चित्ती वाला रोग भी बहुत कम देखने को मिलता है। यह किस्म प्रति हेक्टेयर में 12 –15 प्रति क्विंटल होती है।

एच यू एम – 1
मूंग की यह किस्म बनारस हिन्दू विश्वविधालय द्वारा तैयार की गई है, इस किस्म के पौधे पर बहुत ही कम मात्रा में फलिया पाई जाती है। मूंग की यह किस्म लगभग 65 –70 दिन के अंदर पक कर तैयार हो जाती है। साथ ही मूंग की फसल में लगने वाले पीले मोजक रोग का भी इस पर कम प्रभाव पड़ता है।

टी – 44
मूंग की यह किस्म जायद के मौसम में अच्छे से उगाई जा सकती है। इस किस्म की खेती खरीफ के मौसम में भी अच्छे से की जा सकती है। यह किस्म लगभग 70 –75 दिन के अंदर पककर तैयार हो जाती है। साथ ही यह किस्म प्रति हेक्टेयर में 8 –10 क्विंटल होती है।

सोना 12 / 333
मूंग की इस किस्म को जायद के मौसम के लिए तैयार किया गया है। इस किस्म के पौधे बुवाई के दो महीने बाद पककर तैयार हो जाते है। यह किस्म प्रति हेक्टेयर में 10 क्विंटल के आस पास हो जाती है।

पन्त मूँग –1
मूंग की इस किस्म को जायद और खरीफ दोनों मौसमों में उगाया जा सकता है। मूंग की इस किस्म पर बहुत ही कम मात्रा में जीवाणु जनित रोगों का प्रभाव देखने को मिलता है। यह किस्म लगभग 70 –75 दिन के अंदर पककर तैयार हो जाती है। पन्त मूंग –1 का औसतन उत्पादन 10 –12 क्विंटल देखने को मिलता है।

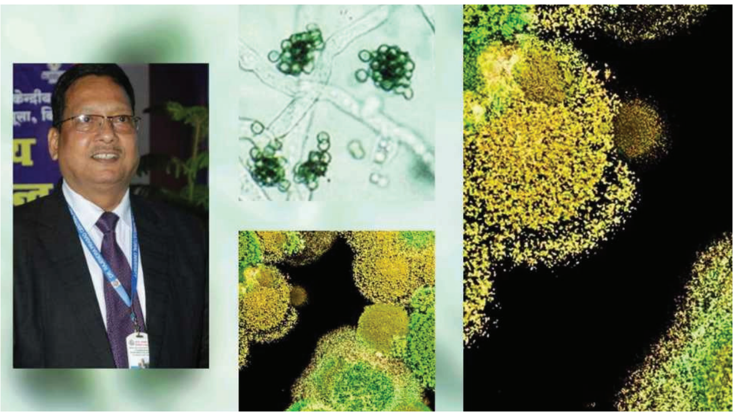

जैविक खेती का प्रमुख आधार ट्राइकोडर्मा क्या है ? इसके प्रयोग की विधि एवं लाभ क्या क्या है ?

डॉ एसके सिंह प्रोफेसर (प्लांट पैथोलॉजी)

ट्राइकोडर्माएक भिन्न फफूँद है, जो मिट्टी में पाया जाता है। यह जैविक फफूँदीनाशक है, जो मिट्टी एवं बीजों में पाये जाने वाले हानिकारक फफूँदों का नाश कर पौधे को स्वस्थ एवं निरोग बनाता है। ट्राइकोडर्मा के कई उपभेदों को पौधों के कवक रोगों के खिलाफ जैव नियंत्रण एजेंटों के रूप में विकसित किया गया है। ट्राइकोडर्मा पौधों में रोगों को कई तरह से प्रबंधित करता है यथा एंटीबायोसिस, परजीवीवाद,मेजबान–पौधे के प्रतिरोध को प्रेरित करना और प्रतिस्पर्धा शामिल हैं। अधिकांश जैव नियंत्रण एजेंट टी.एस्परेलम, टी. हार्जियनम, टी. विराइड, और टी. हैमैटम प्रजातियों के हैं। बायोकंट्रोल एजेंट आम तौर पर जड़ की सतह पर अपने प्राकृतिक आवास में बढ़ता है, और इसलिए विशेष रूप से जड़ रोग को प्रभावित करता है, लेकिन यह पर्ण रोगों के खिलाफ भी प्रभावी हो सकता है ट्राइकोडर्मा से क्यों करते है? ट्राइकोडर्मा से कैसे करते है? ट्राइकोडर्मा से क्या न करें? ट्राइकोडर्मा से क्यों न करें? इस तरह के तमाम – तमाम प्रश्न बहुधा पूछे जाते है, जिसका जबाब बहुत कम लोगों के पास होता है ।आप के इन प्रश्नों का जबाब यहाँ देने का प्रयास किया गया है ৳

ट्राइकोडर्मा से क्या करते है ?

- बीज का शोधन ट्राइकोडर्मा से करें ?
- पौधशाला की मिट्टी का शोधन ट्राइकोडर्मा से करें।
- पौध के जड़ को ट्राइकोडर्मा के घोल में डुबोकर लगायें
- पौध रोपण के समय खेत में प्रर्याप्त मात्रा में ट्राइको डर्मा का प्रयोग कार्बनिक खादों जैसे, कम्पोस्ट, खल्ली, के साथ मिलाकर करें।
- खड़ी फसल में पौधों के जड़ क्षेत्र के पास ट्राइकोडर्मा का घोल डालें।
- खेत में हरी खाद का अधिक से अधिक प्रयोग करें।
- खेत में प्रर्याप्त नमी बनाये रखें

ट्राइकोडर्मा से क्यों करते है ?

- मृदा जनित रोगों की रोकथाम का सफल एवं प्रभाव कारी तरीका है ।
- इससे आर्द्रगलन, उकठा, जड़–सड़न, तना सड़न, कालर राट, फल–सड़न जैसी बीमारिया नियंत्रित होती है ।

- जैविक विधि में ट्राइकोडर्मा सबसे प्रभावकारी एवं सफल प्रयोग होनेवाला रोग नियंत्रक है ।
- बीज के अंकुरण के समय ट्राइकोडर्मा बीज में हानिकारक फफूंद के आक्रमण तथा प्रभाव को रोक देता है और बीजों को मरने से बचाता है ।
- मृदा जनित बीमारियों की रोकथाम फफुंदनाशक से पूर्णतया संभव नहीं है ।
- यह भूमि में उपलब्ध पौधों, घासों एवं अन्य फसल अवषेषों को सड़ा– गलाकर जैविक खाद में परिवर्तित करने में सहायक होता है ।
- ट्राइकोडर्मा केंचुए की खाद या किसी भी कार्बनिक खाद तथा हल्की नमी में बहुत अच्छा काम करता है ।
- यह पौधे की अच्छी बढ़वार हेतुं वृद्धि नियामक की तरह भी काम करता है ।
- इसका प्रभाव मिट्टी में सालों साल तक बना रहता है, तथा रोग को रोकता है ।
- यह पर्यावरण को कोई हानि नही पहुचाता है।

ट्राइकोडर्मा से कैसे करते है ?

- ट्राइकोडर्मा का 6–10 ग्राम पाउडर प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर बीजों को शोधित करें ।
- पौधषाला में नीम की खली, केचुआँ की खाद या पर्याप्त सड़ी गोबर की खाद मिलाकर ट्राइकोडर्मा 10–25 ग्राम प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से मिट्टी शोधित करें ।
- खेत में सनई या ढ़ैचा पलटने के बाद कम से कम 5 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से ट्राइकोडर्मा पाउडर का बुरकाव करें।
- खेत में वर्मी कम्पोस्ट या खली या गोबर की खाद डालने के समय उसमें ट्राइकोडर्मा अच्छी तरह मिलाकर डालें ।
- ट्राइकोडर्मा 10 ग्राम एवं 100 ग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति लीटर पानी में घोलकर पौध के जड़ को डुबोकर रोपाई करें ।
- खड़ी फसल में ट्राइकोडर्मा 10 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल कर जड़ के पास डालें।

ट्राइकोडर्मा से क्या न करें?

- ट्राइकोडर्मा एवं फफूँदनाशकों का प्रयोग एक साथ न करें।
- सूखी मिट्टी में ट्राइकोडर्मा का प्रयोग न करें ।
- तेज धूप में शोधित बीज न रखें
- ट्राइकोडर्मा मिश्रित कार्बनिक खाद को न रखें ।

ट्राइकोडर्मा से क्यों न करें ?

- मिट्टी में रासायनिक दवाओं का प्रयोग तत्कालिक तथा किसी एक फफूंद विशेष के लिए होता है।
- ये दवायें मिट्टी में पहले से विद्यमान ट्राइकोडर्मा एवं अन्य फायदेमंद जैविक कारकों को मार देती हैं।
- खेत में नमी एवं पर्याप्त कार्बनिक खाद की कमी से ट्राइकोडर्मा का विकास नहीं होता और मर जाता है ।
- ट्राइकोडर्मा तेज धूप में मरने लगता है।

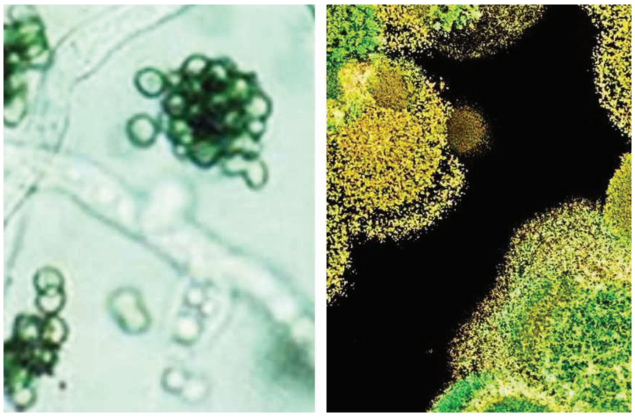

कृषि और बागवानी में ट्राइकोडर्मा के चमत्कारिक फायदे

ट्राइकोडर्मा कवक की एक प्रजाति है जो पौधों पर अपने विविध लाभकारी प्रभावों के कारण कृषि और बागवानी में निरंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कवक का यह बहुमुखी समूह अपने माइकोपरसिटिक, बायोकंट्रोल और पौधों के विकास को बढ़ावा देने वाले गुणों के लिए बहुत तेजी से लोकप्रिय हो रही है।

1. माइकोपैरासिटिक क्षमताएं

ट्राइकोडर्मा प्रजातियां निपुण माइकोपैरासाइट हैं, जिसका अर्थ है कि वे अन्य कवक के विकास को परजीवीकृत और नियंत्रित करते हैं। यह विशेषता कृषि में विशेष रूप से मूल्यवान है, जहां मिट्टी से पैदा होने वाले रोगजनक फसल को महत्वपूर्ण नुकसान पहुंचाते हैं। वही ट्राइकोडर्मा की विविध प्रजातियां पोषक तत्वों और स्थान के लिए हानिकारक कवक से प्रतिस्पर्धा करके सक्रिय रूप से हमला करते हैं और उनके विकास को रोकते हैं।

2. बायोकंट्रोल एजेंट

ट्राइकोडर्मा फ्यूसेरियम, राइजोक्टोनिया और पाइथियम की प्रजातियों सहित पौधों के रोगजनकों की एक विस्तृत श्रृंखला के खिलाफ एक प्राकृतिक बायोकंट्रोल एजेंट के रूप में कार्य करता है। राइजोस्फीयर और जड़ सतहों पर कॉलोनी बनाकर, ट्राइकोडर्मा एक सुरक्षात्मक अवरोध स्थापित करता है, जो रोगजनक कवक को पौधों की जड़ों को संक्रमित करने से रोकता है। यह जैव नियंत्रण तंत्र सिंथेटिक रासायनिक कवकनाशी की आवश्यकता को कम करता है, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देता है।

3. पौधों की रक्षा तंत्र को शामिल करना

ट्राइकोडर्मा पौधे की अपनी रक्षा तंत्र को प्रेरित करता है, जिससे रोगों के प्रति उसकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। कवक पौधों में विभिन्न रक्षा–संबंधी यौगिकों, जैसे फाइटोएलेक्सिन और रोगजनन–संबंधी प्रोटीन के उत्पादन को उत्तेजित करता है। यह प्रणालीगत प्रतिरोध फसलों को संक्रमण और तनाव का सामना करने में मदद करता है, जिससे पौधों के समग्र स्वास्थ्य में योगदान होता है।

4. पोषक तत्व घुलनशीलता

कुछ ट्राइकोडर्मा की विभिन्न प्रजातियां फॉस्फोरस,लोहा जिंक के साथ साथ अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे आवश्यक पोषक तत्वों को घुलनशील बनाने की क्षमता प्रदर्शित करती हैं, जिससे वे पौधों के लिए अधिक उपलब्ध हो जाते हैं। यह पोषक तत्व घुलनशीलता पौधों की वृद्धि और विकास को बढ़ाती है, विशेष रूप से पोषक तत्वों की कमी वाली मिट्टी में, और सिंथेटिक उर्वरकों की आवश्यकता को कम करती है।

5. उन्नत जड़ विकास

ट्राइकोडर्मा ऑक्सिन और अन्य पौधों के विकास को बढ़ावा देने वाले पदार्थों का उत्पादन करके जड़ विकास और शाखाओं को बढ़ावा देता है। बेहतर जड़ प्रणालियों के परिणामस्वरूप बेहतर पोषक तत्व और पानी ग्रहण होता है, जिससे पौधों की ताकत और समग्र फसल उत्पादकता में वृद्धि होती है।

6. तनाव सहनशीलता

ट्राइकोडर्मा पौधों को विभिन्न पर्यावरणीय तनावों, जैसे सूखा, लवणता और अत्यधिक तापमान से निपटने में मदद करता है। ट्राइकोडर्मा और पौधों के बीच बनने वाला सहजीवी संबंध पौधों की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अनुकूलन और जीवित रहने की क्षमता को बढ़ा सकता है, जिससे अंततः अधिक लचीली फसलें पैदा होती हैं।

7. कार्बनिक पदार्थ का जैव निम्नीकरण

ट्राइकोडर्मा प्रजातियाँ मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ के विघटन में योगदान करती हैं। वे एंजाइमों का स्राव करते हैं जो कार्बनिक अवशेषों के अपघटन की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे पोषक तत्व मिट्टी में वापस आ जाते हैं। यह पुनर्चक्रण प्रक्रिया मिट्टी की संरचना और उर्वरता में सुधार करती है, जिससे पौधों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनता है।

8. व्यावसायिक प्रयोग

ट्राइकोडर्मा–आधारित जैव कवकनाशी और जैव उर्वरकों ने कृषि उद्योग में लोकप्रियता हासिल की है। जीवित ट्राइकोडर्मा इनोकुलेंट्स युक्त इन वाणिज्यिक उत्पादों को ऊपर चर्चा किए गए विभिन्न लाभ प्रदान करने के लिए बीज, मिट्टी या पौधों की सतहों पर लगाया जाता है। टिकाऊ और पर्यावरण – अनुकूल कृषि को बढ़ावा देने के लिए किसान इन जैविक एजेंटों को अपनी फसल प्रबंधन प्रथाओं में तेजी से एकीकृत कर रहे हैं।

9. नेमाटोड का जैविक नियंत्रण

कुछ ट्राइकोडर्मा उपभेद पौधे–परजीवी नेमाटोड के खिलाफ विरोधी गतिविधि प्रदर्शित करते हैं। यह जैव नियंत्रण क्षमता नेमाटोड संक्रमण के प्रबंधन में मूल्यवान है, जो फसल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

10. बीज उपचार

ट्राइकोडर्मा–आधारित फॉर्मूलेशन का उपयोग बीज उपचार, मिट्टी–जनित रोगजनकों से बीज की रक्षा करने और अंकुर स्थापना को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। यह निवारक उपाय विकास के प्रारंभिक चरण से ही फसलों को स्वस्थ बनाने में योगदान देता है।

सारांश

कृषि और बागवानी में ट्राइकोडर्मा के बहुमुखी फायदे इसकी माइकोपरसिटिक क्षमताओं, जैव नियंत्रण तंत्र, पौधों की रक्षा प्रतिक्रियाओं को शामिल करने, पोषक तत्व घुलनशीलता, जड़ विकास को बढ़ावा देने, तनाव सहनशीलता बढ़ाने और कार्बनिक पदार्थ अपघटन में योगदान से उत्पन्न होते है।जैसे जैसे कृषि क्षेत्र टिकाऊ प्रथाओं को अपनाना जारी रखता है, ट्राइकोडर्मा–आधारित उत्पादों का उपयोग पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, रासायनिक इनपुट को कम करने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

जानें काले गेहूं की सम्पूर्ण जानकारी, काले गेहूं की क्या है खासियत ?

काले गेहूँ की खेती भी आमतौर पर बोये जानें वाले सामान्य गेहूँ की तरह ही की जाति है। काले गेहूँ की खेती मुख्यतरू उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में की जाती है। बाजार में इसकी कीमत 7000 –8000 रुपए प्रति क्विंटल रहती है। किसान ज्यादातर पारम्परिक खेती की और ध्यान देते है। लेकिन इसी बीच किसानो द्वारा काले गेहूँ की बुवाई पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, क्योंकि किसान काले गेहूँ की खेती से अच्छे मुनाफा कमा सकता है।

सामान्य गेहूँ की तुलना में काले गेहूँ में 60% अधिक लोह पाया गया है। साथ ही इसमें एंथोसायनिन की अधिक मात्रा पायी जाती है, जिसकी वजह से इस गेहूँ का रंग काला होता है। काला गेहूँ स्वास्थ्य के लिए भी बेहद लाभकारी माना जाता है। काला गेहूँ , गेहूँ की एक ऐसी किस्म है जो पोषक तत्वों के साथ साथ खनिजों से भी भरपूर है।

काला गेहूँ क्या है ?

काला गेहूँ साबुत अनाज की जगह एक प्रकार के बीज होते है, जिसका उपयोग भोजन के रूप में किया जाता है। काले गेहूँ की मुख्य खासियत यह है, यह सामान्य गेहूँ की तरह घास पर नहीं उगता है। यह सामान्य कोशिकाओं वाले किनोआ के समूह में सम्मिलित है। काला गेहूँ ब्लैक वॉट एथोसायनिन से भरपूर माना जाता है।

काला गेहूँ औषधीय गुणों से भरपूर है

काले गेहूँ में एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबायोटिक गुण पाए जाते है, जो स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक माने जाते है। काले गेहूँ की खेती सामान्य गेहूँ की खेती के जैसे ही की जाती है, लेकिन बाद में बालियां का रंग पकने पर काला पड जाता है।

काले गेहूँ का आटा पिसने पर लगभग चने के सत्तू की तरह दिखाई पड़ता है। इसका उपयोग मैदे के स्थान पर भी किया जा रहा है, साथ ही इससे बहुत से बिस्कुट आदि भी बनाये जा रहे है। इसी कारण बाजार में इसकी मांग दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। यह शरीर को बहुत सी बीमारियों से बचाता है और स्वास्थ्य को भी स्वस्थ रखता है।

काले गेहूँ का बाजार भाव

काला गेहूँ सामान्य गेहूँ की तुलना में महंगा होता है। इसका बाजार भाव भी सफेद गेहूँ की तुलना में अधिक है। काले गेहूँ का बाजार भाव 7000 – 8000 रुपए प्रति क्विंटल है। यह गेहूँ की किस्म किसानों के लिए ज्यादा फायदेमंद साबित हुई है। इसकी खेती से किसान ज्यादा मुनाफा कमा सकते है। बड़े शहरों में काले गेहूँ की कीमत 10 –12 हजार रुपए प्रति क्विंटल है।

काला गेहूँ है स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी जानें कैसे

काले गेहूँ में कुदरती बहुत से ऐसे तत्व पाए जाते है, जो स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद साबित होते है। काले गेहूँ के अंदर शुगर की मात्रा बहुत कम पायी जाती है, इस गेहूँ का सेवन मधुमेह के रोगी भी कर सकते है। साथ ही ये मानसिक तनाव और अन्य बीमारियों में भी राहत प्रदान करता है।

दिल के रोगो से दूर रखता है

काले गेहूँ का ज्यादातर सेवन दिल के रोगियों द्वारा किया जाता है, क्योंकि इसमें अधिक मात्रा में मैग्नेसियम पाया जाता है जो कैलेस्ट्रोल को कम करता है। कैलेस्ट्रोल के ज्यादा बढ़ने पर दिल से जुडी बहुत से बीमारियां हो सकती है, जैसे दिल के दोहरे पड़ना, हार्ट अटैक होना आदि सभी परेशानियों से दूर रहने के लिए हम काले गेहूँ का उपयोग कर सकते है। काला गेहूँ शरीर के अंदर कैलेस्ट्रोल का सामान्य स्तर बनाये रखता है।

कब्ज से राहत दिलाने में है फायदेमंद

काले गेहूँ का उपयोग कब्ज से राहत पाने के लिए भी किया जाता है। यह पाचन किर्या को स्वस्थ बनाये रखता है और शरीर में बनने वाली गैस और कब्ज को दूर रखता है। जिन लोगों को पेट से जुडी कोई भी परेशानी है वो काले गेहूँ का सेवन कर सकते है, इन रोगों में गेहूँ फायदेमंद साबित होता है। काले गेहूँ का रोजाना सेवन से शरीर को पर्याप्त मात्रा में फाइबर मिलता है।

एनीमिया (रक्त की कमी) को दूर करता है

काले गेहूँ में प्रचुर मात्रा में फाइबर, मैग्नीशियम और अन्य पोषक तत्व पाए जाते है। काले गेहूँ की रोटी का रोजाना सेवन करें। काला गेहूँ शरीर के अंदर होने वाली रक्त की कमी को दूर करता है। साथ ही ये शरीर में ऑक्सीजन के स्तर को भी संतुलित बनाये रखता है।

तनाव से बचाव करता है

शोध के अनुसार सामने आया है, कि काला गेहूँ तनाव जैसी समस्याओं को दूर करने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाता है। यह तनाव जैसे भयानक बीमारी को दूर करने में सहायक है। काले गेहूँ का सेवन मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहतर और उपयोगी बताया गया है।

काले गेहूँ की खेती बहुत ही फायदेमंद और लाभकारी साबित हुई है, इसकी बुवाई के लिए किसानो में होड़ लगी हुई है। किसान उच्च दामों पर भी काले गेहूँ के बीज को खरीदने के लिए तैयार है। क्योंकि किसान काले गेहूँ का उत्पादन कर ज्यादा मुनाफा कमा रहे है। काले गेहूँ का उपयोग बहुत सी बीमारियों में छुटकारा पाने के लिए भी किया जा रहा है, जैसे नेत्र रोग, मोटापा साथ ही इसका उपयोग कैंसर जैसी बीमारियों में राहत पाने के लिए किया जा रहा है।

सब्जी

खीरे की उन्नत खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

कद्दूवर्गीय फसलों में खीरा का अपना एक विशेष स्थान है। क्योंकि भोजन के साथ सलाद के रूप में खीरा सबसे ज्यादा उपयोग होने वाली फसल है। इस वजह से खीरा का उत्पादन देश के सभी हिस्सों में किया जाता है। गर्मियों में खीरे की बाजार में प्रचंड मांग बनी रहती है। इसे मुख्यतरू भोजन के साथ सलाद के तौर पर कच्चा खाया जाता है। ये शरीर को गर्मी से शीतलता प्रदान करता है और हमारे शरीर में पानी की कमी को भी पूरा करता है। इसलिए गर्मियों में इसका सेवन करना बेहद लाभकारी बताया गया है। खीरे की गर्मियों में बाजार मांग को मद्देनजर रखते हुए जायद सीजन में इसकी खेती करके शानदार मुनाफा अर्जित किया जा सकता है।

खीरे की फसल में पाएं जाने वाले पोषक तत्व

खीरे का वानस्पतिक नाम कुकुमिस स्टीव्स है। यह एक बेल की भाँति लटकने वाला पौधा है। खीरे के पौधे का आकार बड़ा, पत्ते बेलों वाले और त्रिकोणीय आकार के होते है और इसके फूल पीले रंग के होते हैं। खीरे में 96 फीसद पानी होता है, जो गर्मी के मौसम में लाभकारी होता है। खीरा एम बी (मोलिब्डेनम) और विटामिन का एक शानदार स्त्रोत है। खीरे का प्रयोग दिल, त्वचा और किडनी की दिक्कतों के इलाज और अल्कालाइजर के तौर पर किया जाता है।

खीरे की उन्नत खेती के लिए जलवायु व मृदा

सामान्य तौर पर खीरे को रेतीली दोमट व भारी मृदा में उत्पादित किया जाता है। परंतु, इसकी खेती के लिए एक बेहतर जल निकास वाली बलुई एवं दोमट मृदा उपयुक्त रहती है। खीरे की खेती के लिए मृदा का पीएच मान 6–7 के मध्य होना चाहिए। क्योंकि, यह पाला सहन नहीं कर सकता है। इसकी खेती उच्च तापमान में काफी बेहतरीन होती है। इसलिए जायद सीजन में इसकी खेती करना अच्छा रहता है।

खीरे की विभिन्न प्रकार की उन्नत किस्में

खीरे की कुछ उन्नत भारतीय किस्में– पंजाब सलेक्शन, पूसा संयोग, पूसा बरखा, खीरा 90, कल्यानपुर हरा खीरा, कल्यानपुर मध्यम, स्वर्ण अगेती, स्वर्ण पूर्णिमा, पूसा उदय, पूना खीरा और खीरा 75 आदि प्रमुख हैं।

खीरे की नवीनतम किस्में – पीसीयूएच– 1, पूसा उदय, स्वर्ण पूर्णा और स्वर्ण शीतल आदि प्रमुख है।

खीरे की संकर किस्में – पंत संकर खीरा– 1, प्रिया, हाइब्रिड– 1 और हाइब्रिड– 2 आदि प्रमुख है।

खीरे की विदेशी किस्में – जापानी लौंग ग्रीन, चयन, स्ट्रेट– 8 और पोइनसेट आदि प्रमुख है।

कृषि वैज्ञानिकों की जायद सब्जियों की बुवाई को लेकर सलाह

कुछ ही दिनों में जायद (रबी और खरीफ के मध्य में बोई जाने वाली फसल) की सब्जियों की बुवाई का समय आने वाला है। इन फसलों की बुवाई फरवरी से मार्च तक की जाती हैं। इन फसलों में प्रमुख रूप सौटिंडा, तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी, लौकी, तुरई, भिंडी, अरबी शामिल हैं। जिन किसानों ने खेतों में गाजर, फूल गोभी, पत्ता गोभी व आलू, ईख बोई हुई थी और अब इन फसलों के खेत खाली हो जाऐंगे। किसान इन खाली खेतों में जायद सब्जियों को बो सकते हैं। इन फसलों का लाभ किसान मार्च, अप्रैल, मई में मंडियों मे बेच कर उठा सकते हैं। इससे किसानों को काफी अच्छा आर्थिक लाभ मिलेगा।

कृषि वैज्ञानिकों की सब्जियों की बुवाई से संबंधित सलाह

सब्जियों की बुवाई सदैव पंक्तियों में ही करें। बेल वाली किसी भी फसल लौकी, तुरई, टिंडा एक फसल के पौधे अलग–अलग जगह न लगाकर एक ही क्यारी में बिजाई करें। अगर लौकी की बेल लगा रहे हैं, तो इनके मध्य में और कोई बेल जैसेरू करेला, तुरई इत्यादि न लगाएं। क्योंकि मधु मक्खियां नर व मादा फूलों के बीच परागकण का कार्य करती हैं तो किसी दूसरी फसल की बेल का परागकण लौकी के मादा फूल पर न छिड़क सकें और केवल लौकी की बेलों का ही परागकण परस्पर ज्यादा से ज्यादा छिड़क सकें। ताकि ज्यादा से ज्यादा फल लग सकें।

कृषि वैज्ञानिकों की बेल वाली सब्जियों के लिए सलाह

बेल वाली सब्जियां लौकी, तुरई, टिंडा आदि में बहुत बारी फल छोटी अवस्था में ही गल कर झड़ने लग जाते हैं। ऐसा इन फलों में संपूर्ण परागण और निषेचन नहीं हो पाने की वजह से होता है। मधु मक्खियों के भ्रमण को प्रोत्साहन देकर इस दिक्कत से बचा जा सकता है।

बेल वाली सब्जियों की बिजाई के लिए 40–45 सेंटीमीटर चौड़ी और 30 सेंटीमीटर गहरी लंबी नाली निर्मित करें। पौधे से पौधे का फासला 60 सेंटीमीटर रखते हुए नाली के दोनों किनारों पर सब्जियों के बीच या पौध रोपण करें। बेल के फैलने के लिए नाली के किनारों से करीब 2 मीटर चौड़ी क्यारियां बनाएं। यदि स्थान की कमी हो तो नाली के सामानांतर लंबाई में ही लोहे के तारों की फैंसिग लगाकर बेल का फैलाव कर सकते हैं। रस्सी के सहारे बेल को छत या किसी बहुवर्षीय पेड़ पर भी फैलाव कर सकते है।

तोरई की खेती से किसान कमा सकते है मुनाफा, जाने तोरई की उन्नत किस्में

तोरई वर्षा ऋतू में होने वाली सब्जी है। तोरई को तुराई और तोरी के नाम से जाना जाता है। यह फाइबर और विटामिन से भरपूर सब्जी है।

तोरई के पत्ते मध्यम आकार के होते है, इन पत्तों का रंग हल्का हरा होता है। तोरई दिखने में लम्बी, पतली और कोमल होती है, साथ ही इसके अंदर का हिस्सा और बीज हल्के क्रीमी रंग के होते है। तोरइ में स्वाभाविक रूप से कम कैलोरी पायी जाती है। तोरइ का इंग्लिश नाम जुकीनी है, इसकी तासीर ठंडी होती है। साथ ही तोरइ में आयरन, प्रोटीन और कैल्शियम जैसे कई पोषक तत्व पाए जाते है। साथ ही तोरइ में बहुत से बायोएक्टिव कॉम्पोनेन्ट भी पाए जाते है। तोरई उभरी हुई त्वचा और लम्बी, बेलनाकार सब्जी है। तोरई की खेती मुख्य रूप से नगदी फसल के रूप में की जाती है। तोरइ पर आने वाले फूल पीले रंग के होते है, इन्ही पुष्पों पर तोरई लगती है जिसका उपयोग सब्जी बनाने के लिए किया जाता है।

तोरइ की खेती कब की जाती है ?

तोरइ की खेती किसानों द्वारा जून से जुलाई के माह में की जाती है। इसकी फसल को पकने में 70 – 80 दिन का समय लगता है। तोरई की खेती ज्यादातर वर्षा ऋतू में की जाती है। इसकी अच्छी उपज के लिए खेत में नमी होना जरूरी है।

तोरइ की उन्नत किस्में

तोरइ की कई किस्में ऐसी है, जिनका उत्पादन कर किसान ज्यादा मुनाफा कमा सकता है। तोरइ की किस्मों का पकने का समय अलग अलग है। तुरई की उन्नत किस्में कुछ इस प्रकार है : को, –1 (co,–1), (पी के एम 1), घीया तोरई, पूसा नसदार, पूसा चिकनी, पंजाब सदाबहार और और सरपु. तिया तुरई की उन्नत किस्में है।

तोरइ की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और भूमि

तोरई की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन भूमि अच्छी जल निकास वाली होनी चाहिए। लेकिन इसकी अधिक पैदावार के लिए दोमट मिट्टी को उपयुक्त माना जाता है। नदियों के किनारे पायी जाने वाली अम्लीय मिट्टी में भी इसका उत्पादन किया जा सकता है। तोरई के विकास के लिए आद्र और शुष्क जलवायु की जरुरत रहती है। भारत में तोरइ की खेती खरीफ और जायद के सीजन में की जाती है। इसके पौधे को शुरुआत में वर्षा की जरुरत रहती है, लेकिन अधिक वर्षा भी तुरई की फसल को खराब कर सकती है। तोरइ के पौधो को अंकुरित होने के लिए सामान्य तापमान की जरुरत रहती है, गर्मियों में तुरई का पौधा अधि. कतम 35 डिग्री तापमान को भी सहन करने की क्षमता रखता है।

बुवाई के लिए बीज की मात्रा और बीज उपचार

तोरइ की बुवाई के लिए पहले खेत की जुताई करे उसके बाद जब मिट्टी का रंग भुरभुरा हो जाये तो उसमे बुवाई का काम प्रारंभ करें। प्रति हेक्टेयर में 3 से 5 किलोग्राम बीज की आवश्यकता पड़ती है। ग्रीष्म काल में तुरई की बुवाई के लिए जनवरी से मार्च का महीने बेहतर माना जाता है और यही खरीफ सीजन में बुवाई के लिए जून से जुलाई का महीना उपयुक्त माना जाता है। लेकिन बीज की बुवाई से पहले इसका उपचार कर लेना बेहतर है। बीज उपचार के लिए थीरम की 3 ग्राम मात्रा को तुरई के प्रति किलोग्राम बीज में अच्छे से उपचारित कर ले। ऐसा करने से तोरइ की फसल में लगने वाले फफूँदी रोग से बचाया जा सकता है।

तोरइ की खेती के लिए खाद और उर्वरक

तोरइ की अच्छी पैदावार के लिए किसान गोबर की खाद का उपयोग कर सकते हैं, जुताई के 15 –20 दिन पहले खेत में 200 – 250 क्विंटल खाद को डाल दे। आखिरी जुताई करते वक्त ध्यान रहे खाद को अच्छे से खेत में मिला दे। साथ ही अधिक पैदावार के लिए किसान पोटाश (80 kg), फास्फोरस (100 kg) और नाइट्रोजन (120 kg) का भी उपयोग कर सकते है। इसकी आधी मात्रा का उपयोग बुवाई के वक्त और आधी मात्रा का उपयोग बुवाई के एक महीने बाद कर सकते है।

कैसे करें सिंचाई प्रबंधन ?

वर्षा ऋतू में तोरई की फसल को ज्यादा पानी की जरुरत नहीं रहती है, क्योंकि समय समय पर बारिश फसल में पानी की कमी को पूरा करती रहती है। लेकिन गर्मियों के मौसम में फसल को पानी की ज्यादा जरुरत रहती है, इसीलिए खेत में 7 से 8 दिन के बाद सिंचाई करनी चाहिए। ताकि गर्मी की वजह से खेत में सूखा न पड़े और उसका प्रभाव फसल पर न पड़े। तुरई की फसल में खरपतवार जैसी समस्याएं भी देखने को मिलती है साथ ही बहुत से रोग और कीटों का भी प्रकोप फसल में देखने को मिलता है। इन सभी को नियंत्रित करने के लिए किसान फसल चक्र को भी अपना सकता है। साथ ही तोरई की खेती में खरपतवार को रोकने के लिए नराई और गुड़ाई का भी काम किया जा सकता है। इसके अलावा किसानों द्वारा कीटनाशक दवाइयों का भी उपयोग किया जा सकता है।

किसानों को मुनाफा दिलाने वाली पुदीने की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

पुदीना का वानस्पतिक नाम मेंथा है , इसे जड़ी बूटी वाला पौधा भी कहा जाता है। पुदीना के पौधे को स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी माना जाता है। पुदीना के अंदर विटामिन ए और सी के अलावा खनिज जैसे पोषक तत्व भी पाए जाते है। गर्मियों के समय में पुदीने की अच्छी माँग रहती है , इसीलिए इसकी खेती कर किसान अच्छा मुनाफा भी कमा सकते है। पुदीने के पौधे की पत्तियां लगभग 2–2.5 अंगुल लम्बी और 1.5 से 2 अंगुल चौड़ी रहती है। इस पौधे में से सुगन्धित खुशबू आती रहती है , गर्मियों में इसका प्रयोग बहुत सी चीजों में किया जाता है। पुदीना एक बारहमासी पौधा है।

कैसे करें पुदीने के खेत की तैयारी

पुदीने की खेती के लिए अच्छे जल निकासी वाली भूमि की आवश्यकता रहती है। पुदीने की बुवाई से पहले खेत की अच्छे से जुताई कर ले, उसके बाद भूमि को समतल कर ले। दुबारा जुताई करते वक्त खेत में गोबर की खाद का भी प्रयोग कर सकते है। इसके साथ पुदीने की अधिक उपज के लिए खेत में नाइट्रोजन, पोटाश और फोस्फोरस का भी उपयोग किया जा सकता है। पुदीने की खेती के लिए भूमि का पी एच मान 6 –7 के बीच होना चाहिए।

पुदीने के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

वैसे तो पुदीने को बसंत ऋतू में लगाया जाना बेहतर माना जाता है। लेकिन यह एक बारहमासी पौधा है ज्यादा सर्दी के मौसम को छोड़कर इसकी खेती सभी मौसम में की जा सकती है। इसकी पैदावार के लिए उष्ण जलवायु को बेहतर माना जाता है। पुदीने की खेती के लिए ज्यादा उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता रहती है। पुदीना की खेती जल जमाव वाले क्षेत्र में भी की जा सकती है, इसकी खेती के लिए नमी की आवश्यकता रहती है।

पुदीने की उन्नत किस्में

पुदीने की कुछ किस्में इस प्रकार है, कोसी, कुशाल , सक्ष्म, गौमती (एच वाई 77), शिवालिक, हिमालय , संकर 77, एमएएस–1 यह सब पुदीने की उन्नत किस्में है। इन किस्मों का उत्पादन कर किसान अच्छा मुनाफा कमा सकता है।

पुदीने की खेती की विधि क्या है

पुदीने की खेती धान की खेती के जैसे की जाती है। इसमें पहले पुदीने को खेत की एक क्यारी में अच्छे से बो लिया जाता है। जब इसकी जड़े निकल आती है ,तो पुदीने को पहले से तैयार खेत में लगा दिया जाता है। पुदीने की खेती के लिए किसानो को उचित किस्मों का चयन करना चाहिए ,ताकि किसान ज्यादा मुनाफा कमा सके।

सिंचाई प्रबंधन

पुदीने के खेत में लगभग 8 –9 बार सिंचाई का कार्य किया जाता है। पुदीने की सिंचाई ज्यादातर मिट्टी की किस्म और जलवायु पर आधारित रहती है। अगर मॉनसून के बाद अच्छी बारिश हो जाती है, तो उसमे सिंचाई का काम कम हो जाता है। मानसून के जाने के बाद पुदीने की फसल में लगभग तीन बार पानी और दिया जाता है। इसके साथ ही सर्दियों में पुदीने की फसल को ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं रहती है, किसानों द्वारा जरुरत के हिसाब से पानी दिया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण

पुदीने की फसल को खरपतवार से बचाने के लिए किसानों द्वारा समय समय पर गुड़ाई और नराई का काम किया जाना चाहिए। इसके साथ ही किसानों द्वारा कीटनाशक दवाइयों का भी उपयोग किया जा सकता है। खरपतवार नियंत्रण के लिए किसान को एक ही फसल का उत्पादन नहीं करना चाहिए, उसे फसल चक्र अपनाना चाहिए। फसल चक्र अपनाने से खेत में खरपतवार जैसी समस्याएं कम होती है और फसल का उत्पादन भी अधिक होता है।

फसल की कटाई

पुदीने की फसल लगभग 100 – 120 में पककर तैयार हो जाती है। पुदीने की फसल की कटाई किसानो द्वारा हाथ से की जाती है। पुदीने के जब निचले भाग के पत्ते पीले पड़ने लग जाये तो इसकी कटाई प्रारंभ कर दी जाती है। कटाई के बाद पुदीने के पत्तों का उपयोग बहुत से कामो में किया जाता है। पुदीने को लम्बे समय के लिए भी स्टोर किया जा सकता है। साथ ही इसके हरे पत्तों का उपयोग खाना बनाने के लिए भी किया जाता है।

पुदीने का इस्तेमाल आमतौर पर बहुत सी चीजों में किया जाता है, जैसे रू चटनी बनाने, छाछ में डालने के लिए और भी बहुत सी चीजों में इसका उपयोग किया जाता है। पुदीने की दो बार कटाई की जाती है पहली 100 –120 दिन बाद और दूसरी कटाई 80 दिन बाद। साथ ही पुदीना बहुत से औषिधीय गुणों से भरपूर है। पुदीने का ज्यादातर उत्पादन पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश राज्य में किया जाता है। साथ ही पुदीना शरीर के अंदर इम्मुनिटी को बढ़ाता है।

मार्च माह में बागवानी फसलों में किये जाने वाले आवश्यक कार्य

किसानों द्वारा बीज वाली सब्जियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। किसानों द्वारा सब्जियों में चेपा की निगरानी करते रहना चाहिए।

यदि चेपा से फसल ग्रसित है तो इसको नियंत्रित करने के लिए 25 मिली इमेडाक्लोप्रिड को प्रति लीटर पानी में मिलाकर, आसमान साफ होने पर छिड़काव करें। पके फलों की तुड़ाई छिड़काव के तुरंत बाद न करें। पके फलों की तुड़ाई कम से कम 1 सप्ताह बाद करें।

1. कद्दूवर्गीय सब्जियों की बुवाई भी इस माह में की जाती है। कद्दूवर्गीय सब्जियाँ जैसे खीरा, लौकी, करेला, तोरी, चप्पन कद्दू, पेठा, तरबूज और खरबूजा है। इन सभी सब्जियों की भी अलग अलग किस्में है।

खीरा – जापानीज लोंग ग्रीन, पूसा उदय,पोइंसेटऔर पूसा संयोग।
लौकी – पूसा सन्देश, पूसा हाइब्रिड, पूसा नवीन, पूसा समृद्धि, पूसा संतुष्टी और पीएसपीएल।
करेला – पूसा दो मौसमी ,पूसा विशेष पूसा हाइब्रिड।
चिकनी तोरी – पूसा स्नेहा, पूसा सुप्रिया।
चप्पन कद्दू – ऑस्ट्रेलियन ग्रीन, पैटी पेन, पूसा अलंकार।
खरबूजा – हरा मधु,पंजाब सुनहरी,दुर्गापुरा मधु,लखनऊ सफेदा और पंजाब संकर।

2. भिन्डी और लोबिया की बुवाई भी इसी समय की जाती है। भिन्डी की अगेती बुवाई के लिए ए–4 और परभनी क्रांति जैसी किस्मों को अपनाया जा सकता है। लोबिया की उन्नत किस्में पूसा कोमल, पूसा सुकोमल और पूसा फागुनी जैसी किस्मों की बुवाई की जा सकती है। दोनों फसलों के बीज उपचार के लिए 2 ग्राम थीरम या केपटान से 1 किलोग्राम बीज को उपचारित करें।

3. इस वक्त प्याज की फसल में हल्की सिंचाई करे। प्याज की फसल की इस अवस्था में किसी खाद और उर्वरक का उपयोग न करें। उर्वरक देने से केवल प्याज के वानस्पतिक भाग की वृद्धि होगी ना की प्याज की, इसकी गाँठ में कम वृद्धि होती है। थ्रिप्स के आक्रमण की निरंतर निगरानी रखे। थ्रिप्स कीट लगने पर 2 ग्राम कार्बारिल को 4 लीटर पानी में किसी चिपकने पदार्थ जैसे टीपोल की 1 ग्राम मात्रा को मिलाकर छिड़काव करें। लेकिन छिड़काव करते वक्त ध्यान रखे मौसम साफ होना चाहिए।

4. गर्मियों के मौसम में होने वाली मूली की बुवाई के लिए यह माह अच्छा है। मूली की सीधी बुवाई के लिए तापमान भी अनुकूल है। इस मौसम में बीजों का अंकुरण अच्छा होता है। मूली की बुवाई के लिए बीज किसी प्रमाणित स्रोत से ही प्राप्त करें।

5. लहसुन की फसल में इस वक्त ब्लोच रोग अथवा कीटों का भी आक्रमण हो सकता है। इससे बचने के लिए 2 ग्राम मेंकोजेब को 1 ग्राम टीपोल आदि के साथ मिलाकर छिड़काव करें।

6. इस मौसम में बैगन की फसल में फली छेदक कीट को नियंत्रित करने के लिए किसान इस कीट से ग्रस्त पौधों को एकट्ठा करके जला दे। यदि इस कीट का प्रकोप ज्यादा है तो 1 मिली स्पिनोसेड को 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव कर दे। टमाटर की खेती में होने वाले फली छेदक कीटों को नियंत्रित करने के लिए इस उपाय को किया जा सकता है।

उद्यान

इस माह में आम की खेती में किसी भी प्रकार के कीटनाशी का उपयोग ना करें। लेकिन आम के भुनगे का अत्यधिक प्रकोप होने पर 0.5% मोनोक्रोटोफॉस के घोल का छिड़काव किया जा सकता है। आम में खर्रा रोग के प्रकोप होने पर 0.5% डिनोकैप के घोल का छिड़काव किया जा सकता है। अंगूर, आड़ू और आलूबुखारा जैसे फलों में नमी की कमी होने पर सिंचाई करें। साथ ही मौसम को ध्यान में रखते हुए गेंदे की तैयार पौध की रोपाई करें। गेंदे की रोपाई करने से पहले खेत में खाद की उचित मात्रा डाले। गेंदे की रोपाई खेत में उचित नमी होने पर ही करें। खरपतवारो को खेत में उगने ना दे। समय समय पर खेत की नराई, गुड़ाई करते रहना चाहिए।

भिंडी की इन किस्मों का करें उत्पादन मिलेगा बेहतरीन लाभ

इस माह में किसानों को अपनी आय को बढ़ाने के लिए भिंडी की इन टॉप 5 उन्नत किस्मों की खेती करनी चाहिए। जो कम वक्त में शानदार उपज देने में सक्षम हैं। भिंडी की यह किस्में अर्का अनामिका, पंजाब पद्मिनी, अर्का अभय, पूसा सावनी और परभनी क्रांति है। किसान अपनी आय को बढ़ाने के लिए खेत में सीजन के मुताबिक फल व सब्जियों का उत्पादन करते हैं। इसी कड़ी में आज हम देश के कृषकों के लिए भिंडी की टॉप 5 उन्नत किस्मों की जानकारी लेकर आए हैं। हम जिन भिंडी की उन्नत किस्मों की बात कर रहे हैं, वह पूसा सावनी, परभनी क्रांति, अर्का अनामिका, पंजाब पद्मिनी और अर्का अभय किस्म है।ये समस्त किस्में कम वक्त में शानदार उपज देने में सक्षम हैं। बतादें, कि भिंडी की इन किस्मों की बाजार में वर्षभर मांग बनी रहती है। भारत के कई राज्यों में भिंडी की इन किस्मों का उत्पादन किया जाता है। भिंडी की इन टॉप 5 उन्नत किस्मों में विटामिन, फाइबर, एंटीऑक्सीडेंट और मिनरल्स के साथ–साथ मैग्नीशियम, फास्फोरस, आयरन, कैल्शियम और पोटैशियम की भरपूर मात्रा पाई जाती है।

भिंडी की शानदार 5 उन्नत किस्में निम्नलिखित हैं

भिंडी की पूसा सावनी किस्म – भिंडी की यह उन्नत किस्म गर्मी, ठंड और बारिश के मौसम में सुगमता से उत्पादित की जा सकती है। भिंडी की पूसा सावनी किस्म बारिश के मौसम में लगभग 60 से 65 दिन के समयांतराल में तैयार हो जाती है।

भिंडी की परभनी क्रांति किस्म– भिंडी की इस किस्म को पीता–रोग का प्रतिरोध माना जाता है। अगर किसान इनके बीज खेती में लगाते हैं, तो यह करीब 50 दिनों के समयांतराल पर ही फल देने लगते हैं। बतादें, कि परभनी क्रांति किस्म की भिंडी गहरे हरे रंग की होती है। साथ ही, इसकी लंबाई 15–18 सेमी तक की होती है।

भिंडी की अर्का अनामिका किस्म– यह किस्म येलोवेन मोजेक विषाणु रोग से लड़ने में काफी सक्षम है। इस किस्म की भिंडी में रोए नहीं पाए जाते। साथ ही, इसके फल काफी ज्यादा मुलायम होते हैं। भिंडी की यह किस्म गर्मी और बारिश दोनों ही सीजन में शानदार उत्पादन देने में सक्षम है।

भिंडी की पंजाब पद्मिनी किस्म– भिंडी की इस किस्म को पंजाब विश्वविद्यालय के द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म की भिंडी एक दम सीधी और चिकनी होती है। साथ ही, यदि हम इसके रंग की बात करें, तो यह भिंडी गहरे रंग की होती है।

भिंडी की अर्का अभय किस्म– यह किस्म येलोवेन मोजेक विषाणु रोग से लड़ने में सक्षम है। भिंडी की अर्का अभय किस्म खेत में लगाने से कुछ ही दिनों में अच्छा उत्पादन देती है। इस किस्म की भिंडी के पौधे 120–150 सेमी लंबे और सीधे होते हैं।

सेहत के लिए लाभकारी लहसुन फसल की विस्तृत जानकारी

भारत के ज्यादातर राज्यों में लहसुन की खेती बड़े स्तर पर की जाती है। किसानो द्वारा इसकी खेती अक्टूबर से नवंबर माह के बीच में की जाती है। लहसुन की खेती में किसानो द्वारा कलियों को जमीन के अंदर बोया जाता हैं और मिट्टी से ढक दिया जाता हैं। बुवाई करने से पहले एक बार देख ले कंद खराब तो नहीं हैं,अगर कंद खराब हुई तो लहसुन की पूरी फसल खराब हो सकती हैं।

लहसुन की बुवाई करते वक्त कलियों के बीच की दूरी समान होनी चाहिए। लहसुन की खेती के लिए बहुत ही कम तापमान की आवश्यकता रहती है। इसकी फसल के लिए न ही ज्यादा ठंड की आवश्कता होती हैं और न ही ज्यादा गर्मी की। लहसुन में एल्सिन नामक तत्व पाया जाता हैं, जिसकी वजह से लहसुन में से गंध आती हैं

लहसुन की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

लहसुन की खेती के लिए हमे सामान्य तापमान की जरुरत रहती हैं। लहसुन की कंद का पकना उसके तापमान पर निर्भर करता है। ज्यादा ठंड और गर्मी की वजह से लहसुन की फसल खराब भी हो सकती हैं।

लहसुन के खेत को कैसे तैयार किया जाये

लहसुन के खेत की अच्छे से जुताई करने के बाद खेत में गोबर खाद का प्रयोग करें ,और उसे अच्छे से मिट्टी में मिला दे। खेत की फिर से जुताई करें ताकि गोबर के खाद को अच्छे से खेत में मिलाया जा सके। इसके बाद खेत में सिंचाई का काम कर सकते है। अगर खेत में खरपतवार जैसे कोई रोग देखने को मिलते हैं तो उसके लिए हम रासायनिक खाद का भी प्रयोग कर सकते है।

लहसुन खाने से होने वाले फायदे क्या हैं:

इम्युनिटी को बढ़ाने में सहायक हैं

लहसुन खाने से इम्युनिटी बढ़ती हैं ,इसमें एल्सिन नामक तत्व पाया जाता हैं। जो की शरीर के अंदर इम्मुनिटी को बढ़ाने में सहायता करता है। लहसुन में जिंक ,फॉस्फोरस और मैग्नीशियम पाया जाता हैं जो की हमारे शरीर के लिए बहुत ही फायदेमंद होता हैं।

केलेस्ट्रॉल कम करने में मदद करता हैं

लहसुन बढ़ते हुए केलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होती हैं ,बढ़ता हुआ केलेस्ट्रॉल हमारे स्वस्थ्य के लिए हानिकारक होता हैं। ये बेकार कॉलेस्ट्रॉल को बहार निकालने में सहायक होता हैं। लहसुन खून को पतला करके हृदय से जुडी परशानियों को कम करने में सहायक होता हैं।

कैंसर जैसी बीमारियों में रोकथाम

लहसुन कैंसर बीमारी के रोकथाम में भी सहायक हैं। लहसुन के अंदर पाए जाने वाले बहुत से तत्व ऐसे रहते हैं जो कैंसर के बढ़ते हुए सेल्स को फैलने से रोकता हैं। लहसुन को कैंसर से पीड़ित लोगो के लिए फायदेमंद माना गया है।

पाचन किर्या में सहायक

लहसुन खाना पाचन किर्या के लिए सुलभ माना जाता हैं। लहसुन को आहार में लेने से,ये आंतो पर आयी सूजन को कम करता है। लहसुन खाने से पेट में पड़ने वाले कीड़े खत्म हो जाते है। साथ ही यह आंतो को लाभ पहुँचता है। लहसुन खाने से शरीर के अंदर पड़ने वाले बेकार बैक्टीरिया को नष्ट करता हैं।

लहसुन खाने से होने वाले नुक्सान क्या हैं?

लहसुन खाने से बहुत से फायदे होते हैं, लेकिन कभी कभी लहसुन का ज्यादा उपयोग करना हानिकारक होता हैं। जानिए लहसुन के ज्यादा उपयोग करने से होने वाले नुक्सान:

लो ब्लड प्रेशर वालों के लिए हानिकारक

लहसुन खाना ज्यादातर हाई ब्लड प्रेशर वालों के लिए बेहतर माना जाता हैं, लेकिन यही इसका दुष्प्रभाव लो ब्लड प्रेशर वालो के व्यक्तियों के ऊपर पड सकता है। लहसुन का तासीर गर्म होता हैं जिसकी वजह से यह, लो ब्लड प्रेशर वाले लोगो के लिए फायदेमंद नहीं हैं। इसके खाने से जी मचलना और सीने पर जलन होना आदि हो सकता है।

गैस और एसिडिटी जैसी समस्याएं हो सकती हैं?

लहसुन खाने से पाचन किर्या से सम्बंधित बहुत सी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं, ज्यादा लहसुन खाने से डायरिया जैसी बीमारी भी हो सकती है। कमजोर पाचन किर्या वाले लोगो को ज्यादा लहसुन का पचाव अच्छे से नहीं हो पाता है, जिसकी वजह से पेट में गैस, दर्द और एसिडिटी जैसी बीमारियां भी उत्पन्न होती है।

रक्तश्राव और एलेर्जी जैसी समस्याओं को बढ़ावा देता हैं?

जो रोजाना लहसुन का सेवन करते हैं उन्हें रक्तश्राव जैसे परेशा. नियां हो सकती हैं। लहसुन का उपयोग एलेर्जी से पीडित लोगो को नहीं करना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति को पहले से एलेर्जी हैं तो वो स्वास्थ्य परामर्श से सलाह लेकर लहसुन का प्रयोग कर सकते है। लहसुन का सेवन ज्यादातर सर्दियों के मौसम में किया जाता हैं, क्यूंकि लहसुन गर्म तासीर का रहता हैं। सर्दियों में ज्यादा. तर लोगो द्वारा भुना हुआ लहसुन खाया जाता है, क्यूंकि ये वजन कम करने और दिल को स्वस्थ्य रखने में मददगार रहता है। लेकिन जरुरत से ज्यादा लहसुन का उपयोग करने से शरीर को बहुत से नुकसान भी हो सकते है। लहसुन का खाली पेट सेवन करने से एसिडिटी जैसी समस्या भी हो सकती है। लहसुन में ब्लड को पतला करने वाले कुछ गुण विघमान होते हैं, जो ह्रदय से संबंधित समस्याओं के लिए अच्छे होते हैं। अगर लहसुन का अधिक इस्तेमाल किया जाता है, तो इससे ब्लीडिंग जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। लहसुन को खाने का सबसे सही तरीका यह है, कि आप सुबह खाली पेट एक गिलास गर्म पानी के साथ लहसुन का सेवन करें। ये स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को नियंत्रित करता है। साथ ही, त्वचा से जुड़े रोगो के लिए भी अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

ककड़ी की खेती से जुड़ी विस्तृत जानकारी

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। आज हम आपको ककड़ी की फसल के बारे में जानकारी देंगे, तो आपको सबसे पहले बतादें, कि ककड़ी कुकरबिटेसी परिवार से संबंधित है और इसका वानस्पतिक नाम कुकुमिस मेलो है और भारत इसका मूल स्थान है। यह हल्के हरे रंग की होती है, जिसका छिल्का नर्म और गुद्दा सफेद होता है। इसका मुख्य रूप से सलाद के रूप में नमक और काली मिर्च के साथ सेवन किया जाता है। इसके फल में ठंडा प्रभाव होता है। इसलिए इसे मुख्य तौर पर गर्मियों के मौसम में खाया जाता है।

ककड़ी की खेती के लिए मृदा एवं भूमि

ककड़ी का उत्पादन मिट्टी की विभिन्न किस्मों में बड़ी ही आसानी से किया जा सकता है, जैसे रेतीली दोमट से भारी मिट्टी जो कि अच्छी जल निकासी वाली हो। इसकी खेती के लिए मिट्टी का pH 5.8–7.5 होना चाहिए। इसके साथ–साथ जमीन की तैयारी भी करना बहुत जरूरी है। ककड़ी की खेती के लिए अच्छी तरह से तैयार जमीन की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मिट्टी को भुरभुरा करने के लिए हैरो से 2–3 बार जोताई करना काफी जरूरी है।

बिजाई का समय और विधि क्या है?

बीजों की बिजाई के लिए फरवरी–मार्च का महीना सबसे उपयुक्त माना जाता है। बीजों के मध्य फासला खालियों के बीच 200–250 सैं.मी. और मेंड़ों के बीच 60–90 सैं.मी. रखना फायदेमंद साबित होगा।

फसल के शानदार विकास के लिए दो बीजों को एक जगह पर बोयें। बीज की गहराई की बात करें तो बीजों को 2.5–4 सैं.मी गहराई में बोयें। बिजाई का तरीका बीजों को बैड या मेंड़ पर सीधे बोया जाता है। बीज की मात्रा की बात करें तो आप प्रति एकड़ में 1 किलो बीजों का इस्तेमाल करें।

बीजोपचार व खाद

मिट्टी से होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए बैनलेट या बविरिःटन 2.5 ग्राम से प्रति किलो बीजों का उपचार करें। वहीं, खाद की बात करें तो नर्सरी बैड से 15 सैं.मी. दूरी पर फासफोरस और पोटाश की पूरी मात्रा और नाइट्रोजन का 1ď3 भाग बिजाई के समय डालें। बाकी की बची हुई नाइट्रोजन बिजाई से एक महीना बाद में डालें।

खरपतवार नियंत्रण व सिंचाई

खरपतवार नियंत्रण के लिए बेलों के फैलने से पहले इनकी ऊपरी परत की कसी से हल्की गुड़ाई करें। सिंचाई की बात करें तो बिजाई के तुरंत पश्चात सिंचाई करना बेहद जरूरी है। गर्मियों में, 4–5 सिंचाइयों की काफी जरूरत होती है और बारिश के मौसम में सिंचाई जरूरत के मुताबिक करें।

ककड़ी के पौधे में लगने वाले हानिकारक कीट और उनकी रोकथाम

चेपा और थ्रिप्स: ये कीट पत्तों का रस चूसते हैं, जिससे पत्ते पीले पड़ जाते हैं और गिर जाते हैं। थ्रिप्स के कारण पत्ते मुड़ जाते हैं, जिससे पत्ते कप के आकार के और ऊपर की तरफ मुड़े हुए होते हैं।

उपचार: इसका हमला फसल में दिखाई दे तो, थायामैथोकस्म 5 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी की स्प्रे फसल पर करें।

भुण्डी: भुंडी कीट के कारण फूल, पत्ते और तने नष्ट हो जाते हैं।

उपचार: यदि इसका हमला दिखाई दें तो, मैलाथियोन 2 मि.ली. या कार्बरिल 4 ग्राम को प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें यह भुंडी की रोकथाम में सहायक है।

फल की मक्खी

फल की मक्खी: यह ककड़ी की फसल का गंभीर कीट है। नर मक्खी फल की बाहरी परत के नीचे अंडे देती है उसके बाद ये छोटे कीट फल के गुद्दे को अपना भोजन बनाते हैं उसके बाद फल गलना शुरू हो जाता है और गिर जाता है।

उपचार: फसल को फल की मक्खी से बचाने के लिए नीम के तेल में 3.0ः फोलियर स्प्रे करें।

:

पत्तों पर सफेद धब्बे वाली बीमारियां और उनकी रोकथाम

सफेद फफूंदी: पत्तों के ऊपरी सतह पर सफेद रंग के धब्बे पड़ जाते हैं ये धब्बे प्रभावित पौधे के मुख्य तने पर भी दिखाई देते हैं। इसके कीट पौधे को अपने भोजन के रूप में प्रयोग करते हैं। इनका हमला होने पर पत्ते गिरते हैं और फल पकने से पहले ही गिर जाते हैं।

उपचार: सफेद फफूँदी का हमला खेत में दिखे तो पानी में घुलनशील सल्फर 20 ग्राम को 10 लीटर पानी में डालकर 10 दिनों के अंतराल पर 2–3 बार स्प्रे करें।

एंथ्राकनोस

ऐंथ्राक्नोस: यह पत्तों पर हमला करता है, जिसके कारण पत्ते झुलसे हुए दिखाई देते हैं।

उपचार: एंथ्राकनोस की रोकथाम के लिए कार्बेनडाजिम 2 ग्राम से प्रति किलो बीजों का उपचार करें। यदि इसका हमला खेत में दिखाई दे तो, मैनकोजेब 2 ग्राम या कार्बेनडाजिम 2 ग्राम को प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

पत्तों के निचले धब्बे

पत्तों के निचली ओर धब्बे: यह रोग स्यिूडोपरनोस्पोरा क्यूबेनसिस के कारण होता है। इससे पत्तों की निचली सतह पर छोटे और जामुनी रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

उपचार: यदि इसका प्रभाव दिखाई दे तो डाइथेन एम–45 या डाइथेन Z-78 का प्रयोग इस बीमारी से बचने के लिए करें।

ककड़ी का मुरझाना

मुरझाना: यह पौधे के वेस्कुलर टिशुओं पर प्रभाव डालता है, जिससे पौधा तुरंत ही मुरझा जाता है।

उपचार: फुजारियम सूखे से बचाव के लिए कप्तान या हैक्सोकैप 0.2–0.3ःका छिड़काव करें।

कुकुरबिट फाइलोडी: इस बीमारी के कारण पोर छोटे और पौधे की वृद्धि रूक जाती है, जिसके कारण फसल फल पैदा नहीं करती।

उपचाररू इस बीमारी से बचाव के लिए बिजाई के समय फुराडन 5 किलोग्राम बिजाई के समय प्रति एकड़ में डालें। यदि इसका हमला दिखे तो डाईमेक्रोन 0.05 : 10 दिनों के अंतराल पर करें।

ककड़ी फसल की कटाई कब करें

ककड़ी के फल 60–70 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। कटाई मुख्य तौर पर फल के पूरी तरह विकसित होने और नर्म होने पर की जाती है। कटाई मुख्य रूप से फूल निकलने के मौसम में 3–4 दिनों के अंतराल पर की जाती है।

ककड़ी का बीज उत्पादन कैसे करें ?

ककड़ी को अन्य किस्मों जैसे कि स्नैप मैलन, वाइल्ड मैलन, खरबूजा और ककड़ी आदि से 1000 मीटर की दूरी पर रखें। खेत में से प्रभावित पौधों को हटा दें। जब फल पक जायें जैसे उनका रंग बदलकर हल्का हो जाये तब उन्हें ताजे पानी में रखकर हाथों से तोड़ें और गुद्दे से बीजों को अलग कर लें। बीज जो नीचे स्तर पर बैठ जाते हैं, उन्हें बीज उद्देश्य के लिए एकत्रित किया जाता है।

फल

खजूर की खेती के लिए सरकार दे रही है सब्सिडी, किसान कमा सकते है अब ज्यादा मुनाफा

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत ,उद्दान विभाग किसानों को खजूर की खेती के लिए सब्सिडी प्रदान कर रही है। इस योजना में 17 जिलों का चयन किया गया है जो, ऑफशॉट और टिश्यू कल्चर तकनीक के जरिये खजूर की खेती करेंगे। इस योजना में खजूर की खेती करने के लिए किसानों को 75: सब्सिडी प्रदान की जाएगी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को विभिन्न फसलों के उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करना है। इस कड़ी में राजस्थ. ान सरकार किसानों को सब्सिडी प्रदान कर रही है , ताकि वो कम लागत पर फसल का उत्पादन कर सके। साथ ही सरकार फलो और सब्जियों के लिए भी सब्सिडी प्रदान कर रही है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना बाड़मेर, चूरू, सिरोही, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जोधपुर, पाली, जालोर, नौगर ,बीकानेर और झुंझुनू जिलों में शुरू की जाएगी। यदि इन जिलों में को किसान खजूर की खेती करता है, तो उसे इस योजना के तहत लाभ प्रदान किया जायेगा। इसमें टिश्यू और ऑफशॉट तकनीक से उत्पादित खजूर की फसल की रोपाई के लिए किसानों को 75% सब्सिडी प्रदान की जाएगी।

खजूर की खेती के लिए इन तकनीकों का किया जायेगा इस्तेमाल

खजूर की खेती के लिए टिश्यू कल्चर और ऑफशॉट तकनीक का इस्तेमाल किया जायेगा। इसमें किसानों को 0.5 से 4 हेक्टेयर की खेती के लिए किसानों को अनुदान दिया जायेगा।

इन तकनीकों के द्वारा उगाये पौधे से खजूर के बगीचे तैयार किये जाते है। टिश्यू कल्चर तकनीक से उगाये गए पौधे लगाने पर किसानों को 3000 रुपया प्रति पौधा या इकाई लागत 75% अनुदान दिया जायेगा। यदि किसान ऑफशॉट तकनीक से खजूर की खेती करता है तो 1100 रुपया प्रति पौधा का 75% का मूल्य मिलेगा। खजूर के पौधे खरीदने के साथ साथ , खजूर की जड़ो के जमने पर 1500 रुपए का भी 75% मूल्य प्रदान किया जायेगा।

प्रति हेक्टेयर में खजूर की बुवाई के लिए किसानों को 8 नर पौधे और 148 मादा पौधो की जरुरत पड़ेगी। खजूर की मादा किस्मों में शामिल है रू बराही, मेडजूल, खद्राबी, खूनेजी, खलास, सागई और हलावी। यही नर किस्मों में केवल घानामी और अल इन सिटी पर ही सब्सिडी प्रदान की जाएगी। सरकार द्वारा रोपड़ सामग्री पर 70 –75 के साथ साथ एक नया बाग स्थापित करने करने के लिए लगभग 3.7 लाख रुपए से भी ज्यादा कीमत आती है। खजूर की फसल में बुवाई के 3 साल बाद फल आना शुरू हो जाते है। खजूर की फसल प्रति हेक्टेयर 3000 किलोग्र. ाम के आस पास उत्पादित कर ली जाती है। किसान ताजे फलो को बेचकर एक हेक्टेयर में 4.8 लाख रुपए आसानी से कमा सकते है। पांच साल बाद खजूर की फसल की उपज ज्यादा हो जाती है, प्रति हेक्टेयर 10 –12 टन की उपज किसान खजूर की फसल से प्राप्त कर सकता है। बाजार भाव के जरिये किसान प्रति हेक्टेयर में 3.5 लाख रुपया का शुद्ध मुनाफा कमा सकता है।

लीची में पुष्प प्रबंधन (Flower Management)करके अधिक उपज एवं गुणवत्तायुक्त फल कैसे प्राप्त करें?

डॉ एसके सिंह प्रोफेसर (प्लांट पैथोलॉजी)

भारत में 92 हजार हेक्टेयर में लीची की खेती हो रही है जिससे कुल 686 हजार मैट्रिक टन उत्पादन प्राप्त होता है, जबकि बिहार में लीची की खेती 32 हजार हेक्टेयर में होती है जिससे 300 मैट्रिक टन लीची का फल प्राप्त होता है। बिहार में लीची की उत्पादकता 8 टन/ हेक्टेयर है जबकि राष्ट्रीय उत्पादकता 7.4 टन/ हेक्टेयर है।

लीची को फलों की रानी कहते है।इसे प्राइड ऑफ बिहार भी कहते है। कुल लीची उत्पादन में लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा बिहार का है। फरवरी माह का दूसरा हप्ता चल रहा है। इस समय हमारे लीची उत्पादक किसान यह जानने के लिए उत्सुक है की उन्हें फरवरी माह में क्या करना चाहिए क्या नही करना चाहिए । लीची के पेड़ फूल आने की अवधि के दौरान 68–86°F (20–30°C) के बीच गर्म तापमान पसंद करते हैं। उन्हें उच्च आर्द्रता स्तर 70–90% की आवश्यकता होती है।पर्याप्त धूप, अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी और न्यूनतम हवा भी सफल फूल आने के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं। इसके अतिरिक्त, लीची के पेड़ों को फूल आने के लिए उनके सुप्त चरण के दौरान ठंडे तापमान (68°F या 20°C से नीचे) की अवधि से लाभ होता है। इष्टतम फल उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए लीची की खेती में फूलों का प्रबंधन महत्वपूर्ण है।

1. लीची के फूल को समझना

जलवायु और विविधता के आधार पर, लीची के पेड़ आमतौर पर देर से सर्दियों या शुरुआती वसंत के दौरान फूल आते हैं।पुष्पन तापमान, वर्षा, आर्द्रता और पोषण सहित विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है।

2.कटाई छंटाई

कटाई छंटाई पेड़ के आकार को बनाए रखने, मृत लकड़ी को हटाने और वायु प्रवाह को बढ़ावा देने में मदद करती है, जिससे रोग एवं कीट का आक्रमण कम होता है। युवा पेड़ों की ट्रेनिंग एवं प्रूनिंग करने से मजबूत मचान विकास को बढ़ावा मिलता है, जो परिपक्व पेड़ों में फूल और फल उत्पादन को प्रोत्साहित करता है।फूलों वाली टहनियों को अत्यधिक हटाने से बचने के लिए छंटाई विवेकपूर्ण तरीके से की जानी चाहिए।

3. पोषक तत्व प्रबंधन

फूलों की शुरुआत और विकास के लिए उचित पोषण आवश्यक है। मृदा परीक्षण पोषक तत्वों की कमी को समझने और उचित उर्वरक रणनीति तैयार करने में मदद करता है। नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम और सूक्ष्म पोषक तत्वों के साथ संतुलित उर्वरक स्वस्थ फूलों के विकास में सहायता करता है।लीची में (प्रजाति के अनुसार) मंजर आने के 30 दिन पहले पेड़ पर जिंक सल्फेट की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर की दर से घोल बना कर पहला छिड़काव करना चाहिए , इसके 15–20 दिन के बाद दूसरा छिड़काव करने से मंजर एवं फूल अच्छे आते है।फल लगने के 15 दिन बाद बोरेक्स की 4 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर दो या तीन छिड़काव करने से फलों का झड़ना कम हो जाता है, मिठास में वृद्धि होती है तथा फल के आकार एवं रंग में सुधार होने के साथ–साथ फल के फटने की समस्या में भी कमी आती है।

4. सिंचाई

लीची के बगीचे में अच्छी फलन एवं उत्तम गुणवत्ता के लिये मंजर आने के सम्भावित समय से तीन माह पहले से लेकर फूल में पूरी तरह से फल लगने से ठीक पहले तक लीची के बाग में सिंचाई कत्तई न करें तथा 10 वर्ष से अधिक पुराने बाग में कोई भी अंतर फसल को नही लेना चाहिए। बाग की बहुत हल्की गुड़ाई साफ सफाई के दृष्टिगत कर सकते है लेकिन फूल आने के पहले से लेकर पूरी तरह से फल लग जाने से पूर्व तक सिंचाई बिल्कुल न करें,अन्यथा नुकसान हो सकता है।फूल बनने और फल लगने के लिए मिट्टी की पर्याप्त नमी महत्वपूर्ण है। मौसम की स्थिति, मिट्टी की नमी के स्तर और पेड़ों की वृद्धि अवस्था के आधार पर सिंचाई शेड्यूल को समायोजित किया जाना चाहिए।

5. कीट एवं रोग प्रबंधन

यदि बाग में मंजर अभी तक नही आये हो या 2 प्रतिशत से कम फूल आए हो तो उस बाग में इमिडाक्लोप्राइड/1मीली लीटर प्रति लीटर एवम घुलनशील गंधक की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। एफिड्स, माइट्स और फल छेदक जैसे कीट फूलों को नुकसान पहुंचाते हैं और फलों का बनना कम करते हैं।नियमित निगरानी से कीटों का शीघ्र पता लगाने और कल्चरल, जैविक या रासायनिक नियंत्रण उपायों का उपयोग करके समय पर हस्तक्षेप करने में मदद मिलती है। एन्थ्रेक्नोज और पाउडरी फफूंदी जैसे रोग फूलों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं और फलों की उपज को कम करते हैं। लीची के बाग में माइट से ग्रसित शाखाओं को काट कर एक जगह एकत्र करके जला देना चाहिए।

6. परागण

लीची के फूल मुख्यतः मधुमक्खियों द्वारा कीट–परागित होते हैं।फूल आते समय पेड़ पर किसी प्रकार के किसी भी कीटनाशी दवा का छिड़काव नही करना चाहिए।फूल आते समय लीची के बगीचे में 15 से 20 मधुमक्खी के बक्शे प्रति हेक्टेयर की दर से रखना चाहिए, जिससे परागण बहुत अच्छा होता है, जिससे फल कम झड़ते है एवं फल की गुणवक्ता भी अच्छी होती है एवं बागवान को अतरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है।आवास संरक्षण और मधुमक्खी पालन प्रबंधन के माध्यम से मधुमक्खियों की आबादी को बनाए रखने से परागण दक्षता में वृद्धि होती है। सीमित मधुमक्खी गतिविधि वाले बगीचों में, पर्याप्त फल सेट सुनिश्चित करने के लिए मैन्युअल परागण की आवश्यकता हो सकती है।

7. पर्यावरण प्रबंधन

फूल आने के दौरान पाले से सुरक्षा महत्वपूर्ण है, क्योंकि लीची के फूलों को पाले से क्षति होने की आशंका रहती है।ओवरहेड स्प्रिंकलर से सिंचाई करने से बाग के तापक्रम को 5 डिग्री सेल्सियस कम करने में सहायक होता है । विंडब्रेक प्रदान करने से फूलों और युवा फलों के गुच्छों को हवा से होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है।

8. हार्मोनल विनियमन

जिबरेलिन और साइटोकिनिन जैसे विकास नियामकों का अनुप्रयोग फूल आने और फल लगने को प्रभावित कर सकता है। पेड़ों के स्वास्थ्य और फलों की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव से बचने के लिए हार्मोनल उपचार के समय और एकाग्रता को सावधानीपूर्वक प्रबंधित करने की आवश्यकता है। फल लगने के एक सप्ताह बाद प्लैनोफिक्स की 1 मि.ली. दवा को प्रति 3 लीटर की दर से पानी में घोलकर एक छिड़काव करके फलों को झड़ने से बचाया जा सकता है।

9. निगरानी और मूल्यांकन

फूलों की प्रगति, फल लगने और पेड़ के स्वास्थ्य की नियमित निगरानी से प्रबंधन प्रथाओं में समय पर समायोजन संभव हो पाता है। विस्तृत रिकॉर्ड रखने से विभिन्न हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और समय के साथ प्रबंधन रणनीतियों को परिष्कृत करने में मदद मिलती है।

सारांश

लीची फल उत्पादन और गुणवत्ता को अधिकतम करने के लिए प्रभावी फूल प्रबंधन आवश्यक है। एक समग्र दृष्टिकोण जो कल्चरल, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन उपायों को एकीकृत करता है जो सफलता की कुंजी है। लीची की खेती में फूल प्रबंधन रणनीतियों को अनुकूलित करने के लिए नियमित निगरानी, समय पर हस्तक्षेप और निरंतर सीखना महत्वपूर्ण है। इन प्रथाओं को लागू करने से स्वस्थ लीची के पेड़, प्रचुर मात्रा में फूल और अंततः, उच्च गुणवत्ता वाले फलों की भरपूर फसल में योगदान मिलेगा।

ड्रैगन फ्रूट की खेती कर किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते है

ड्रैगन फ्रूट को पिताया के नाम से भी जाना जाता है। यह कैक्टस की प्रजाति का ही एक फल है। यह अन्य फलो की तुलना में अधिक पौष्टिक होता है। ड्रैगन फ्रूट बहार से अनानास के जैसे प्रतीत होता है। लेकिन अंदर से यह कीवी के जैसा दिखता है, इसका गूदा सफेद रंग का होता है और छोटे छोटे काले बीजो से भरा हुआ होता है। यह फल गुलाबी रंग का होता है और इसकी बाहरी त्वचा पर हरे रंग की पंक्तियाँ होती हैं, जो बिल्कुल ड्रैगन के जैसे दिखाई पड़ती हैं। इसीलिए इसे ड्रैगन फ्रूट के नाम से जाना जाता है।

ड्रैगन फ्रूट दक्षिणी अमेरिका का फल है। ड्रैगन फल की खेती उष्ण जलवायु में की जाती है। फसल के पकाव के लिए उचित तापमान 20 –36 डिग्री सेल्सियस की आवश्यकता रहती है। ड्रैगन फ्रूट का पौधा एक सीजन में कम से कम 3 –4 बार फल देता है। एक ही पौधे पर 50 –120 के तकरीबन फल लगते है। ड्रैगन फ्रूट को आँखों की रौशनी और त्वचा के मॉइस्चर के लिए बेहद लाभकारी माना जाता है। इस फल की खेती इसलिए खास मानी जाती है, क्योंकि इसमें एक बार पैसा लगाने के बाद कई वर्षो तक मुनाफा उठाया जा सकता है।

यह फल पोषक तत्वों से भरपूर है

इस फल की कीमत अन्य फलो की तुलना में अधिक रहती है। यह ह्रदय को स्वस्थ बनाये रखने में मदद करता है। किसान पारम्पारिक खेती को छोड़ कर इस खेती की और आकर्षित हुए है। फसल की अच्छी उत्पादकता और पैदावार के लिए सफल और उन्नत किस्मो का उपयोग करें। साथ ही इसमें बहुत से विटामिन और मिनरल्स भी पाए जाते है, जो रोगों से लड़ने में सहायक रहते है।

ड्रैगन फ्रूट की किस्में

ड्रैगन फ्रूट की मुख्यतरू किस्में तीन प्रकार की होती है, इन तीनो किस्मो में से किसान किसी भी किस्म का उत्पादन कर सकता है। ड्रैगन फ्रूट की किस्में इस प्रकार है, 1 सफेद गूदा वाला गुलाबी रंग का फल, 2 लाल गूदे वाला लाल रंग का फल, 3 सफेद गूदे वाला पीले रंग का फूल। इन सभी किस्मो का उत्पादन कर किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते है।

कैसे करें इसकी खेती

इसकी खेती भी सामान्य रूप से ही की जाती है।यह किसी भी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, लेकिन ज्यादा बेहतर दोमट और बलुई मिट्टी को माना जाता है। इसके पौधो को खेत में 5 हाथ की दूरी पर लगाया जाता है। और अन्य फसलों के समान इसमें सिंचाई का काम किया जाता है। बुवाई के बाद पौधो में हल्की सिंचाई की जाती है, उसके बाद आवश्यकता पड़ने पर सिंचाई की जाती है। इसकी खेती ज्यादातर अप्रैल से मई के माह में की जाती है वैसे यह एक बारहमासी पौधा है।

खाद और कीटनाशक

किसानों द्वारा फसल को खरपतवार से बचाने के लिए समय पर नराई और गुड़ाई का काम किया जाना चाहिए। साथ ही फसल की अच्छी उत्पादकता और पैदावार के लिए खेत में खाद और अन्य रासायनिक कीटनाशकों का भी उपयोग किया जा सकता है।

जुताई करते वक्त किसान खेत में गोबर की खाद का भी उपयोग कर सकता है, इससे फल निरोगी रहते है। कलियाँ निकलने पर पौधे पर विशेष ध्यान दिया जाता है, क्योंकि उस समय रोग लगने की ज्यादा सम्भावनाये होती है।

ड्रैगन फ्रूट की खेती से किसान कितना कमा सकता है?

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए किसान को पहले उस खेती में निवेश करना पड़ता है यानी कम से कम 8 – 9 लाख रुपया का निवेश किसान द्वारा किया जाता है। इस फसल को ज्यादा प्रबंधन की आवश्यकता नहीं रहती है। बुवाई के दूसरे वर्ष के बाद से ही किसान इस फसल से अच्छा मुनाफा कमा सकते है। इन दिनों ड्रैगन फ्रूट की कीमत बाजारों में बढ़ती जा रही है।

ड्रैगन फ्रूट की कीमत बाजार में 200 –250 रुपया प्रति किलो है। इस फल के उत्पादन किसान भारी मुनाफा कमा सकते है। इस फल की खेती के लिए किसानों को हर साल जोखीम लेने की भी आवश्यकता नहीं है। एक बार लगने पर यह कई वर्षो तक फल देता है। किसान अन्य फसलों की तुलना में इस फसल से ज्यादा मुनाफा कमा रहा है ,इसकी खेती में बहुत ही कम एकदम न के समान कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। ड्रैगन फ्रूट की खेती से किसान साल में 5 लाख प्रति एकड़ कमा सकते है। एक बार पौधे लगाने के बाद यह 30 –35 वर्ष तक फल देता है। अब इस चीज से अनुमान लगाया जा सकता है किसान इन सालो में अच्छा मुनाफा कमा सकता है। ड्रैगन फ्रूट की फसल के लिए खेत को तैयार करने में लगभग 9 –10 लाख का खर्चा आता है। लेकिन इससे मिलने वाली आय 1 करोड़ से भी ज्यादा कमाई जा सकती है।

बाग–बगीचे में पौधों की देखभाल से जुड़ी विस्तृत जानकारी

पौधों को बगीचों में रोपने के उपरांत उनकी शीघ्र एवं शानदार वृद्धि के लिए काफी सही तरीके से देखभाल करनी विशेष जरूरी है। बाग के पौधों की सिंचाई की बात करें तो नवीन स्थापित पौधों में पानी की अधिकता व कमी दोनों काफी हानि पहुँचाती हैं। इस वजह से आवश्यकता के अनुरूप सिंचाई करनी चाहिये। पानी की जरूरत भूमि के प्रकार और ऋतु के ऊपर निर्भर होती है। प्रथम सिंचाई अगर वर्षा न हो तो, पौधे लगाने के शीघ्रोपरान्त की जानी चाहिए। किसान इसके बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें। गर्मियों में सिंचाई प्रातरू या सायं के समय करनी चाहिये।

सिंचाई की पद्धति का चयन:– सिंचाई करते समय सदैव ध्यान रखना चाहिये कि उतना ही पानी दिया जाये जो कि उस भूमि के अन्दर फैली हुई जड़ों को भली–भ. ांति गीला कर दें। इससे कम या अधिक दोनों ही मात्रा हानिकारक होती है। सिंचाई की पद्धति का चयन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये।

- फल वृक्षों का आकार।
- फल वृक्षों में आपसी अन्तर एवं रोपण करने की विधि।
- सिंचाई के स्त्रोत का आकार तथा प्रवाह।
- भूमि की किस्म एवं स्थल आकृति।
- पानी दिये जाने की मात्रा।

सिंचाई की पद्धतियां:– फल बगीचों में सिंचाई की अनेक विधियां हैं। परन्तु ऐसी सिंचाई विधि अपनाई जाए जिसमें जल का खर्चा कम से कम हो।

बहाव पद्धति

इस विधि का प्रयोग जब फल वृक्ष बड़े हो जाते हैं और उनकी जड़े पूरे क्षेत्र में फैल जाती है या पानी अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है। तब यह पद्धति काम में लाई जाती है। इस पद्धति में पूरे क्षेत्र को सुविधानुसार क्यारियों में विभाजित कर सिंचाई की जाती है।

थाला पद्धति

इस विधि के अन्तर्गत पौधों के चारों ओर थाला बना दिया जाता है। यह थाला गोलाकार या वर्गाकार हो सकता है। पौधों की दो कतारों के मध्य एक नाली बनाई जाती है। और थालों को इस वितरण नाली से जोड़ दिया जाता है। इस विधि से जल का वितरण समान रूप से होता है एवं पौधों की जड़ों में पानी पंहुचता है।

अंगूठी पद्धति

इस विधि का प्रयोग पौधों की छोटी अवस्था में किया जाता है। पौधे के चारों ओर अंगूठीनुमा आकार बना दिया जाता है। और एक कतार में सभी वृक्षों के घेरे एक नाली से जोड़ दिए जाते हैं। इस विधि में पानी सीमित क्षेत्र में ही लगता है।

ड्रिप सिंचाई पद्धति

यह एक बहुत ही आधुनिक सिंचाई पद्धति है। जहां पर पानी की बहुत कमी हो वहां पर यह विधि बहुत ही उपयुक्त रहती है। ड्रिप सिंचाई पद्धति का सिद्धांत जिस क्षेत्र में पौधों की जड़ें फैली हुई रहती हैं, उस क्षेत्र में अर्थात् जड़ क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से पानी देने का है। इसमें प्लास्टिक की पतली नलिकाओं में से कम दबाव द्वारा प्रवाहित किया जाता है। इन नालियों में प्रत्येक पौधे के पास एक बाल्व होता है। जिसमें से पानी निकलने की मात्रा प्रतिदिन पौधे के पास की आवश्यकतानुसार रखी जाती है। इस विधि में जल की हानि कम से कम होती है।

खरपतवार नियंत्रण

युवा फल–पौधों को खरपतवार विशेष रूप से हानि पंहुचाते हैं। खरपतवार नियंत्रण के लिए समय – समय पर निदाई – गुड़ाई करती रहनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए खाद एवं उर्वरकों को उचित मात्रा में दिया जाना आवश्यक है। खाद एवं उर्वरक की मात्रा विशेष रूप से फल–पौधों की किस्म तथा भूमि की उर्वरता पर निर्भर करती है। वर्ष में एक बार वर्षा ऋतु के उपरांत पकी गोबर खाद या कम्पोस्ट निश्चित मात्रा में देनी चाहिए। यदि पौधों की वृद्धि ठीक नहीं हो रही है तो, फरवरी–मार्च में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिये। खाद व उर्वरक देने के पश्चात् हल्की सिंचाई कर देनी चाहिये।

कटाई एवं छंटाई

प्रारम्भिक अवस्था में पौधों का ढांचा बनाने के लिये कटाई–छंटाई की जाती है। सदाबहार पौधों में बहुत कम कटाई की आवश्यकता होती है, जबकि पर्णपाती जैसे–सेब, नाशपाती, आडू व अंगूर आदि में पौधों को निश्चित आकार देने के लिये, अपेक्षाकृत अधिक कांट–छांट की आवश्यकता होती है। यह उचित समय पर एवं उचित मात्रा में किया जाना चाहिए।

पौधों को छाया देना

तेज धूप व 'लू से बचाने के लिए प्रत्येक पौधे को छाया देना आवश्यक है। छाया बांस की चटाई का घेरा, घास की झोपड़ी, ताड़ तथा खजूर की पत्तियां आदि से बनाई जाती हैं। पौधों में छाया करते समय यह ध्यान रखें कि प्रातरूकाल की धूप पौधों पर लग सकें। शीत ऋतु में पौधों को पाले से बचाने के लिए समुचित उपाय करना चाहिए। पाला पड़ते समय सिंचाई करना व धुआं करना भी लाभकारी होता है।

पौधों को सहारा देना

नए लगाए गए पौधों को बांस या लकड़ी लगाकर सहारा देना चाहिए, जिससे वह तेज हवा से टूट न जाए। कलमी पौधों में इस तरह की सुरक्षा की अधिक आवश्यकता होती है।

पुनरूरोपण

उद्यानों में लगाए गए पौधों में से यदि कुछ पौधे मर जाएं तो उनके स्थान पर मार्च या जुलाई में नए पौधे लगा देना चाहिए। आरम्भ में जब उद्यान में पौधे लगाएं तब कुछ पौधों को गमलों में लगा देना चाहिए। ये पौधे मरे हुए पौधों के स्थान पर लगाने के काम आते हैं।

कीट व्याधियों का नियंत्रण

पौधों में यदि कोई बीमारी या कीटों का आक्रमण दिखाई दे तो आवश्यक दवाईयों का छिड़काव करना चाहिए। वर्षा ऋतु के बाद वृक्षों के तनों पर बोर्डों पेस्ट लगा देना चाहिए। पौधों को बगीचों में लगाने के पश्चात उनकी शीघ्र एवं उचित वृद्धि के लिए अच्छी प्रकार से देखभाल करना आवश्यक है। जिसके लिये निम्नलिखित काम सुचारू रूप से करना चाहिये।

अनार के फल में लगने वाले कीट व उनकी रोकथाम

अनार के अंदर सूत्रकृमि या निमैटोड का संक्रमण होता है, जो कि काफी छोटा सूक्ष्म और धागानुमा गोल जीव होता है। यह अनार की जड़ों में गांठें निर्मित कर देता है। इसके प्रभाव से पौधौं की पत्तियों का रंग पीला पड़ने लग जाता है।अनार की खेती कृषकों के लिए एक अत्यंत लाभ का सौदा सिद्ध होती है। अनार का पौधा काफी सहिष्णु होता है और हर तरह के मौसम को सहन करने में सक्षम होता है। अनार के पोधौं और फल में कीट और रोग के संक्रमण से बेहद हानि होती है। इसलिए अनार की खेती में रोग और कीट के नियंत्रण एवं उसकी पहचान से जुड़ी जरूरी जानकारी किसानों को पास होनी ही चाहिए। अनार के पौधों एवं फलों में किस तरह के रोग और कीट का प्रकोप होता है। उसकी पहचान करने के लिए लक्षण क्या–क्या हैं। साथ ही, किस तरह से उससे बचाव के लिए क्या उपाय करना चाहिए, यह जानना भी काफी महत्वपूर्ण है।

अनार की फसल में लगने वाले निम्नलिखित कीट

अनार में सूत्रकृमि अथवा निमैटोड का काफी प्रकोप होता है, जो कि काफी छोटा सूक्ष्म और धागानुमा गोल जीव होता है। यह अनार की जड़ों में गांठें तैयार कर देता है। इसके प्रकोप से पौधौं की पत्तियां भी पीली पड़ने लगतीं हैं और मुड़ने लगती हैं। इसकी वजह से पौधों का विकास रुक जाता है। इसके साथ ही उत्पादन भी प्रभावित हो जाता है। इस वजह से जिस पौधे में इस कीट के प्रकोप के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, उस पौधे की जड़ों के पास खोद कर उसमें 50 ग्राम फोरेट 10 जी डालकर अच्छी तरह से मिट्टी में मिलाकर सिंचाई कर दें। इससे पौधों को क्षति से बचाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मिलीबग, मोयला थ्रिप्स इत्यादि कीट का प्रकोप होता है। इसकी वजह से कलियां, फूल और छोटे फल प्रांरभिक अवस्था में ही खराब होकर गिरने लगते हैं। इसकी रोक. थाम के लिए डायमेथोएट कीटनाशी के 0.5 प्रतिशत घोल का प्रति लीटर पानी में मिलाकर फसल पर स्प्रे करें।

माइट से संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय करें

माइट का संक्रमण भी पौधों को हो सकता है। यह काफी ज्यादा छोटे जीव होते हैं, जो प्रायरू सफेद एवं लाल रंग में पाए जाते हैं। ये छोटे जीव अनार की पत्तियों के ऊपरी और निचले सतह पर शिराओं के पास चिपक कर रस चूसते हैं। माइट ग्रसित पत्तियां ऊपर की ओर मुड़ जाती हैं। इसके अतिरिक्त जब इस कीट का प्रकोप ज्यादा होता है, तो पौधे से समस्त पत्तियां झड़ जाती हैं और यह सूख जाता है। इसलिए जब अनार के पौधे में माइट का संक्रमण होने के लक्षण नजर आऐं तो पौधों पर एक्साइड दवा के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। यह छिड़काव 15 दिनों के समयांतराल पर करें।

तितली कीट अनार के लिए बेहद हानिकारक है

अनार के फलों के लिए तितली सर्वाधिक हानिकारक कीट मानी जाती है। क्योंकि जब एक व्यस्क तितली अंडे देती है, तो उससे सुंडी निकल कर फलों में प्रवेश कर जाती है। फल में प्रवेश करने के पश्चात वह फल के गूदे को खाती है। इसके नियंत्रण के लिए बारिश के मौसम में फलों के विकास के दौरान 0.2 प्रतिशत डेल्टामेथ्रीन या 0.03 प्रतिशत फॉस्कोमिडान कीटनाशक दवा के घोल का छिड़काव करने से काफी लाभ होता है। इसका छिड़काव 15–20 दिनों के अंतराल पर करना चाहिए।

फूल

6 महीने से भी ज्यादा खिलने वाला फूल है गैलार्डिया, जाने सम्पूर्ण जानकारी

गैलार्डिया को ब्लैंकेट फ्लावर के नाम से भी जाना जाता है। यह बारहमासी पौधा है , इसकी खेती किसी भी मौसम में की जा सकती है। गैलार्डिया एस्टरेसिया परिवार का एक पौधा है। इस फूल का नाम फ्रांस के 18 वी सदी के मजिस्ट्रैट उंपजतम ळंपससंतक कम बेंतमदजवददमंन के नाम पर रखा गया है, जो की मजिस्ट्रैट होने के साथ भी बहुत ही काबिल वानस्पातिक शास्त्री थे। इस पौधे की ऊंचाई 45 –60 से मी होती है। इन पौधो का ज्यादातर उपयोग घर के लॉन और बालकनी को सजाने के लिए किया जाता है।

गैलार्डिया फूल की उन्नत किस्में

गैलार्डिया की बहुत सी किस्में ऐसी है, जिन पर सूंदर मेहरून, लाल, पीले और नारंगी रंग के मिश्रण वाले फूल खिलते है। गैलार्डियन फूल की कुछ उन्नत किस्में इस प्रकार है रू गैलार्डिया एस्टिवेलिस (वॉल्टेर) एच रॉक, गैलार्डिया एमब्लिओडोन ज गेय मैरून ब्लैंकेट फ्लॉवर, गैलार्डिया अरिस्टेटा पर्श, गैलार्डिया अरिजोनिका ऐ ग्रे। इन किस्मो का उत्पादन कर किसान भारी मुनाफा कमा सकता है।

गैलार्डिया फूल के बीज कब बोये

गैलार्डिया की खेती का सही समय फरवरी और मार्च का होता है। इस माह में इस फूल के बीजो की बुवाई की जाती है। बीजो के अंकुरण के लिए सूर्य की रोशनी का उचित तापमान होना आवश्यक है। इन फूलो को ज्यादा देखभाल की आवश्यकता नहीं रहती है। 30 – 40 के दिन के बाद यह बीज सीडलिंग के लिए तैयार हो जाते है। इन्हे गमलों या किसी अन्य पॉट वगेरा में ट्रांसप्लांट कर सकते है। बीज लगाने के लगभग तीन महीने बाद इनमे फूल आना शुरू हो जाते है , साथ ही ये पौधे 6 महीने से अधिक फूल देते रहते है। यानी ठंड के आने तक इन पौधो में फूल लगते रहते है।

गैलार्डिया फूल की उपज के लिए उपयुक्त मिट्टी कौन सी है ?

गैलार्डिया फूल को वैसे किसी भी मिट्टी में उगाया जा सकता है, लेकिन क्षारीय, दोमट और अम्लीय मिट्टी को इसकी खेती के लिए उपयुक्त माना जाता है। बीज की बुवाई के लिए पहले खेत को अच्छे से तैयार कर ले, खेत की अच्छे से गुड़ाई करें। किसानों द्वारा खेत को तैयार करते वक्त गोबर या कम्पोस्ट खाद का भी प्रयोग किया जा सकता है। इसके लिए अच्छे जलनिकास वाली भूमि की आवश्यकता रहती है।

गैलार्डिया फूल के लिए उचित तापमान क्या है ?

गैलार्डिया के फूल के लिए उचित तापमान की आवश्यकता रहती है। गैलार्डिया बीज के अच्छे अंकुरण के लिए 21 डिग्री तापमान की जरुरत रहती है। फूल की अच्छी ग्रोथ के लिए 20 – 30 डिग्री के बीच के तापमान की आवश्यकता रहती है। यह पौधे ज्यादा गर्मी के तापमान को सहन कर लेते है, लेकिन सर्दियों में 10 डिग्री टेम्परेचर से कम का तापमान इस पौधे की बढ़ोत्तरी पर बाधा डाल सकता है।

गैलार्डिया फूल की देखभाल कैसे करें

गैलार्डिया के फूल को ज्यादा देखभाल की जरुरत नहीं रहती है। बुवाई के बाद इसमें सिंचाई भी बहुत ही कम मात्रा में की जाती है। गैलार्डिया का पौधा सूखा सहनशील है, इसीलिए इसमें कम पानी की जरुरत पड़ती है। वसंत और गर्मियों में पौधे पर फूल आने लग जाते है, उस वक्त इस पौधे को पानी की जरुरत होती है। सर्दियों में पौधे की सिंचा. ई की मात्रा कम कर दी जाती है।

पौधे की अधिक उपज के लिए अन्य रासायनिक खाद की आवश्यकता नहीं रहती। खेत को तैयार करते समय कम्पोस्ट खाद का उपयोग करें, वो फसल और भूमि दोनों के लिए बेहतर होता है। साथ ही इस पौधे में कीट और रोग लगने की बहुत ही कम संभावनाएं रहती है। लेकिन गैला. र्डिया फूल में रुट रॉट की समस्या ज्यादा देखने को मिलती है। इस रोग से पौधे की जड़े सड़ने लगती है, यह ज्यादा पानी के प्रभाव से भी हो सकता है, इसीलिए इसकी खेती के लिए जल निकासी का प्रबंध होना आवश्यक है। साथ ही भूमि सूखी होनी चाहिए उसमे ज्यादा नमी न हो, ज्यादा नमी भी पौधे को नुक्सान पहुँचाती है।

गैलार्डिया फूल की प्रूनिंग

गैलार्डिया फूल में 6 महीने तक फूल खिलते है। फूल खिलने के बाद इसके पेड़ सूख और मुरझा जाते है। इन फूलो की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए इसके तनो को काट दिया जाता है। साथ ही बढ़ते मौसम में फूलो को डेडहेड करते रहना चाहिए ताकि यह फूलो को निरंतर खिलने के लिए बढ़ावा दे सके। गैलार्डिया फ्लॉवर की प्रूनिंग का काम पतझड़ के मौसम में किया जाता है, ऐसा करने से पौधे सूंदर और स्वस्थ बने रहते है। पिकता और लोरेंजिया ये भी गैलार्डिया फूल की किस्में है। गैलार्डिया पौधे में बड़े आयकर के फूल लगते है। बुवाई के लिए इसमें 300 ग्राम बीज की प्रति हेक्टेयर आवश्यकता रहती है। गैलार्डिया फूल की खेती के लिए, खेत की अच्छी से जुताई कर ले। मिट्टी के भुरभुरा होने पर बीज की बुवाई करें। बुवाई करते समय फॉस्फोरस और पोटास को भी खेत में दे देना चाहिए, इससे भूमि की उर्वरकता बनी रहती है। गैलार्डिया की खहेति करने के लिए, बीजो को बोने के लिए अलग से नर्सरी तैयार की जाती है। यह नर्सरी ऊंची और समतल जगहों पर बनाई जाती है, एक एकड़ खेत में लगभग चार क्यारियां बनाई जाती है 3 फीट चौड़ी और 10 फीट लम्बी होती है। बुवाई करने से पहले बीजउपचार कर लेना चाहिए।

हॉलीहॉक पौधे की जाने सम्पूर्ण जानकारी

हॉलीहॉक पौधा एक प्रकार का फूल है जिसका वैज्ञानिक नाम 'सबमं तवेमं है। यह फूल लगभग 5 – 6 फुट ऊँचा होता है। यह फूल रंग बिरंगी फूलो और अपनी मनमोहक शक्ति के लिए प्रसिद्ध है। इस फूल का उपयोग ज्यादातर वानस्पतिक बाग, उद्यानों और पेयजल की सुंदरता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। हॉलीहॉक यूरोप और एशिया का सूंदर पुष्पी पौधा है, इसे मल्लिका और गुलखै. रा के नाम से भी जाना जाता है। इस फूल के पत्ते सफेद और हरे रंग के होते है, जो की हृदय के आकार के होते है। इन फूलो में बहुत से औषिधीय गुण भी पाए जाते है। हॉलीहॉक एक बहुत ही महत्पूर्ण पौधा है, जिसका उपयोग बगीचे की सुंदरता बढ़ाने के लिए भी आमतौर पर किया जाता है।

हॉलीहॉक की खेती कैसे करें ?

हॉलीहॉक की खेती ज्यादातर बगीचों और बालकनियों की सुंदरता को बढ़ाने के लिए करते है। इसमें सबसे पहले बीज की जाँच कर ले ,सबसे अच्छे बीज का चयन करें। हॉलीहॉक की अच्छी खेती के लिए रेतीली मिटटी की आवश्यकता रहती है। उसके बाद बीजो को अच्छे से समान दूरी पर बो दे, उसके बाद बीज को मिटटी से अच्छे तरीके से ढक दे। यह फूल ज्यादातर शुष्क और उष्णकटिबंधीय जगहों पर उगाया जाता है। हॉलीहॉक के पौधे की अच्छी वृद्धि के लिए सूर्य की उचित रोशनी की भी आवश्यकता पड़ती है।

हॉलीहॉक फूल के प्रकार क्या है ?

हॉलीहॉक फूल कई प्रकार का होता है और इन सब की अपनी अलग–अलग खासियत भी है। यह फूल रंगो के आधार पर भी अलग पाए जाते है।

हॉलीहॉक फूल के मुख्य प्रकार ये है रू मल्टीकलर हॉली. हॉक, मेसेंजर हॉलीहॉक, एलिगेंस हॉलीहॉक और अलस्विच हॉलीहॉक यह फूल दिखने में बहुत ही सूंदर और आकर्षक होते है।

हॉलीहॉक का पौधा कहाँ पाया जाता है

हॉलीहॉक का पौधा दुनिया भर में पाया जाता है, क्योंकि यह पौधा अपनी खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध है। यह फूल ज्यादा. तर सूखे इलाकों में पाया जाता है। यह एक वानस्पतिक प्रजाति है, जिसे गुड़हल के नाम से भी जाना जाता है। इस फूल का उत्पादन भारत के कई राज्यों में किया जाता है जैसे रू झारखण्ड, ओड़िसा और छत्तीसगढ़। लेकिन यह फूल ज्यादातर पूर्वी भारत में पाया जाता है। हॉलीहॉक का पौधा बड़ी पत्तियों और फूलों के साथ काफी ऊँचा भी होता है।

हॉलीहॉक पौधे की देखभाल

बुवाई के बाद पौधे की अच्छे से देखभाल की जाती है। इसमें समय पर पानी और खाद भी दिया जाता है, ताकि पौधे की अच्छे से वृद्धि की जा सके। बुवाई से पहले और बुवाई के बाद भी मिट्टी में उचित खाद का प्रयोग करना चाहिए। पौधे को नियमित पानी दे, ताकि भूमि की उर्वरकता बनी रहे। पौधे की उचित देखभाल से पौधा लम्बे समय तक सूंदर फूल प्रदान करेगा। समय पर पौधे में नराई का काम भी किया जाना चाहिए, ताकि पौधा का अच्छे से विकास हो सके।

हॉलीहॉक पौधे के मुख्य चिकित्सक गुण

हॉलीहॉक के पौधे का उपयोग बहुत से रोगों में भी किया जाता है। हॉलीहॉक के पौधे के बहुत से औषिधीय गुण भी है। इसका इस्तेमाल हम चक्कर आने पर , हृदय रोग होने पर साथ ही कफ जैसे रोगों से छुटकारा पाने के लिए भी किया जाता है।

1– हॉलीहॉक के पौधे का इस्तेमाल रूखी त्वचा के लिए भी किया जाता है। साथ ही इसे त्वचा के उपचार के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। यह एक अमूल्य पौधा है जिसका उपयोग बहुत सी चीजों में किया जाता है।

2 –हॉलीहॉक के पौधे में ग्लूकोसाइड नामक तत्व भी पाया जाता है, जो शरीर के अंदर रक्तचाप को संतुलित बनाये रखने में मदद करता है। साथ ही यह शरीर के अंदर अनीमिया की कमी को भी दूर करने में सहायक सिद्ध होता है।

मेरीखेती अब 6 भाषाओ में उपलब्ध है

हिंदी | English | తెలుగు (Telugu) | ಕನ್ನಡ (Kannada) | ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi) | தமிழ் (Tamil)

www.merikheti.com

ट्रैक्टर की जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट

www.merikheti.com पर विजिट करे

गेहूं काटने की मशीन से जुड़ी विस्तृत जानकारी

हमारे भारत में खेती–किसानी के लिए आधुनिक यंत्रो का काफी उपयोग किया जाने लगा है। इसके माध्यम से हम अधिक से अधिक फसल उगाते हैं और फिर उसकी कटाई करते हैं। फसल की कटाई करना भी एक बड़ा कार्य होता है। इसके लिए ज्यादा समय और परिश्रम लगता है। किन्तु, फसल की कटाई के लिए रीपर बाइंडर मशीन का उपयोग कर इस कार्य को सुगमता से किया जा सकता है। यह एक ऐसी मशीन है, जिसे फसल की कटाई के लिए बनाया गया है। रीपर बाइंडर मशीन फसल को जड़ से 5 से 7 CM की ऊंचाई पर काटता है। यह एक घंटे में 25 मजदूरों के बराबर फसल की कटाई कर सकता है, जिस वजह से यह बहुत ही उपयोगी मशीन है। गेहूं फसल की कटाई में भी रीपर बाइंडर मशीन का इस्तेमाल करते हैं। जिन स्थानों पर कंपाउंड हार्वेस्टर और ट्रैक्टर नहीं पहुंच पाता है, वहां इसे मुख्य तौर पर उपयोग में लाते हैं। इस लेख में आपके साथ गेहूं काटने की मशीन 2024 तथा रीपर (Reaper) मशीन की कीमत की जानकारी प्रदान करें।

गेहूं काटने की मशीन 2024 / Reaper Binder Machine

यह एक कृषि यंत्र है, जिसे अनाज वाली फसल को काटने के लिए उपयोग में लिया जाता है। इस यंत्र के द्वारा घंटे में होने वाले कार्य को कुछ ही समय में पूर्ण कर लिया जाता है। यह खेत में तैयार फसल को उसकी जड़ के नजदीक 1 से 2 इंच की ऊंचाई पर काटता है। जिन राज्यों अथवा क्षेत्रों में हरे चारे के लिए फसल काटनी होती है। वहां कम्बाइंड हार्वेस्टर की अपेक्षा में रीपर बाइंडर मशीन का ज्यादा प्रयोग करते हैं। इस मशीन की मदद से मक्का, धान, मूंग, चना, गेहूं, ज्वार, बाजरा जैसी विभिन्न फसलों की कटाई की जा सकती है।

रीपर मशीन कितने प्रकार की होती है / Types of Reaper Binder Machine

सामान्य तौर पर दो तरह की रीपर मशीन ज्यादा प्रचलित है। इसमें पहली मशीन को हाथ के सहारे से चलाते हैं तथा दूसरी मशीन को ट्रैक्टर से जोड़कर चलाया जाता है। हाथ से चलने वाली मशीन में पेट्रोल और डीजल डालकर चलाया जाता है।

- ट्रैक्टर रीपर मशीन।
- स्ट्रॉ रीपर मशीन।
- हैंड रीपर बाइंडर मशीन।
- स्वचालित रीपर मशीन।
- वाकिंग बिहाइंड रीपर मशीन।

रीपर मशीन की क्या–क्या विशेषताऐं हैं / Reaper Binder Machine Features

रीपर मशीन किसी भी तरह की फसल कटाई के लिए यह मशीन काफी उपयोगी है। यह मशीन फसल की कटाई कर उसकी बाइडिंग भी कर देता है। इससे काटी गयी फसल से थ्रेसिंग करने में आसानी होती है। यह छोटी और बड़ी दोनों ही फसलों को आसानी से काट देता है। यह मशीन एक एकड़ की फसल को एक घंटे में काट सकने में सक्षम है। 25 से 40 मजदूरों का काम इस मशीन से अकेले किया जा सकता है। यह स्वचालित मशीन है, जिस वजह से इसमें परिवहन की भी समस्या नहीं होती है। इस मशीन से आप सरसों, मक्का, चना, गेहूं, जौ, धान जैसी बहुत सारी फसलों को आसानी से काट सकते है।

महिंद्रा एंड महिंद्रा ट्रैक्टर की बिक्री में 10% गिरावट की आशंका

भारतीय ट्रैक्टर बाजार में महिंद्रा एंड महिंद्रा कंपनी एक अग्रणीय स्थान है। क्योंकि, वर्षों से महिंद्रा के ट्रैक्टर्स किसानों के बीच अत्यंत विश्वसनीय और लोकप्रिय हैं। भारत की सबसे बड़ी ट्रैक्टर निर्माता कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा को यह आशा है, कि इस वित्तीय वर्ष में महिंद्रा के ट्रैक्टरों की मांग में कमी होगी। महिंद्रा एंड महिंद्रा के ऑटो और कृषि उपकरण क्षेत्रों के कार्यकारी निदेशक, राजेश जेजुरिकर ने मिंट को दिए साक्षात्कार में कहा कि, चालू तिमाही में बिक्री में 10% की गिरावट की संभावना है, जिससे वित्त वर्ष 2024 के लिए खंड में कुल गिरावट 5% हो जाएगी, जो वर्तमान में 4% से अधिक है। हालाँकि, समूह के सीईओ अनीश शाह ने कहा कि ट्रैक्टर बाजार पिछले तीन वर्षों में अपने सबसे अच्छे वॉल्यूम के साथ आ रहा है, और कई सकारात्मक और नकारात्मक कारक ग्रामीण मांग को प्रभावित कर रहे हैं, "ग्रामीण अर्थव्यवस्था काफी अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

जेजुरिकर ने कहा, षपिछले कुछ महीनों में हमने जो देखा है, उसके आधार पर हमें उम्मीद है कि ट्रैक्टर उद्योग जितना हमने सोचा था उससे कहीं अधिक नकारात्मक होगा। हमें उम्मीद है, कि पूरे वर्ष के लिए ट्रैक्टर की मात्रा – 5% रहेगी। चौथी तिमाही में ऐसा होगा। "उससे भी अधिक नकारात्मक हो सकता है। अभी उद्योग – 4% पर है, जो – 5% तक जाएगा, इसलिए आप फ4 में लगभग 10% नकारात्मक वृद्धि देखेंगे।"

शाह ने कहा, ष्हम कृषि बिक्री में गिरावट को ग्रामीण संकट के रूप में नहीं देख रहे हैं। यह अभी चक्र का हिस्सा है। यदि आप इस क्षेत्र को दीर्घकालिक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो हम काफी अच्छी स्थिति में हैं और यह बराबर है। "हमारे दृष्टिकोण से पाठ्यक्रम के लिए।"

कंपनी ने दिसंबर तिमाही में 101,000 ट्रैक्टर बेचे, जो पिछले साल की समान तिमाही की तुलना में 4.1% कम है। एस्कॉर्ट्स के लिए, तिमाही में ट्रैक्टर की बिक्री 25,999 इकाई रही, जो एक साल पहले की तुलना में 7.2% कम है। इसी तिमाही में उद्योग की मात्रा 4.9% घटकर 2.35 लाख ट्रैक्टर रह गई।

पिछले हफ्ते, ट्रैक्टर निर्माता एस्कॉर्ट्स कुबोटा लिमिटेड ने कहा कि उसे वित्त वर्ष 2013 से ट्रैक्टर बाजार में 6–7% की गिरावट की उम्मीद है, जब उद्योग ने अपनी अब तक की सबसे अच्छी बिक्री देखी। ष्हम पिछले वर्ष की तुलना में चौथी तिमाही में लगभग 12% से 13% की गिरावट देख रहे हैं। तो कुल मिलाकर वर्ष लगभग 890,000 – 895,000 इकाइयों की बिक्री पर समाप्त होगा। यह उच्च आधार पर है, लेकिन यह अभी भी रहेगा उद्योग के लिए बिक्री का दूसरा सबसे बड़ा वर्षष्, एस्कॉर्ट्स कुबोटा में फार्मट्रैक और पॉवरट्रैक बिक्री के प्रमुख, नीरज मेहरा ने कहा। महिंद्रा एंड महिंद्रा ने Q3 में स्टैंडअलोन शुद्ध लाभ में साल– दर–साल 61% की वृद्धि के साथ ₹2,454 करोड़ और राजस्व में साल–द. र–साल 16% की बढ़ोतरी के साथ ₹25,642 करोड़ की वृद्धि दर्ज की। क्योंकि इसने घरेलू एसयूवी बाजार में एक बड़ा हिस्सा हासिल कर लिया। जेजुरिकर का कहना है, कि कंपनी Q4FY24 के अंत तक अपने SUVs के लिए उत्पादन क्षमता को 49,000 यूनिट तक बढ़ाने के लिए तैयार है। लेकिन उन्होंने कहा कि तिमाही के लिए बिक्री स्थिर रहेगी क्योंकि ऑटोमेकर ने अपने XUV300 SUV के उत्पादन को कम कर दिया है और मांग के साथ उत्पादन को संरेखित किया है।

महिंद्रा के अनुसार, ग्रामीण और कृषि विकास पर सरकारी खर्च में वृद्धि ट्रैक्टरों के लिए खरीद – भावना को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण होगी। जेजुरिकर ने कहा, "(ग्रामीण मांग को आकार देना) सकारात्मक और नकारात्मक पहलू हैं। इस तथ्य से नकारात्मक बातें सामने आ रही हैं कि इस वर्ष मानसून में कमी रही। इसके अलावा, कई वर्षों के बाद जल भंडार का स्तर नकारात्मक है। इसलिए हम एलपीए (दीर्घकालिक औसत) से 5% नीचे हैं।

"कुछ कारक हैं जो ग्रामीण भावना को प्रेरित करेंगे – जैसे अच्छा मानसून और जल – भंडार स्तर के आसपास भावना। दूसरा कारक सरकारी खर्च में वृद्धि है। चुनाव के बाद किसी चरण में, हम इसे देखेंगे। अंतरिम बजट इस पर केंद्रित था अभी समय है, लेकिन चुनाव के बाद हमें भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के लिए एक भव्य योजना देखने को मिलेगी। हमें ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी खर्च को बढ़ते हुए देखना शुरू करना होगा क्योंकि यह ग्रामीण समृद्धि का एक प्रमुख चालक है और उनकी घरेलू आय सिर्फ के अलावा कई अन्य स्रोतों से आती है खेती।

"अच्छी खबर यह है कि हम व्यापार के संदर्भ में सकारात्मक स्थिति देख रहे हैंरू अभी आउटपुट मुद्रास्फीति 6% है और इनपुट मुद्रास्फीति 3% है, इसलिए व्यापार के संदर्भ में सकारात्मक 3% एक अच्छी स्थिति है।"

फसलों की कटाई और सफाई के लिए उपयोगी 4 कृषि यंत्रों की विशेषताऐं और लाभ

वर्तमान की बात करें तो किसानों के खेतों में रबी की फसलें लहला रही हैं और जल्द ही इनकी कटाई की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाएगी।

ऐसे में किसानों को राहत दिलाने के लिए हम 4 कृषि यंत्रों (4 Farm Machinery) की जानकारी देने जा रहे हैं। इनका उपयोग करके किसान फसल अवशेषों से भूसा बनाने का कार्य सहजता से कर सकते हैं। इन यंत्रों से किसानों की लागत भी कम आएगी। साथ ही, कटाई का कार्य भी शीघ्रता से हो सकेगा।

फसलों की कटाई के लिए उपयोगी 4 कृषि यंत्र

- स्ट्रॉ रीपर मशीन
- रीपर बाइंडर मशीन
- कंबाइन हार्वेस्टर मशीन
- मल्टीक्रॉप थ्रेशर मशीन

स्ट्रॉ रीपर मशीन

स्ट्रॉ रीपर एक ऐसी कटाई मशीन है, जो एक ही बार में पुआल को काटती है, थ्रेस करती है एवं साफ करती है। स्ट्रॉ रीपर को ट्रैक्टरों के साथ जोडकर इस्तेमाल किया जाता है। इसके इस्तेमाल से ईंधन की खपत काफी कम होती है। इस यंत्र पर कई राज्य सरकारों की तरफ से सब्सिडी का फायदा भी किसानों को प्रदान किया जाता है।

विशेषताएं और लाभ

स्ट्रॉ रीपर मशीन की कीमत बहुत ज्यादा नहीं होती है, इसलिए इस कृषि यंत्र को छोटे और बड़े, दोनों किसान सुगमता से इस्तेमाल कर सकते हैं। इस मशीन के उपयोग से फसल काटने पर कई तरह के फायदे किसानों को मिलते हैं, जैसे गेहूं के दानों के साथ–साथ भूसा भी मिल जाता है। यह भूसा पशुओं के चारे के काम में आता है। इसके अतिरिक्त जो दाना मशीन से खेत में रह जाता है, उसको ये मशीन सहजता से उठा लेती है। जिसको किसान अपने पशुओं के लिए दाने के रूप में प्रयोग कर लेते हैं।

रीपर बाइंडर मशीन

रीपर बाइंडर मशीन का इस्तेमाल फसल की कटाई के लिए किया जाता है। यह मशीन फसल की कटाई करने के साथ दृ साथ रस्सियों से उनका बंडल भी बनाती है। रीपर बाइंडर की मदद से 5 – 7 से. मी. ऊँची फसल की कटाई आसानी से की जा सकती है। इस यंत्र की सबसे बड़ी खासियत यह है, कि इस मशीन से गेहूं, जौ, धान, जेई और अन्य फसलों की आसानी से कटाई कर बंडल बना सकते है।

विशेषताएं और लाभ

रीपर बाइंडर के इस्तेमाल से फसल कटाई का काम आसानी से पूरा किया जा सकता है। इसके इस्तेमाल से धन, समय और मजदूरी सभी की बचत होती है। रीपर बाइंडर मशीन एक घंटे में एक एकड़ जमीन पर खड़ी फसल को काट सकती है। इस मशीन के इस्तेमाल से फसल कटाई के अतिरिक्त उनका बंडल भी निर्मित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सबसे बड़ी विशेषता है, कि इसका उपयोग बारिश के मौसम में भी किया जा सकता है। फसल के अतिरिक्त खेतों में उगने वाली झाडियों की भी सहजता से कटाई की जा सकती है। रीपर बाइंडर को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेकर जाना आसान होता है।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन से एक साथ कटाई तथा सफाई का कार्य किया जा सकता है। इस मशीन की सहायता से सरसों, धान, सोयाबीन, कुसुम आदि की कटाई और सफाई का कार्य कर सकते हैं। इसमें समय और लागत दोनों ही बहुत कम लगती है।

विशेषताएं और लाभ

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन का प्रयोग कर लागत और समय की बचत की जा सकती है। इससे फसल की कटाई से लेकर फसल के दानों की सफाई तक का काम किया जाता है। इसके उपयोग से मृदा की उर्वरक क्षमता बढ़ती है। इस मशीन के इस्तेमाल से किसान प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली हानि से बच सकते हैं और वक्त रहते फसलों की कटाई कर सकते हैं। कंबाइन हार्वेस्टर मशीन से किसान खेत में आड़ी–. तिरछी पड़ी फसल को भी काट सकते हैं।

मल्टीक्रॉप थ्रेशर मशीन

यह मशीन किसानों के लिए एक बहुत बड़ी उपयोगी मशीन मानी जाती है। मल्टीक्रॉप थ्रेशर मशीन से बाजरा, मक्का, जीरा, डालर चना, सादा चना, देशी चना, ग्वार, ज्वार मूंग, मोठ, ईसबगोल, मसूर, राई, अरहर, मूंगफली, गेहूं, सरसों, सोयाबीन और तुअर जैसी फसलों के दाने साफ–सुथरे तरीके से निकाले जाते हैं। इस मशीन के इस्तेमाल से फसल के दाने और भूसे को भिन्न–भिन्न करने के लिए उपयोग किया जाता है।

विशेषताएं और लाभ

मल्टीक्रॉप थ्रेशर मशीन की मुख्य विशेषता है, कि इसके उपयोग से फसल की कटाई कर अनाज और भूसे को अलग किया जाता है। यह मशीन फसलों के दाने को साफ–सुथरे ढ़ंग से अलग करता है। मल्टीक्रॉप थ्रेशर मशीन को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से ले जाया जा सकता है। खेतों में जहाँ मशीन नहीं पहुँच सकती है, वहाँ हाथ का रीपर मशीन का इस्तेमाल किया जाता है।

जानें भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाले मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई ट्रैक्टर के बारे में

मैसी फर्ग्यूसन कंपनी के ट्रैक्टर भारतीय किसानों की प्रथम पंसद बनते जा रहे हैं। कंपनी के ट्रैक्टर विभिन्न लेटेस्ट फीचर्स के साथ आते हैं, जो खेती को बेहद सुगम बनाते हैं। मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर फ्यूल एफिशिएंट टेक्नोलॉजी द्वारा तैयार किए गए इंजन के साथ आते हैं, जो कि कम से कम ईंधन की खपत करता है। अगर आप भी खेती या व्यावासा. यिक कार्यों के लिए शक्तिशाली ट्रैक्टर खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो आपके लिए मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई ट्रैक्टर शानदार विकल्प हो सकता है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई की क्या–क्या विशेषताऐं हैं ?

Massey Ferguson 241 DI ट्रैक्टर में आपको 2500 सीसी क्षमता वाला 3 सिलेंडर में SIMPSONS S325-1 TIII । इंजन देखने को मिल जाता है, जो 42HP पावर उत्पन्न करता है। इस ट्रैक्टर में बेहद ही उच्च गुणवत्ता वाला एयर फिल्टर दिया गया है। कंपनी का यह ट्रैक्टर 30-4 kmph की अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड के साथ आता है। इस मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर में आपको 47 लीटर क्षमता वाला ईंधन टैंक प्रदान किया जाता है।

जिसकी सिंगल रिफ्यूलिंग पर आप लंबे समय तक खेती के सभी कामों को पूरा कर सकते हैं। Massey Ferguson 241 DI Tractor की भार उठाने की क्षमता 1700 किलोग्राम निध. ारित की गई है, जिसकी सहायता से आप एक बार में अधिक फसल की ढुलाई कर सकते हैं। कंपनी के इस ट्रैक्टर का कुल वजन 1875 किलोग्राम है। मैसी फर्ग्यूसन 241 DI ट्रैक्टर को 3340 mm लंबाई, 1690 mm चौड़ाई और 2200 mm ऊंचाई के साथ 1785 mm व्हीलबेस में तैयार किया गया है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई की क्या–क्या विशेषताऐं हैं ?

डेंमल थ्मतहनेवद 241 DI ट्रैक्टर में आपको 2500 सीसी क्षमता वाला 3 सिलेंडर में SIMPSONS S325-1 TIII । इंजन देखने को मिल जाता है, जो 42 HP पावर उत्पन्न करता है। इस ट्रैक्टर में बेहद ही उच्च गुणवत्ता वाला एयर फिल्टर दिया गया है। कंपनी का यह ट्रैक्टर 30-4 kmph की अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड के साथ आता है। इस मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर में आपको 47 लीटर क्षमता वाला ईंधन टैंक प्रदान किया जाता है, जिसकी सिंगल रिफ्यूलिंग पर आप लंबे समय तक खेती के सभी कामों को पूरा कर सकते हैं। डेंमल थ्मतहनेवद 241 DI ज्तंबजवत की भार उठाने की क्षमता 1700 किलोग्राम निध. ारित की गई है, जिसकी सहायता से आप एक बार में अधिक फसल की ढुलाई कर सकते हैं। कंपनी के इस ट्रैक्टर का कुल वजन 1875 किलोग्राम है। मैसी फर्ग्यूसन 241 DI ट्रैक्टर को 3340 mm लंबाई, 1690 mm चौड़ाई और 2200 mm ऊंचाई के साथ 1785 mm व्हीलबेस में तैयार किया गया है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई के क्या–क्या फीचर्स हैं ?

डेंमल थ्मतहनेवद 241 क् ट्रैक्टर में आपको डंदनंस ध् च्वूमत स्टीयरिंग देखने को मिल जाता है। कंपनी के इस ट्रैक्टर में 8 Forward + 2 Reverse / 10 Forward + 2 Reverse गियर वाला गियरबॉक्स आता है। इस मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर में क्नंस टाइप क्लच दिया गया है और इसमें Sliding mesh / Partial constant mesh टाइप ट्रांसमिशन आता है। कंपनी अपने इस ट्रैक्टर में किसानों की अधिक सुरक्षा के लिए Sealed dry disc / Multi disc oil immersed ब्रेक्स देती है, जो टायरों पर अपनी बेहतरीन पकड़ बनाए रखते हैं। मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई ट्रैक्टर 2WD ड्राइव में आता है, इसमें आपको 6-00 x 16 (15-24 cm x 40-64 cm) फ्रंट टायर और 12-4 x 28 (31-49 cm x 71-12 cm) रियर टायर देखने को मिल जाते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई की कितनी कीमत है ?

भारतीय मार्केट में डेंमल थ्मतहनेवद कंपनी ने अपने इस डेंमल Ferguson 241 DI ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत 6.80 लाख से 7.20 लाख रुपये निर्धारित की गई है। इस मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई ट्रैक्टर की ऑन रोड कीमत समस्त राज्यों में लगने वाले आरटीओ रजिस्ट्रेशन और रोड टैक्स के चलते भिन्न हो सकती है।

फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर की विशेषताएँ, फीचर्स और कीमत

फोर्स कंपनी भारतीय कृषि क्षेत्र में अपने शानदार प्रदर्शन वाले ट्रैक्टर निर्मित करने के लिए मशहूर है। फोर्स ट्रैक्टर एक शक्तिशाली इंजन के साथ आते हैं, जो खेती सहित समस्त व्यावसायिक कार्यों को सुगमता से पूर्ण कर सकते हैं। यदि आप भी खेती के लिए शक्तिशाली ट्रैक्टर खरीदने का विचार बना रहे हैं, तो आपके लिए फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर (Force Orchard Mini Tractor) एक बेहतरीन विकल्प सिद्ध हो सकता है। कंपनी का यह मिनी ट्रैक्टर कॉम्पैक्ट साइज का होकर भी ज्यादा भार उठा सकता है। इस फोर्स ट्रैक्टर में आपको 2200 आरपीएम के साथ 27 HP शक्ति उत्पन्न करने वाला 1947 सीसी इंजन आता है।

फोर्स ऑर्चर्ड मिनी की क्या–क्या विशेषताऐं हैं ?

फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर (Force ORCHARD Mini Tractor) में आपको 1947 सीसी क्षमता वाला 3 सिलेंडर में Water Cooled इंजन दिया जाता है, जो 27 HP पावर उत्पन्न करता है। कंपनी के इस ट्रैक्टर में Dry Air Cleaner एयर फिल्टर दिया गया है।

इस फोर्स मिनी ट्रैक्टर की अधिकतम पीटीओ पावर 23.2 एचपी है और इसके इंजन से 2200 आरपीएम उत्पन्न होता है। कंपनी के इस ट्रैक्टर में 29 लीटर क्षमता वाला ईंधन टैंक दिया गया है। फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर (Force Orchard Mini Tractor) की भार उठाने की क्षमता 950 किलोग्राम है और इसका समकुल भार 1395 किलोग्राम है। कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को 2840 MM लंबाई और 1150 MM चौड़ाई के साथ 1590 MM व्हीलबेस में तैयार किया है। इस फोर्स ट्रैक्टर का 235 MM ग्राउंड क्लीयरेंस निर्धारित किया गया है।

फोर्स ऑर्चर्ड मिनी के क्या–क्या फीचर्स हैं ?

फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर (Force Orchard Mini Tractor) में आपको Single Drop Arm Mechanical स्टीयरिंग देखने को मिल जाता है, जो खेतीबा. ड़ी के कार्यों में आरामदायक ड्राइव प्रदान करता है। कंपनी के इस ट्रैक्टर में 8 Forward + 4 Reverse गियर वाला गियरबॉक्स प्रदान किया गया है। इस फोर्स ट्रैक्टर में Dry dual clutch Plate दिया गया है और इसमें Easy shift Constant mesh टाइप ट्रांसमिशन आता है। कंपनी के इस ट्रैक्टर में आपको थully Oil Immersed Multiplate Sealed Disc ब्रेक्स प्रदान किए गए हैं। फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर में 2WD ड्राइव आता है, इसमें आपको 5-00 x 15 फ्रंट टायर और 8-3 x 24 रियर टायर देखने को मिल जाते हैं। कंपनी के इस मिनी ट्रैक्टर में Multi Speed PTO टाइप पावर टेकऑफ आती है, जो 540 / 1000 आरपीएम उत्पन्न करती है।

फोर्स ऑर्चर्ड मिनी की कितनी कीमत है ?

भारत में फोर्स कंपनी ने फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर (Force Orchard Mini Tractor) की एक्स शोरूम कीमत 5.00 लाख से 5.20 लाख रुपये निर्धारित की गई है। इस फोर्स मिनी ट्रैक्टर की ऑन रोड प्राइस समस्त राज्यों में लगने वाले आरटीओ रजिस्ट्रेशन और रोड टैक्स के चलते भिन्न हो सकती है। कंपनी अपने इस फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर (Force Orchard Mini Tractor) के साथ 3000 घंटे या 3 साल की वारंटी प्रदान करती है।

इस राज्य में ड्रोन से छिड़काव करने पर किसानों को 50% प्रतिशत छूट

बिहार राज्य में किसान भाइयों को फसलों पर दवा छिड़काव के लिए मोटा अनुदान दिया जाऐगा। किसान भाई इस अनुदान का लाभ उठाने के लिए कृषि विभाग के डीबीटी पोर्टल पर ड्रोन के माध्यम से दवा छिड़कने के लिए आवेदन कर सकते हैं। खेत में खड़ी फसल की शानदार उपज पाने के लिए किसान भाई विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। कृषक फसल अच्छी हो फसल पर कीटों का प्रकोप ना हो इसके लिए उस पर कीटनाशक का स्प्रे करते हैं। आज हम आपको इसी से जुड़ी एक खुशखबरी सुनाने जा रहे हैं।

फसल सुरक्षा योजना के तहत ड्रोन से छिड़काव पर 50 फीसद छूट

फसल सुरक्षा योजना में पहली बार ड्रोन के जरिए से कीटनाशकों का छिड़काव शम्मिलित किया गया है। बिहार सरकार किसानों को प्रति एकड़ कीटनाशक छिड़काव करने के लिए 50: प्रतिशत रुपये देगी। कीटनाशकों के छिड़काव के लिए एक सेवा प्रदाता चयनित किया गया है। 15 जनवरी से आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई थी। रैयत एवं गैर–रैयत किसान दोनों ही इसका फायदा प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए कृषकों को आवेदन करने के दौरान शपथ पत्र या पंचायत प्रतिनिधि का सुझाव पत्र भी देना पड़ेगा। योजना के अंतर्गत किसान ड्रोन से छिड़काव को कम से कम एक एकड़ और अधिकतम 10 एकड़ में कर सकता है।

किसानों की दवा स्प्रे पर कितने रुपए प्रति एकड़ लागत आऐगी

किसानों को ड्रोन से दवा का छिड़काव करने पर 480 रुपये प्रति एकड़ की लागत आऐगी।

सरकार इस पर पचास फीसद यानी 240 रुपये का अनुदान देगी। अन्य 240 रुपये किसान को देने होंगे। किसानों को कृषि विभाग व कृषि वैज्ञानिकों की ओर से अनुशंसित नहीं किए गए कीटनाशकों का उपयोग करना चाहिए। ड्रोन किसानों को आलू, मक्का, गेहूं, दलहन, तिलहन और अन्य फसलों पर कीटों को नियंत्रित करने में सहायता कर सकते हैं। कृषि विभाग के डीबीटी पोर्टल पर पंजीकृत किसानों को ही योजना का फायदा मिलेगा।

कहाँ करें ड्रोन से दवा स्प्रे के लिए आवेदन ?

किसान कृषि विभाग के डीबीटी पोर्टल पर ड्रोन के जरिए दवा छिड़कने के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करते वक्त आपको आधार कार्ड, जमीन का रकबा, फसल का प्रकार और जमीन की रसीद देनी होगी। प्राप्त आवेदनों का सत्यापन कृषि समन्वयक, पौधा संरक्षण कर्मी, प्रखंड तकनीकी एवं सहायक प्रबंधक करेंगे। चयनित एजेंसी ड्रोन के माध्यम से दवा का छिड़काव करेगी। ड्रोन से छिड़काव करने से किसानों का स्वास्थ्य खराब नहीं होगा। जबकि मशीनों से छिड़काव करने में ज्यादा पानी, श्रम और धन की जरूरत होती है।

मौसमी व अन्य कृषि सुझाव

फसल की कटाई के बाद भंडारण की सम्पूर्ण जानकारी, जाने यहां

किसानो द्वारा ज्यादातर फसल का भंडारण घरों में विभिन्न तरीको से किया जाता हैं। फसल की कटाई के बाद उसका भंडारण करना सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। फसल का स्टॉक नमी वाली जगहों पर न करें , क्यूंकि नमी की वजह से फसल में दीमक और अन्य बैक्टीरिया जैसे रोगों के लगने की संभावनाएं होती है। फसल का स्टॉक यदि बोरों में किया जाता हैं ,तो नीचे फर्श पर लकड़ी के तख्ते ,या फिर चटाई आदि बिछा दी जाती हैं ताकि फसल सुरक्षित रह सके।

कटाई के बाद फसल का भण्डारण कैसे करे

फसल की कटाई के बाद किसानो द्वारा कुछ फसल को बीज के लिए और कुछ फसल को अपने उपयोग के लिए स्टोर कर लिया जाता है। किसानो द्वारा जो फसल अपने लिए रखी जाती हैं, उसका भण्डारण वो ड्रम या अन्य किसी बंद मुँह वाले कंटेनर में करते हैं। ताकि जरुरत पड़ने पर उसका उपभोग किया जा सके।

फसल का भण्डारण करते समय बरती जाने वाली सावधानियां

बीज के लिए जो भण्डारण किया जाता हैं, उसमे कीटनाशक का उपयोग किया जाता हैं। ताकि उसे आगे की बुवाई के लिए सुरक्षित रखा जा सके। ज्यादातर किसानो द्वारा फसल का भण्डारण जूट के थैलो या बोरियो में किया जाता है।

* भण्डारण से पहले फसल को सूर्य की रौशनी में सूखने दे

फसल की कटाई का काम ज्यादातर मशीनो द्वारा किया जाता हैं ,जिसकी वजह से फसल में नमी होती हैं। यदि ऐसी ही फसल का भण्डारण किसान द्वारा किया जाता हैं तो फसल के खराब होने के ज्यादा अनुमान रहते है। इसीलिए फसल की कटाई के बाद ,कुछ दिनों के लिए फसल को सूर्य की रौशनी में सूखने दे ,ताकि उसमे नमी न रहे।

* अनाज को अच्छे से साफ कर ले

फसल की कटाई के वक्त बहुत से दाने टूट जाते हैं या फिर उसमे धूल मिट्टी हो सकती हैं अनावश्यक तिनके आ जाते हैं, जो की फसल की रौनक को कम करते है। फसल को स्टोर करने से पहले उसकी अच्छे से सफाई कर ले ,ताकि फसल को फफूंद जैसी समस्याओं से बचाया जा सके।

* फसल का स्टॉक साफ बोरों में करें

कभी भी फसल का भण्डारण पुराने और पहले से इस्तेमाल किये गए बोरों में न करें, क्यूंकि फसल के खराब होने के और रोग लगने की ज्यादा संभावनाएं होती है। यदि किसानो द्वारा पुराने बोरों का उपयोग किया जा रहा हैं तो उन्हें अच्छे से धो लेना चाहिए। ताकि फसल में कोई भी रोग न लगे।

* स्टॉक की गयी फसल के बोरों को दीवार से सटा कर न रखें

किसानो द्वारा फसल का भण्डारण जिन बोरों में किया जाता हैं उन्हें दीवार से सटा कर न रखें, क्यूंकि बारिश आदि के मौसम में दीवारों पर सीलन या नमी आ जाती हैं, जिसकी वजह से फसल पर भी इसका प्रभाव पड सकता हैं।

* फसल को कीटों से बचाने के लिए नीम के पाउडर का इस्तेमाल करें

कभी कभी स्टॉक की गयी फसल में घुन आदि जैसे कीट लग जाते हैं, जो फसल को अंदर से खोखला कर देते है। इन कीटों से बचने के लिए नीम से बने पाउडर का इस्तेमाल भी किसानो द्वारा किया जाता हैं। जिससे स्टॉक की गयी फसल को सुरक्षित रखा जा सके।

* फसल का स्टॉक यदि बोरों में किया जाता हैं, तो निचे फर्श पर लकड़ी के तख्ते, या फिर चटाई आदि बिछा दी जाती हैं ताकि फसल सुरक्षित रह सके। भंडा. रगृह को मैलाथियान के घोल से अच्छे से धो ले

फसल का भण्डारण करते समय याद रखे, फसल को साफ जगह पर ही स्टोर करें। भंडारगृह में फसल का स्टॉक करने से पहले उसे मैलाथियान में पानी मिलाकर उसका घोल बनाकर भंडारगृह को धो दे। इससे फसल के खराब होने की बहुत ही कम सम्भा. वनाये होती है। फसल का स्टॉक करना बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। फसलों के सुरक्षित भण्डारण के लिए बहुत सी वैज्ञानिक तकनीके अपनायी जाती हैं। इन तकनीकों की वजह से फसल में लगने वाले फफूंद, कीटों आदि से बचाया जा सकता है। लेकिन कभी कभी लोगों को भण्डारण की सम्पूर्ण जानकारी न होने की वजह से आधी से ज्यादा फसल का नुक्सान हो जाता हैं।

भण्डारण के दौरान फसल को किस्से संरक्षित रखना चाहिए

जब किसानो द्वारा फसल का भंडारण किया जाता हैं तो ,फसल को नमी , कीड़ों और चूहों से बचाना चाहिए। फसल में अगर ज्यादा नमी होती हैं तो ये सूक्ष्मजीवों के विकास को बढ़ावा देती है। इसी वजह से भण्डारण करना आवश्यक बताया जाता हैं। ताकि फसल को लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सकें। फसलों को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए भण्डारण किया जाता हैं। छोटे किसानो द्वारा सिर्फ अपने उपभोग के लिए फसल का उत्पादन किया जाता है, लेकिन बड़े पैमाने पर फसल का उत्पादन सिर्फ विपणन के लिए किया जाता हैं।

भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए भण्डारण किया जाता है। फसलों का भण्डारण ज्यादातर प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए भी किया जाता हैं, जैसे बाढ़ आना, सूखा पड़ना आदि। फसलों के भंडारण के लिए सही स्थान की व्यवस्था होनी चाहिए। भण्डारण करते समय ध्यान रहे फसल में नमी न हो, नमी की वजह से पूरी फसल खराब हो सकती हैं।

कृषि क्षेत्र में AI का इस्तेमाल करके किसान को क्या–क्या लाभ मिलेगें ?

AI का कृषि क्षेत्र में उपयोग एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है, जिसके माध्यम से किसान कम वक्त में अपनी आमदनी को दोगुना कर सकते हैं। बदलते दौर में बाकी चीजों के साथ–साथ खेती में भी काफी परिवर्तन हुए हैं। खेती से जुड़े कार्यों को बड़ी ही सुगमता से कम समय में पूराक. रने के लिए वर्तमान में आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस (Artificial Intelligence) की सहायता ली जा रही है। इससे समय की काफी बचत तो होती ही है। साथ ही किसान कम टाइम में ज्यादा आय कर सकते हैं। मौसम का वक्त से पहले अनुमान लगाने से लेकर पेड़ पौधों को कब खाद–पानी की जरूरत है। इसकी जानकारी भी AI के जरिए मिल रही हैं। साथ ही, ड्रोन की मदद से फसलों पर कीटनाशक का छिड़काव किया जा रहा है।

एआई AI में सबसे जरूरी क्या होता है

AI में काफी ज्यादा अहम है मशीन लर्निंग इससे खेती में शानदार लाभ प्राप्त हो सकता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म के माध्यम से फसल उत्पादन, कीटनाशक, रोग प्रबंधन और कृषि से संबंधित अन्य बातों पर भी काम किया जा सकता है। एआई की मदद से डाटा एनालिसिस का काम किया जाता है। कृषि के क्षेत्र में भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके अंतर्गत मृदा से लेकर मौसम तक की विभिन्न जानकारी मिल जाती हैं। आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस की सहायता से खेती के बहुत सारे कार्यों को ऑटोमे. टिक ढ़ंग से किया जा सकता है। इससे उत्पादन को बढ़ाने में सहायता मिलेगी और काम भी काफी तेजी से संपन्न होगा।

मशीनों के अंदर सेंसर्स का इस्तेमाल किया जाऐगा

मशीनों में विभिन्न प्रकार के सेंसर व उपकरणों की सहायता ली जा सकती है। इन सेंसर्स के माध्यम से खेती में सिंचाई, खाद व कीटनाशक का उपयोग ऑटोमेटिक रूप से हो सकता है। एआई के माध्यम से अधिकांश मशीनें ऑटोमेटिक हो जाऐंगी तो आप खेत में अपना वक्त और लेबर दोनों बचा सकते हैं। इससे उत्पादन के साथ–साथ मुनाफा भी काफी बढ़ जाऐगा।

एआई AI के जरिए फसलों का रोगों से संरक्षण होगा

आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस (Artificial Intelligence) कृषि कार्य में किसान को सबसे ज्यादा डर रोगों का रहता है। जिससे बचाव के लिए किसान एआई की सहायता ले सकते हैं। AI किसानों को बाजार की मांग और मूल्य निर्धारण के रुझानों का विश्लेषण करने में सहयोग करता है। ये जानकारी किसानों को अपनी फसलों के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने में सहायता करती है।

किसान उत्पादक संगठन (FPO) क्या है?

किसान उत्पादक संगठन एक प्रकार का उत्पादक संगठन होता है, जिसमें किसान इस संगठन के सदस्य होते हैं। किसान उत्पादक संगठन का कार्य छोटे और सीमान्त किसानों की आय में सुधार लाना है। यह संगठन किसानों के आर्थिक सुधार के लिए बाजार संपर्क बढ़ाने में मदद करते है। किसान उत्पादक संगठन, उत्पादकों द्वारा बनाया गया एक ऐसा संगठन है जिसमें गैर कृषि उत्पाद, कारीगर उत्पाद और कृषि से सम्बन्धित सभी उत्पादों को सम्मिलित किया गया है। यह संगठन छोटे किसानों को विपणन, प्रसंस्करण और तकनीकी सहायता भी प्रदान करता है।

छोटे और सीमान्त किसानों की समस्या की पहचान कर सरकार द्वारा भी किसान उत्पादक संगठन (Farmer Producer Organization) को सक्रीय रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है। ताकि छोटे और मध्य किसानों के बाजार से लिंक को बढ़ाया जा सके और किसानों की आय में वृद्धि की जा सके।

किसान उत्पादक संगठन कब लागू हुआ ?

किसान उत्पादक संगठन की शुरूआत 29 –02 –2020 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा यू पी के चित्रकूट में की गई थी। सरकार द्वारा इस योजना में 10000 किसान उत्पादक संगठनों का गठन तैयार किया गया। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य, खुद के संगठन के माध्यम से उत्पादकों के लिए आय बढ़ाना है। इस संगठन द्वारा कृषि विपणन में से बिचौलियों की शृंखला को खत्म कर दिया गया है। क्योंकि बिचौलिए कृषि विपणन कार्य में गैर कानूनी रूप से कार्य करते है। जिसकी वजह से छोटे और माध्यम किसानों को सिर्फ मूल्य का एक छोटा हिस्सा ही मिल पाता है।

किसान उत्पादक संगठन (FPO) की विशेषताएँ

1. किसान उत्पादक संगठन, किसानों द्वारा नियंत्रित किया गया एक स्वैच्छिक संगठन है। इस संगठन के लिए बनाये जानें वाली नीतियों के निर्माण में इस संगठन के सदस्य सक्रीय रूप से भाग लेते है। किसान उत्पादक संगठन की सदस्यता बिना किसी धर्म, लिंग, जाती, सामाजिक भेदभाव के प्राप्त की जा सकती है। लेकिन जो व्यक्ति इस संगठन का सदस्य बनना चाहता है वो इस संगठन से सम्बंधित सभी जिम्मेदारियों को लेने के लिए तैयार होना चाहिए।

2. किसान उत्पादक संगठन के संचालक, इस संगठन के सभी किसान सदस्यों को शिक्षा और प्रशिक्षण देते है, ताकि वो भी किसान उत्पादक संगठन के विकास में अपना योगदान कर सके। राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में इस संगठन के काफी अच्छे परिणाम देखने को मिले है।

3. किसान उत्पादक संगठनों को सीबीबीओ यानी कलस्टर आधारित व्यवसायिक संगठनों के आधार पर गठित किया जाता है। इसमें एजेंसियों को लागू करके राज्य स्तर पर लगाया जाता है। सीबीबीओ द्वारा प्रारंभिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जबकि किसान उत्पादक संगठनों द्वारा हैंड होल्डिंग प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

किसान उत्पादक संगठन के लाभ

1 कॉर्पोरेट्स के साथ वार्तालाप

किसान उत्पादक संगठन किसानों को बड़ी बड़ी कॉर्पोरेट्स के साथ प्रतिस्पर्धा का अवसर प्रदान करता है। यह सभी किसानों को एक समूह में बात करने के लिए भी प्रेरित करता है। यह आउ. टपुट एवं इनपुट दोनों बाजारों में छोटे किसानों की सहायता करने के लिए अनुमति प्रदान करता है।

2 सामाजिक प्रभाव

किसान उत्पादक संगठन द्वारा सामाजिक पूंजी का विकास होगा। यह संगठन सामाजिक संघर्षो को कम करने के साथ साथ, समुदाय में पोषण मूल्यों को भी कम करेगा। किसान उत्पादक संगठन द्वारा महिला किसानों को भी निर्णय लेने में आसानी होगी, उनकी निर्णय क्षमता में भी वृद्धि होगी। यह संगठन लिंग भेदभाव को भी कम करने में सहायता प्रदान करेगा।

3 औसत जोत आकार की चुनौती का समाधान

इसमें किसानों को सामूहिक खेती के लिए भी प्रेरित किया जा सकता है। इससे उत्पादकता में वृद्धि होगी और रोजगार सर्जन में भी सहायता मिलेगी। कृषि क्षेत्र में छोटे और सीमान्त किसानों की हिस्सेदारी 1980 –1981 में 70% से बढ़कर वर्ष 2016 –17 में 86% हो गई है। और इतना ही नहीं बल्कि 1970 –71 में जोत का आकर 2.3 हेक्टेयर से घटकर 2016 –17 में 1.08 हेक्टेयर रह गया है।

4 एकत्रीकरण

किसान उत्पादक संगठन द्वारा किसानों को अच्छे गुणवत्ता वाले उपकरण बहुत ही कम लागत पर उपलब्ध कराये जाते है। कम लागत वाले उपकरणों में जैसे मशीनरी की खरीद, फसल के लिए ऋण एवं कीटनाशक और उर्वरक। इन् सभी की खरीद के बाद प्रत्यक्ष विपणन करना। किसान उत्पादक संगठन किसानों को समय बचाने, परिवहन में सक्षम बनाने, लेन–देन लागत और गुणवत्ता रखरखाव में सक्षम बनने के लिए कार्य करता है।

योगी सरकार ने बजट में किसानों के लिए क्या ऐलान किया है ?

सरकार की नवीन घोषणाओं से राज्य के लाखों कृषकों को फायदा मिलेगा। इन योजनाओं में फसलों और सिंचाई से लेकर किसानों को प्रत्यक्ष तौर पर आर्थिक लाभ देने का जिक्र किया गया है। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार ने बजट प्रस्तुत किया है। इस बजट में किसानों को कुछ बड़ी सौगातें प्रदान की गई हैं। उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बजट प्रस्तुत करते हुए उनका ऐलान किया है। सरकार की इन नवीन घोषणाओं से राज्य के लाखों कृषकों को लाभ पहुँचेगा। इन योजनाओं में फसलों से लेकर फसलों की सिंचाई एवं किसानों को प्रत्यक्ष तौर पर आर्थिक लाभ देने का जिक्र किया गया है।

यूपी बजट में इन सुविधाओं की घोषणा हुई

उत्तर प्रदेश सरकार ने डार्क जोन में नवीन प्राइवेट नलकूप कनेक्शन पर लगाई गई रोक को हटा लिया है। उत्तर प्रदेश सरकार के इस निर्णय से तकरीबन एक लाख कृषकों को लाभ मिलेगा। इसके साथ–साथ पेराई सत्र 2023–2024 के लिये गन्ने की अगैती किस्म के मूल्य को 350 रूपये से बढ़ाकर 370 रूपये कर दिया गया है। सामान्य प्रजाति के गन्ने की कीमत को 340 रूपये से बढ़ाकर 360 रूपये कर दिया गया है। इसके साथ ही अनुपयुक्त किस्म के गन्ने के मूल्य को 335 रूपये से बढ़ाकर 355 रूपये कर दिया गया है। इसके साथ ही बुन्देलखण्ड इलाके में रबी फसल की सिंचाई के लिए सीजनल टैरिफ लाभ और अस्थाई इलेक्ट्रिकल कनेक्टर की सुविधा भी प्रदान की गई है।

योगी सरकार ने महिला किसानों की बढ़ाई पेंशन

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बजट में उन महिला किसानों को भी काफी लाभ पहुंचाया गया है, जिनके पति की मृत्यु हो चुकी है। सरकार द्वारा निराश्रित महिला पेंशन में पहले ₹500 महीने प्रदान किए जा रहे थे। परंतु, अब इसको बढ़ाकर हजार रुपए कर दिया गया है। महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना के अंतर्गत इन महिलाओं को 200 उत्पादक समूह बनाकर तकनीकी सहयोग भी प्रदान किया जाएगा।

इस राज्य सरकार ने सरसों की खेती करने वाले किसानों के हित में उठाया महत्वपूर्ण कदम

सरसों की खेती करने वाले हरियाणा के किसानों के लिए एक खुशखबरी है। राज्य के मुख्य सचिव संजीव कौशल का कहना है, कि रबी सीजन के दौरान सरकार किसानों की सरसों, चना, सूरजमुखी व समर मूंग की निर्धारित एमएसपी पर खरीद करेगी। साथ ही, मार्च से 5 जनपदों में उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से सूरजमुखी तेल की आपूर्ति की जाएगी।

मुख्य सचिव ने फसलों के उत्पादन को लेकर क्या कहा है ?

एक बैठक में मुख्य सचिव ने कहा कि इस सीजन में 50 हजार 800 मीट्रिक टन सूरजमुखी, 14 लाख 14 हजार 710 मीट्रिक टन सरसों, 26 हजार 320 मीट्रिक टन चना और 33 हजार 600 मीट्रिक टन समर मूंग की पैदावार होने की उम्मीद है। मुख्य सचिव ने बताया कि हरियाणा राज्य वेयरहाउसिंग कारपोरेशन, खाद्य एवं आपूर्ति विभाग व हैफेड मंडियों में सरसों, समर मूंग, चना और सूरजमुखी की खरीद प्रारंभ करने के लिए तैयारियां शुरू करने के आदेश भी दिए हैं।

सरकार कब से सरसों की खरीद चालू करेगी

सरकार मार्च के अंतिम सप्ताह में 5 हजार 650 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से सरसों की खरीद चालू करेगी। इसी प्रकार 5 हजार 440 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से किसानों का चना खरीदा जाएगा। 15 मई से 8 हजार 558 रुपये प्रति क्विंटल की दर से समर मूंग की खरीद होगी। इसी प्रकार एक से 15 जून तक 6760 रुपये प्रति क्विंटल के भाव से सूरजमुखी की खरीद होगी।

लापहरवाही करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा

मुख्य सचिव ने खरीद प्रक्रिया के दौरान किसानों की सुविधा के लिए अधिकारियों को समस्त आवश्यक प्रबंध करने एवं खरीदी गई पैदावार का तीन दिन के अंदर भुगतान करने के लिए कहा है। साथ ही, उन्होंने कहा कि काम में लापरवाही करने वालों को बिल्कुल बख्शा नहीं जाएगा। इस फैसले से किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य भी मिल जाएगा।

किसानों को 50% प्रतिशत कम कीमत पर इस योजना के तहत बीज प्रदान किए जाऐंगे

कसिानों को खेती के लए़ि एक उम्दा गुणवत्ता के बीज प्राप्त होना कसिी चुनौती से कम नही है।

क्योंकि, कालाबाजारी और नकली बीजों की वजह से यह थोड़ा कठिन हो जाता है। परंतु, सरकार की एक योजना के माध्यम से किसान भाई कम कीमत पर बेहतरीन गुणवत्ता के बीज हांसिल कर सकते हैं। बेहतरीन फसल और शानदार उत्पादन के लिए कृषकों को उत्तम गुणवत्ता के बीजों की जरूरत होती है। लेकिन, जानकारी के अभाव में किसान सामन्यतः सही बीजों का चुनाव नहीं कर पाते हैं, जिससे उन्हें काफी हानि का सामना करना पड़ता है। दरअसल, बाजार में इन नकली बीजों को चलन काफी ज्यादा बढ़ गया है।

नकली और असली बीजों में अंतर पहचानना काफी कठिन है, जिस वजह से किसान फर्क पहचान नहीं पाते और बाद में उनकी फसल चौपट हो जाती है। इससे किसानों को काफी आर्थिक हानि भी उठानी पड़ती है। असली बीजों को कालाबा. जारी के चलते किसान भाई प्राप्त नहीं कर पाते। किसानों की इसी समस्या को देखते हुए सरकार ने एक बड़ा कदम उठाया है। समस्या ने जूझने के लिए सरकार बीज ग्राम योजना (Beej Graam Yojana) लेकर आई है। इस योजना के तहत किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज कम कीमत पर उपलब्ध कराए जाते हैं।

बीज ग्राम योजना क्या है ?

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि ये केंद्र द्वारा संचालित एक योजना है, जो विशेषकर कृषकों के लिए प्रारंभ की गई है। इस योजना की शुरुआत 2014–15 में हुई थी। योजना के अंतर्गत किसानों को कटाई, बुवाई और अन्य कार्यों का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। ताकि उन्हें और मुनाफा हांसिल हो सके। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य बीजों की कालाबाजारी को समाप्त करना है, ताकि किसानों को समय से अच्छी गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध हो सके। योजना के तहत किसानों को बेहतरीन गुणवत्ता के बीज तो प्रदान किए ही जाते हैं। परंतु, उन्हें ये भी बताया जाता है, कि वे स्वयं इन्हें कैसे उगा सकते हैं। ताकि, किसानों को किसी पर निर्भर न रहना पड़े।

बीज ग्राम योजना के लाभ

योजना के अंतर्गत सबसे पहला फायदा यह होता है, कि किसानों को बीजों के लिए यहां–वहां भटकना नहीं पड़ता। अच्छी क्वालिटी के बीजों से उत्पादन अच्छा होता है और किसानों का मुनाफा भी बढ़ जाता है। किसानों को कृषि विशेष. ज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे उन्हें समय–समय पर नई तकनीकों की जानकारी मिलती रहती है। योजना का लाभ सिर्फ उन किसानों को मिल पाएगा, जो आर्थिक रूप से कमजोर है।

योजना का फायदा कैसे उठाएं किसान ?

अगर आप भी एक किसान हैं और खेती के लिए उत्तम गुणवत्ता यानी क्वालिटी के बीज की खोज कर रहे हैं, तो सरकार की ये बीज ग्राम योजना आपके लिए काफी लाभकारी हो सकती है। इसके लिए आप निम्नलिखित तरीकों का इस्तेमाल कर सकते हैं। सबसे पहले, आपको अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में जाकर जिला कृषि अधिकारी से संपर्क करना होगा। वहां, आप इस योजना के लिए आसानी से अनुरोध कर सकते हैं। ध्यान दें, कि इसके लिए आपको सभी जरूरी दस्तावेजों को साथ लाना होगा, जैसे पासबुक, फोटो, आधार कार्ड, आय प्रमाण पत्र आदि।

सरसों की फसल को एमएसपी पर खरीदने की तैयारी पूरी करने का निर्देश

केंद्र सरकार इस बार एमएसपी पर सरसों की खरीद करेगी। सरकार ने इसकी संपूर्ण तैयारियां कर ली हैं। केंद्रीय कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने बुधवार को इस बात की जानकारी दी है। भारत में इस बार सरसों की काफी शानदार पैदावार हुई है, जिस पर केंद्रीय कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने किसानों का आभार प्रकट किया है।

कृषि मंत्री का कहना है, कि इस साल किसानों ने भारी मात्रा में सरसों की पैदावार की है। इसके लिए समस्त किसान भाई–बहन बधाई के पात्र हैं। मुंडा ने कहा कि उन्होंने संबंधित विभागों को सरसों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (डैच) पर खरीदने के लिए कहा है। ताकि किसानों को उपज बेचने में कोई कठिनाई न आए और उन्हें उपज की समुचित धनराशि मिल सके।

खरीद की सारी तैयारियां पूर्ण करने का निर्देश दिया है

उन्होंने कहा कि रबी विपणन सीजन (आरएमएस) के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसियों को पहले से ही पीएसएस के तहत सरसों की खरीद के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया गया है, ताकि किसानों को किसी भी तरह की कठिनाई का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा, ष्रबी विपणन सीजन–2023 के दौरान गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और असम राज्यों से पीएसएस के तहत खरीद की मंजूरी 28.24 एलएमटी सरसों थी।ष

ये भी पढ़ें: सरसों का रकबा बढ़ने से किसान होंगे खुशहाल

कृषकों को अधिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा आरएमएस–2024 के लिए भी सभी सरसों उत्पादक राज्यों को सूचित किया गया है, कि यदि राज्य में सरसों का वर्तमान बाजार मूल्य अधिसूचित एमएसपी से कम है, तो पीएसएस के तहत सरसों की खरीद का प्रस्ताव समय रहते भेजें। उन्होंने कहा कि आरएमएस–2024 के लिए सरसों का एमएसपी 5,650 रुपये प्रति क्विंटल है। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है, कि किसानों को उनकी उपज का सही भाव मिल सके और उन्हें अपने उत्पाद को बेचने में कोई समस्या न आए।

लहसुन की कीमतों में आए उछाल की क्या वजह है ?

लहसुन की कीमतों में अचानक से काफी उछाल आया है। भुवनेश्वर की मंडी में तो कीमत 400 रुपये प्रति किलो ग्राम तक पहुंच गई थी। लहसुन की फसल बर्बाद होने से यह हो रहा है। इस माह भाव कम होने की संभावना है। आम जनता को महंगाई की काफी मार सहन करनी पड़ रही है।

समस्त चीजों में खूब महंगाई बढ़ी है और वहीं खाने की चीजों की बात की करें तो इसमें भी बेहद इजाफा हुआ है। घरों में जो सब्जियां तैयार की जाती हैं, उनमें स्वाद बढ़ाने के लिए लहसुन आवश्यक होता है। परंतु, वर्तमान में देखा जाए तो लहसुन की कीमतें भी आसमान को छू रहे हैं। लहसुन ₹400 किलो तक की कीमत तक पहुँच चुका है।

आखिर किस वजह से लहसुन की कीमतें बढ़ रही हैं ?

बीते कुछ सप्ताह की बात करें तो लहसुन की कीमतों में प्रचंड तेजी से इजाफा हुआ है। भुवनेश्वर की मंडी में तो कीमत ₹400 रुपये प्रति किलो ग्राम तक पहुंच गए थी। दरअसल, लहसुन की कीमत बढ़ने के पीछे जो अहम वजह है। वह लहसुन की फसल का खराब होना है। विभिन्न राज्यों में बेकार मौसम की वजह से लहसुन की फसलें बर्बाद हुई हैं। इसके चलते कीमतों में काफी उछाल देखा गया है। फसल खराब होने के चलते दूसरी फसल की रोपाई में समय लगेगा। इस वजह से लहसुन की नई उपज की आवक में देरी है, जिसके चलते कीमतें बढ़ रही हैं।

मध्य प्रदेश में कीमतें कब कम होंगी ?

मध्य प्रदेश में लहसुन की सर्वाधिक खेती की जाती है। परंतु, मौसम की मार की वजह से फसल काफी प्रभावित हुई है, जिसकी वजह से नई फसल आने में काफी विलंब हो रहा है। जैसे ही बाजार में लहसुन की नई फसल आ जाती है। लहसुन की कीमतों में गिरावट आएगी। मंडी व्यापारियों के मुताबिक, खरीफ लहसुन के आने के पश्चात कीमत अत्यंत कम हो जाएगी। मतलब कि फरवरी के माह में लहसुन की कीमतों के कम होने की संभावना है।

अशोक का पेड़ लगाने से क्या–क्या फायदा हो सकते हैं ?

अशोक के पेड़ को ताम्रपल्लव के रूप में भी जाना जाता है। क्योंकि इसकी पत्तियों का रंग शुरुआत में तांबे की तरह होता है। अशोक के पेड़ की पत्तियों की लम्बाई 8 –9 इंच होती है, साथ ही पत्तियों की चौड़ाई 2–2.5 इंच होती है। अशोक का पेड़ छायादार होता है। अशोक के पेड़ को पूरे भारत में सबसे प्राचीन और पवित्र माना जाता है। अशोक के पेड़ में बहुत से आयुर्वेदिक गुण भी पाए जाते है, जिनका उपयोग आयुर्वेदिक दवाइयों के लिए भी किया जाता है।

अशोक का पेड़ कितने प्रकार का होता है

अशोक का पेड़ मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है रू एक है असली अशोक वृक्ष जो की आम के पेड़ की तरह फैलता है और दूसरा है लंबा अशोक वृक्ष जो की सामान्य रूप से सबके घरो में देखने को मिलता है। लम्बे बढ़ने वाले अशोक वृक्ष को देवदार की प्रजाति का वृक्ष माना जाता है। अशोक के पेड़ का वैज्ञानिक नाम सरका असोच है।

अशोक के वृक्ष से मिलने वाले फायदे

अशोक के पेड़ में बहुत से आयुर्वेदिक गुण पाए जाते है, जिनका उपयोग आयुर्वेदिक दवाइयों में भी किया जाता है। अशोक के पेड़ की छाल ,पत्तियों और जड़ों का भी उपयोग बहुत सी चीजों में किया जाता है। अशोक के पेड़ को शारीरिक और मानसिक ऊर्जा बढ़ाने में मददगार माना जाता है। अशोक के पेड़ को इकोफ्रैंडली माना जाता है , यह 24 में से 22 घंटे ऑक्सीजन देता है।

त्वचा को स्वस्थ रखने में है फायदेमंद

अशोक के पेड़ में बहुत से ऐसे तत्व पाए जाते है, जो शरीर के साथ साथ त्वचा को भी स्वस्थ रखते है। अशोक की छाल को पीस कर चेहरे पर लेप करने से त्वचा में निखार आता है, साथ ही चेहरे पर होने वाले कील ,मुँहासे और दाग धब्बो को भी कम करता है। अशोक की छाल में एंटीबायोटिक गुण पाए जाते है, जो त्वचा को स्वस्थ रखने में मददगार साबित होती है।

मधुमेह के लक्षणों को कम करता है

अशोक के पेड़ में हाइपोग्लाइसेमिक गुण भी पाए जाते है, जो शरीर के अंदर रक्त में होने वाले सर्करा यानी शुगर की मात्रा को कम करते है। इससे शरीर के अंदर मधुमेह की बीमारी पर नियंत्रित किया जा सकता है। मधुमेह की बीमारी से छुटकारा पाने के लिए अशोक के पत्तो का भी सेवन किया जा सकता है। इससे मधुमेह के रोग में राहत मिलती है, साथ ही मधुमेह के रोग से शरीर में आने वाली कमजोरी और चिड़चिड़ापन को भी कम किया जा सकता है।

बबासीर जैसी बीमारी में राहत

जिन व्यक्तियों को बबासीर जैसी बीमारियां है, उनके लिए अशोक का पेड़ लाभकारी है। अशोक के पेड़ की छाल को धूप में अच्छे से सूखा ले , उसके बाद छाल को अच्छे से पीस ले। रोजाना अशोक के पेड़ की छाल से बने चूर्ण का सेवन करने से बबासीर की बीमारी में राहत मिलेगी। इसके साथ साथ अशोक के पेड़ के फूलों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह पाचन किर्या को भी स्वस्थ बनाये रखता है।

टूटी हड्डियों को जोड़ने में मददगार

अशोक के पेड़ का उपयोग टूटी हड्डियों को जोड़ने के लिए भी किया जाता है। अशोक के पेड़ की छाल में टैनिन और एनालजैसिक नामक गुण पाए जाते है , जो टूटी हुई हड्डियों, मॉंस फटना और गुम चोटों में काफी लाभदायक होती है। इसीलिए अशोक के पेड़ का पेड़ बहुत से आयुर्वेदिक दवाइयों में किया जाता है। अशोक के पेड़ की छाल का लेप बहुत से ओर्थपेडीक द्वारा भी रोगियों के इलाज के लिए किया जाता है।

साँस संबंधी बीमारियों में है फायदेमंद

अशोक के पौधे का सेवन साँस संबंधी बीमारियों में राहत पाने के लिए भी किया जाता है। इसमें अशोक के पेड़ के बीजो को पीसकर एक चूर्ण तैयार कर लिया जाता है , जिसका सेवन पान के पत्ते के साथ किया जाता है। इसका रोजाना सेवन करने से साँस संबंधी बीमारियों में राहत मिलती है। स्वसन किर्या को भी बेहतर बनाता है।

क्या अशोक का पेड़ घर में लगाना शुभ है ?

अशोक का पेड़ घर में लगाना शुभ माना जाता है , क्योंकि अशोक का पेड़ घर में नकारात्मक ऊर्जा को आने से रोकता है। अशोक का पेड़ देखने में तो सुंदर लगता है , साथ ही यह घर में सुख और समृद्धि का भी प्रतीक है। जिन घर में वास्तु दोष होता है, उन्हें घर में अशोक का पेड़ लगाने की सलाह दी जाती है।

अशोक के पेड़ से होने वाले नुक्सान क्या है ?

अशोक के पेड़ से मिलने वाले बहुत से फायदे है। लेकिन यही दूसरी तरफ इसके कुछ नुक्सान या दुष्प्रभाव भी है, जो स्वास्थ्य को विशेष रूप से नुक्सान पहुँचा सकते है। इसीलिए अशोक के पेड़ का इस्तेमाल कुछ दिशाओ में हानिकारक माना जाता है। इन परिस्तिथियों में हो सकते है अशोक के पेड़ के सेवन करने से नुक्सान।

हाई ब्लड प्रेसर वाले न करें अशोक का सेवन

जिन लोगो को हाई ब्लड प्रेसर की समस्या है ,उन्हें अशोक के पेड़ से मिलने वाले किसी भी प्रकार की जड़ी बूटियों का उपयोग नहीं करना चाहिए। यदि आप इस स्तिथि में इनका सेवन करते है तो आपको बहुत से नुक्सान या परेशानियों का सामना करना पड सकता है जैसे रूसीने में दर्द होना ,साँस का फूलना ,नींद ना आना और बहुत ज्यादा थकावट महसूस करना ये सभी परेशानियां हो सकती है। इसीलिए हाई ब्लड प्रेसर के रोगियों को अशोक का सेवन नहीं करना चाहिए।

गर्भवती महिलाये न करें सेवन

अशोक के पेड़ में बहुत से ऐसे तत्व पाए जाते हैं , जिनका तासीर गर्म होता है और वो अंदर शरीर में जाकर किसी प्रकार की परेशानी का भी कारन बन सकता है। गर्भवती महिलाओ को अशोक के पेड़ से बनी किसी भी प्रकार की आयुर्वेदिक दवाओं का सेवन नहीं करना चाहिए। इसके साथ अगर कोई और व्यक्ति जो पहले से ही किसी बीमारी से सम्बंधित दवाइयाँ ले रहा है, उसे भी इसका उपयोग नहीं करना चाहिए। शरीर में इन्फेक्शन या अलेर्जी सम्बंधित बीमारियाँ हो सकती है। गर्भवती महिलाये डॉक्टर से परामर्श लेने के बाद इसका सेवन कर सकती है।

मासिक धर्म में न करें उपयोग

मासिक धर्म के दौरान अशोक के पेड़ का उपयोग नहीं करना चाहिए। बहुत से लोगों का मानना है मासिक धर्म के वक्त अधिक रक्त बहने पर अशोक के पेड़ की छाल का काढ़ा बनाकर पीने से आराम मिलता है। लेकिन ऐसा करने से मासिक धर्म और भी बिगड़ सकता है, इसीलिए इसका उपयोग किसी डॉक्टर की परामर्श के बाद ही करें। यदि अशोक की चाल का काढ़ा बनाकर या फिर रोज सुबह उसके पत्तों का सेवन मासिक धर्म के दौरान किया जाता है तो इससे मासिक धर्म में अनियमित्ता आ सकती है।

साथ ही अशोक के पत्तों का इस्तेमाल धार्मिक और मांगलिक कार्यों में भी किया जाता है। अशोक के पेड़ को सबसे शुद्ध और पवित्र पेड़ माना जाता है। हिन्दू धर्म में अशोक के पेड़ को शुभता का प्रतीक माना जाता है। अशोक का पेड़ घर में गुरुवार और शुक्रवार को लगाना शुभ माना जाता है, इसलिए अशोक के पेड़ को हमेशा इन्ही दिनों लगाना फायदेमंद माना जाता है।

अशोक के पेड़ का उपयोग पथरी के दर्द को दूर करने के लिए , पेट के कीड़ो को मारने के लिए और साथ ही बदन में होने वाले दर्द में भी सहायक होता है। अशोक के पेड़ में बहुत से ऐसे गुण भी पाए जाते है , जो हृदय संबंधी बीमारियों को भी नियंत्रित करते है। अशोक के पत्तों या फूलों का सेवन शरीर में रक्त के सर्क्युलेशन को सुचारु रूप से बनाये रक्त है। साथ ही ये याद्दश्त या दिमाग के लिए भी बेहतर माना जाता है।

जानें वन करेला की सम्पूर्ण जानकारी

वन करेला की खेती हमारे देश के बहुत से राज्यों में की जाती है। इसे अलग अलग जगहों पर अलग अलग नामो से जाना जाता है, जैसे रू मीठा करेला ,जंगली करेला , कंटीला परवल , करोल ,भाट करेला ,आदि। यह मानसून में मिलने वाली एक तरह की सब्जी है। इस सब्जी के बाहरी सतह पर कांटेदार रेशे उगे हुए होते है। वन करेला आकर में बहुत छोटा रहता है। इसका वैज्ञानिक नाम मोमोरेख डाइगोवा है।

वन करेले की खेती

वन करेले ज्यादातर बारिश के मौसम में होते है। बारिश होने पर वन करेला की बेले अपने आप उगने लग जाती है। यह सब्जी अन्य सब्जियों की तुलना में काफी महंगी होती है। इसके बीज आसानी से न मिलने के कारण इसकी खेती नहीं की जा सकती है। बारिश का सीजन खत्म होने के बाद वन करेले के बीज जमीन पर गिर जाते है। पहली बारिश के होते ही वन करेले की बेले उगने लगती है।

वन करेले की किस्में

वन करेला की दो किस्में होती है ,जो खेती के रूप में उगाई जाती है। जैसे रू छोटे आकर वाले वन करेले और इंदिरा आकर (आर एम एफ 37)। वन करेले का प्रबंधन कंद या बीजो के द्वारा किया जाता है। इसीलिए किसानों द्वारा अच्छी वैरायटी वाले बीजो का उपयोग करना चाहिए। बुवाई से पहले बीजो की अच्छे से जांच कर ले ,कही बीज रोगग्रस्त तो नहीं है।

वन करेला के बीजो की बुवाई

वन करेले की खेती के लिए मिट्टी का पीअच स्तर 6–7 माना जाता है। इसकी बुवाई का काम दोमट और बलुई मिट्टी में किया जा सकता है। लेकिन अच्छी पैदावार के लिए दोमट मिट्टी को ज्यादा उपयोगी माना जाता है। वन करेले के पौधे को अच्छे से पनपने के लिए गर्म आद्र जलवायु की आवश्यकता रहती है। वन करेले की बुवाई के लिए किसी खास तकनीक की आवश्यकता नहीं रहती है। वन करेले के बीजो को रात में गर्म पानी में भिगोकर रख दे। इससे बीजो का अच्छा अंकुरण होता है। इसकी बुवाई 3–4 इंच की दूरी पर की जाती है। आवश्यकता अनुसार इसमें पानी देते रहना चाहिए। बुवाई के कुछ दिन बाद ही इसमें नन्हे नन्हे पौधे देखने को मिलते है।

वन करेला का आहार करने से हो सकते है, ये लाभ

वन करेला में बहुत से विटामिन, कैल्शियम, जिंक, कॉपर और मैग्नीशियम जैसे तत्व पाए जाते है। इसके उपयोग से बहुत सी बिमारियों में तो आराम मिलता है, लेकिन ये स्वास्थ के लिए भी बेहद लाभकारी होती है, जानिए कैसे रू

कार्बोहायड्रेट से परिपूर्ण

वन करेले में अधिक मात्रा में कार्बोहायड्रेट पाया जाता है। कार्बोहायड्रेट का सेवन करने से शरीर में फुर्ती और ताकत आती हैं, जो की किसी भी काम को करने के लिए बेहद आवश्यक रहती है। दिन प्रतिदिन होने वाले कामो के लिए शरीर में ताकत रहना जरूरी है, बिना ताकत के कोई भी काम नहीं हो पायेगा।

विटामिन से भरपूर

वन करेले के अंदर बहुत से विटामिन पाए जाते है, इसमें विटामिन ए और विटामिन बी भरपूर मात्रा में पाया जाता है।

वन करेले का सेवन करने से शरीर के अंदर विटामिन्स की जो कमी रहती है उसे कम करता है। महंगी महंगी दवाइयों के सेवन से भी कोई फायदा न मिलने पर भी आहार में वन करेले का उपयोग करके देख सकते है। इसके उपयोग से आपको शरीर में विटामिन की कमी महसूस नहीं होगी।

प्रोटीन और फाइबर की उचित मात्रा

वन करेले में प्रोटीन और फाइबर की उचित मात्रा पायी जाती है। प्रोटीन जो शरीर के अंदर कोशिकाओं की मरम्मत करने में सहायक रहता है। और फाइबर जो शरीर की पाचन किर्या को स्वस्थ रखने में मददगार रहता है। यह पाचन किर्याओ को सुचारु रूप से कार्य करने के लिए मदद करता है। वन करेले की खेती ज्यादातर पहाड़ी इलाकों में की जाती है। वन करेले की तासीर गर्म रहती है, साथ ही ये खाने में भी बहुत स्वादिष्ट लगती है।

वन करेला बरसात के मौसम में होने वाली खुजली, पीलिया और बेहोशी में भी लाभदायक साबित हुआ है। इसके अलावा वन करेला का आहार करने से आँखों की समस्या, बुखार और इन्फेक्शन जैसे समस्याओं से भी राहत मिलती है। इसके खाने से ब्लड शुगर लेवल भी संतुलित रहता है।

बरगद का पेड़ एवं इससे मिलने वाले लाभ और हानी क्या है?

बरगद के पेड़ को वट वृक्ष के नाम से भी जाना जाता हैं। यह पेड़ विशाल शाखाओं वाला होता है। बरगद का पेड़ अत्यधिक छायादार होता हैं साथ ही लम्बे समय तक जीवित रहने वाला वृक्ष है। फिकस बेंघालेंसिस बरगद के पेड़ का वानस्पतिक नाम हैं। बरगद के पेड़ का तना बहुत ही मजबूत और सीधा रहता है। बरगद का पेड़ ज्यादा समय तक अक्षय रहता हैं इसीलिए इसे अक्षयवट के नाम से भी जाना जाता है।

बरगद के पेड़ के उपयोगी भाग कौन से हैं

सिर्फ बरगद का पेड़ ही नहीं बल्कि इसकी जड़े, पत्ते और छल भी उपयोगी हैं। इन सभी का उपयोग आयुर्वेदिक दवाइयों के लिए किया जाता हैं। बरगद के पेड़ के उपयोग से कफ ,नाक, कान या बालों की समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

बरगद के पेड़ से होने वाले फायदे

बरगद के पेड़ की जड़ ,फूल और पत्तों में कुछ ऐसे तत्व भी पाए जातें हैं, जो मानसिक बिमारियों के इलाज में सहायता प्रदान करते है। बरगद का पेड़ त्वचा सम्बन्धी रोगों में भी सहायता प्रदान करता है। इस पेड़ की कोपलों में अत्यधिक इम्युनिटी पायी जाती हैं ,जो किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य को संतुलित बनाये रखने में सहायता प्रदान करती है।

बरगद का पेड़ हैं दाँत और मसूड़ों के दर्द में लाभकारी

बरगद के पेड़ की जड़ ,छाल और पत्तों में बहुत से ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो सूजन और बैक्टीरिया को नष्ट करने में सहायक होते हैं। बरगद के पेड़ की जड़ों को चबाकर नरम करके इसका इस्तेमाल दातुन की तरह किया जाता है। यह दाँतो में होने वाली सडन को कम करने में सहायक होता है।

बवासीर के रोग में हैं बरगद का पेड़ सहायक

बरगद के पेड़ से बवासीर जैसे रोगों में राहत मिलती है। बरगद के पेड़ के पत्तों में सेरिन ,शुगर और रेजिन जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं ,जो बवासीर के रोग में राहत प्रदान करता हैं। इसलिए हम कह सकते हैं बरगद के पेड़ का दूध बवासीर रोग में अपनी एहम भूमिका निभाता है।

मधुमेह बीमारी के रोकथाम में सहायक

बरगद के पेड़ की जड़ में शुगर को कम करने वाले बहुत से तत्व पाए जाते हैं। मधुमेह को नियंत्रित करने के लिए इसकी जड़ो का अर्क बनाकर पानी में मिलाकर पीना चाहिए। ये मधुमेह जैसी बीमारीओं के शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करता है।

खुजली की समस्याओं में हैं लाभकारी

कभी कभी हमारी त्वचा पर बैक्टीरियल इन्फेक्शन हो जाता हैं, जिसकी वजह से हमे खुजली जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं।

इस समस्या से बचने के लिए हम बरगद के पत्तों का लेप बनाकर अपनी त्वचा पर लगा सकते है। साथ ही बरगद के पेड़ से मिलने वाली छाल का लेप बनाकर इसका इस्तेमाल कर सकते है। यह खुजली की समस्या से राहत दिलाने में सहायक साबित होती है।

बरगद के पेड़ से होने वाले नुकसान

बरगद के पेड़ से मिलने वाले बहुत से उपयोग है, लेकिन उन्ही के साथ बहुत से नुकसान भी है। बरगद के पेड़ के किसी भी भाग का उपयोग डॉक्टर के परामर्श बिना न करें। बीमारी के अनुसार ही बरगद के अलग अलग भागो का उपयोग करें। ज्यादा मात्रा में उपयोग करने से स्वास्थ्य सम्बंधित बीमारियाँ भी हो सकती है।

त्वचा पर एलर्जी या इन्फेक्शन का होना

जिन लोगो की त्वचा ज्यादा सेंसिटिव होती है, उन्हें कम मात्रा में इसका उपभोग करना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति द्वारा बरगद का रोजाना उपयोग किया जा रहा है , और उसे अपने शरीर पर एलर्जी , लाल धब्बे या फुन्सी देखने को मिलती है ,तो उसे बरगद का उपयोग नहीं करना चाहिए। या किसी और बीमारी का आभाष होता है, तो उसी वक्त बरगद का उपयोग करना बंद कर दे।

दवाओं के साथ ना करें बरगद का उपयोग

जो लोग पहले से किसी प्रकार की दवाइयों का उपयोग कर रहे है, उन्हें बरगद के किसी भी प्रकार के भाग का उपयोग नहीं करना चाहिए। दवाइयों के साथ इसका उपयोग न करें , स्वास्थ्य सम्बंधित बीमा. रियां हो सकती है। यदि दोनों का एक साथ उपयोग किया जाता है। इससे शरीर में इन्फेक्शन और कोई दुष्प्रभाव भी पड सकता है। इसीलिए इसका उपयोग डॉक्टर के परामर्श द्वारा करें।

बरगद के पेड़ के बहुत से फायदे और गुण भी हैं। साथ ही आपको बता दिया गया हैं की किन अवस्थ. ाओं में बरगद के पेड़ का उपयोग नहीं करना चाहिए। अगर आप इस लेख में बताये गए बरगद के गुणो से प्रभावित हुए हैं और इसका उपयोग करना चाहते है। तो इस लेख में दी गयी जानकारी को अच्छे से पढ़ ले।बरगद के पेड़ का इस्तेमाल बहुत प्राचीन समय से स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज करने के लिए किया जा रहा है। बरगद के जड़ों और पत्तो का इस्तेमाल दिमाग को स्वास्थ्य बनाने के लिए भी किया जाता है।

वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई इस तकनीक से अब मादा बछिया ही पैदा होंगी

खेती–किसानी के साथ–साथ पशुपालन से जुड़े किसानों के लिए एक काफी अच्छी खबर है। दरअसल, मध्य प्रदेश सरकार ने दूध के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान की एक नयी तकनीक शुरू की है, जिससे गाय और भैंसों में केवल बछियों का ही जन्म होगा। वर्तमान में किसान अपनी आमदनी को दोगुनी करने के लिए खेती–बाड़ी के साथ–साथ पशुपालन का काम भी करते हैं। इसी कड़ी में सरकार के द्वारा भी किसानों और पशुपालकों की आर्थिक तौर पर मदद की जाती है।

बतादें, कि किसानों के फायदे के लिए केंद्र और राज्य सरकारें भी बहुत सारी योजनाओं को जारी करती हैं। ताकि पशुपालन को और भी ज्यादा प्रोत्साहन दिया जा सके। दरअसल, मध्य प्रदेश सरकार ने दूध के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान की एक नयी तकनीक सेक्स साटेर्ड सीमन (Sex Sated Semen) का प्रारंभ किया है, जिससे सिर्फ बछियों का ही जन्म होगा।

सेक्स साटेर्ड सीमन (Sex Sated Semen) क्या होता है ?

सेक्स साटेर्ड सीमन (Sex Sated Semen) एक ऐसी तकनीक है, जो पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान के लिए शुरू की गई है। इस तकनीक से गाय और भैंस में केवल मादा बच्चे उत्पन्न किए जाएंगे। इस सेक्स सॉटेड तकनीक से मादा पशुओं की संख्या बढ़ेगी और संख्या बढ़ने से दुग्ध उत्पादन में भी अच्छी–खासी वृद्धि देखने को मिलेगी।

कृत्रिम गर्भाधान घर–घर जा कर किया जा रहा है पशुओं की बेहतरीन नस्ल सुधार एवं दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए वैज्ञानिक तकनीक सेक्स साटेर्ड सीमन (Sex Sated Semen) लाई गई है। इस तकनीक का इस्तेमाल पशुपालन विभाग के पशु चिकित्सा सहायक व पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी अपने क्षेत्र के पशु चिकित्सालय, औषधालय व कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र एवं उस क्षेत्र के उन्नत किसानों के यहां घर–घर जाकर भी सेक्स साटेर्ड सीमन (Sex Sated Semen) तकनीक से कृत्रिम गर्भाधान कर रहे हैं।

सेक्स साटेर्ड सीमन (Sex Sated Semen) तकनीक से होने वाले फायदे क्या–क्या हैं ?

अब ये मानी सी बात है, कि इस सेक्स साटेर्ड तकनीक से किसानों के दुग्ध उत्पादन में अच्छी– खासी बढ़ोत्तरी होगी। इस तकनीक से मादा पशुओं की बढ़ोत्तरी होगी, जिससे दूध का उत्पादन भी बढेगा। इस तकनीक से दुधारू पशुओं की संख्या बढ़ेगी। इस तकनीक से किसानों की आमदनी में इजाफा होगा।

सेक्स साटेर्ड सीमन (Sex Sated Semen) तकनीक से गर्भाधान का शुल्क

सरकार द्वारा शुरू की गई इस तकनीक से कृत्रिम गर्भाधान कराने के लिए अलग–अलग वर्गों से अलग. –अलग कीमत हांसिल की जा रही है।

इसमें सामान्य व पिछड़ा वर्ग के पशुपालकों के लिए 450 रुपए लगेगा एवं अनु जाति व जनजाति वर्ग के पशुपालकों से 400 रुपए का शुल्क लिया जाऐगा। इस तकनीक से जितने भी पशुओं में एआई की जाऐगी। उस पशु व उससे उत्पन्न पशु के बच्चा का युआईडी टैग चिन्हित कर जानकारी इनाफ सॉफ्टवेयर पर अपलोड कर दी जाएगी।

पोल्ट्री फार्म खोलने के लिए सरकार देगी 40 लाख, जानें पूरी जानकारी

मुर्गी पालन को बढ़ावा देने के लिए बिहार सरकार द्वारा शुरू की गई योजना का नाम ष्समेकित मुर्गी विकास योजनाष है। इस योजना के जरिये सरकार अंडा उत्पादन पर ध्यान केंद्रित कर रही है। किसानों को अंडे का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस योजना के जरिये किसान लाभ भी कमा सकते है। मुर्गी पालन करने के लिए, सरकार बिहार राज्य के लोगों को 40 लाख रुपए की राशि प्रदान कर रही है। यदि कोई व्यक्ति घर बैठे ही बिजनेस करना चाहता है, तो उसके लिए यह सुनहरा मौका है।

इस योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को 50 फीसदी का अनुदान प्रदान किया जायेगा। वही सामान्य जाती के लोगों को 30 फीसदी अनुदान दिया जायेगा। पोल्ट्री फार्मिंग का व्यवसाय कर किसान अन्य लोगों को भी उसमें रोजगार प्रदान कर सकते है। मुर्गी पालन के इस कार्य को रोजगार का सबसे बेहतर माध्यम माना जाता है।

आवेदन के जरूरी दस्तावेज क्या है ?

- आवेदक का आधार कार्ड
- आवेदक का निवास प्रमाण पत्र
- पासपोर्ट साइज फोटो
- जाति प्रमाण पत्र
- बैंक की पास बुक की फोटो कॉपी
- पैन कार्ड की फोटो कॉपी
- आवेदन करते वक्त, आवेदक के पास राशि की छाया प्रति
- भूमि का ब्यौरा या नजरी नक्शा
- मुर्गी पालन का प्रशिक्षण प्रमाण पत्र

समेकित मुर्गी विकास योजना में कैसे करें आवेदन ? यदि आवेदक इस योजना के लिए ऑनलाइन आवेदन करना चाहता है, तो state-bihar-gov-in वेबसाइट पर कर सकता है। यह कृषि मंत्रालय की वेबसाइट है। यदि आवेदक ऑफलाइन आवेदन करना चाहता है तो, नजदीकी कृषि मंत्रालय में जाकर आवेदन कर सकता है। इस योजना में आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 मार्च 2024 है।

जानिए गर्मियों में पशुओं के चारे की समस्या खत्म करने वाली नेपियर घास के बारे में

भारत एक कृषि प्रधान देश है। क्योंकि, यहां की अधिकांश आबादी खेती किसानी पर निर्भर है। कृषि को अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ माना जाता है। भारत में खेती के साथ–साथ पशुपालन भी बड़े पैमाने पर किया जाता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जहां खेती के पश्चात पशुपालन दूसरा सबसे बड़ा व्यवसाय है। किसान गाय–भैंस से लेकर भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में तरह–तरह के पशु पालते हैं।

दरअसल, महंगाई के साथ–साथ पशुओं का चारा भी फिलहाल काफी महंगा हो गया है। ऐसा माना जाता है, कि चारे के तौर पर पशुओं के लिए हरी घास सबसे अच्छा विकल्प होती है। यदि पशुओं को खुराक में हरी घास खिलाई जाए, तो उनका दुग्ध उत्पादन भी बढ़ जाता है। लेकिन, पशुपालकों के सामने समस्या यही है, कि इतनी सारी मात्रा में वे हरी घास का प्रबंध कहां से करें? अब गर्मियों की दस्तक शुरू होने वाली है। इस मौसम में पशुपालकों के सामने पशु चारा एक बड़ी समस्या बनी रहती है। अब ऐसे में पशुपालकों की ये चुनौती हाथी घास आसानी से दूर कर सकती है।

नेपियर घास पशुपालकों की समस्या का समाधान है

किसानों और पशुपालकों की इसी समस्या का हल ये हाथी घास जिसको नेपियर घास (छमचपलंत ळतें) भी कहा जाता है। यह एक तरह का पशु चारा है। यह तीव्रता से उगने वाली घास है और इसकी ऊंचाई काफी अधिक होती है। ऊंचाई में ये इंसानों से भी बड़ी होती है। इस वजह से इसको हाथी घास कहा जाता है। पशुओं के लिए यह एक बेहद पौष्टिक चारा है। कृषि विशेषज्ञों द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक, सबसे पहली नेपियर हाईब्रिड घास अफ्रीका में तैयार की गई थी। अब इसके बाद ये बाकी देशों में फैली और आज विभिन्न देशों में इसे उगाया जा रहा है।

नेपियर घास को तेजी से अपना रहे लोग

भारत में यह घास 1912 के तकरीबन पहुंची थी, जब तमिलनाडु के कोयम्बटूर में नेपियर हाइब्रिड घास पैदा हुई। दिल्ली में इसे 1962 में पहली बार तैयार किया गया। इसकी पहली हाइब्रिड किस्म को पूसा जियंत नेपियर नाम दिया गया। वर्षभर में इस घास को 6 से 8 बार काटा जा सकता है और हरे चारे को अर्जित किया जा सकता है। वहीं, यदि इसकी उपज कम हो तो इसे पुनः खोदकर लगा दिया जाता है। पशु चारे के तौर पर इस घास को काफी तीव्रता से उपयोग किया जा रहा है।

www.merikheti.com

नेपियर घास गर्म मौसम का सबसे उत्तम चारा है

हाइब्रिड नेपियर घास को गर्म मौसम की फसल कहा जाता है, क्योंकि यह गर्मी में तेजी से बढ़ती है। विशेष. कर उस वक्त जब तापमान 31 डिग्री के करीब होता है। इस फसल के लिए सबसे उपयुक्त तापमान 31 डिग्री है। परंतु, 15 डिग्री से कम तापमान पर इसकी उपज कम हो सकती है। नेपियर फसल के लिए गर्मियों में धूप और थोड़ी बारिश काफी अच्छी मानी जाती है।

नेपियर घास की खेती के लिए मृदा व सिंचाई

नेपियर घास का उत्पादन हर तरह की मृदा में आसानी से किया जा सकता है। हालांकि, दोमट मृदा इसके लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। खेत की तैयारी के लिए एक क्रॉस जुताई हैरो से और फिर एक क्रॉस जुताई कल्टीवेटर से करनी उचित रहती है। इससे खरपतवार पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं। इसे अच्छे से लगाने के लिए समुचित दूरी पर मेड़ बनानी चाहिए। इसको तने की कटिंग और जड़ों द्वारा भी लगाया जा सकता है। हालांकि, वर्तमान में ऑनलाइन भी इसके बीज मिलने लगे हैं। खेत में 20–25 दिन तक हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए।

मिट्टी की सेहत – खाद

शानदार उपज पाने के लिए सॉइल हेल्थ कार्ड योजना के जरिए मिट्टी की जांच कराऐं

किसान भाई बेहतरीन फसल पैदावार के लिए खेत की मृदा की जांच अवश्य कराएं। मृदा की जाँच कराने हेतु सॉइल हेल्थ कार्ड बनवाना पड़ेगा। किसानों को फायदा पहुंचाने के लिए सरकार विभिन्न योजनाएं चला रही हैं। किसान फसल की बेहतरीन उपज प्राप्त कर सकें। इसके लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना (Soil Health Card) चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत किसान भाई अपने खेत की मृदा की जांच कराते हैं। जाँच कराने के बाद रिपोर्ट के आधार पर खेती करते हैं, जिससे उनकी काफी कम लागत आती है। साथ ही, उत्पादन भी काफी अच्छा होता है। किसानों के खेत की मृदा जाँच करने के लिए प्रयोगशालाएं निर्मित की गई हैं। जहां वैज्ञानिक मृदा की जांच के उपरांत उसमें मौजूद गुण व दोष की सूची तैयार करते हैं। इस सूची में मिट्टी से जुड़ी जानकारी एवं सटीक सलाह होती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अंतर्गत खेती करने पर किसानों को बेहत. रीन फसल पैदावार हांसिल होती है। साथ ही, मृदा का भी संतुलन स्थिर बना रहता है।

सॉइल हेल्थ कार्ड बनवाने का तरीका

सॉइल हेल्थ कार्ड तैयार कराने के लिए कृषक भाईयों आपको सबसे पहले आधिकारिक वेबसाइट soilhealth-dac-gov-in पर जाना है। उसके बाद होम पेज पर मांगी गई जानकारी को भरकर लॉगिन करना है। अब पेज खुलने पर राज्य का चयन करें। अगर आप पहली बार आवेदन कर रहे हैं, तो आपको पंजीकृत न्यू यूजर के विकल्प का चयन करना पड़ेगा। किसान भाई आवेदन फॉर्म में मांगी गई समस्त डिटेल्स सही–सही भरें। इसके उपरांत सबमिट बटन पर क्लिक कर दें। किसी दिक्कत परेशानी का सामना करना पड़े तो किसान भाई हेलपलाइन नंबर 011–24305591 और 011–24305948 पर भी सम्पर्क साध सकते हैं। वहीं, इसके अतिरिक्त helpdesk&soil@gov-in पर ई–मेल भी किया जा सकता है।

सॉइल हेल्थ कार्ड योजना के फायदे

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस योजना के अंतर्गत कोई भी भारतीय किसान अपने खेत की मृदा की आसानी से जांच करवा सकता है। इस कार्ड के माध्यम से किसान जानकारी ले सकते हैं, कि मृदा में किन पोषक तत्वों का अभाव है। साथ ही, कितना जल उपयोग करना है और किस फसल की खेती करने से उन्हें अधिक फायदा मिलेगा। कार्ड बन जाने के उपरांत किसान को उत्पादक क्षमता, मिट्टी में नमी का स्तर, मृदा की सेहत, क्वालिटी के साथ–साथ मृदा की कमजोरियों को सुधारने के तरीकों की भी जानकारी प्रदान की जाती है।

प्रगतिशील किसान

MBA करने के बाद नौकरी की जगह खेती चुन किसान को हो रहा लाखों का मुनाफा

आज हम आपको एक ऐसे किसान की कहानी सुनाऐंगे जो कि डठ। जैसी बड़ी डिग्री करने के उपरांत बेहतर नौकरी तलाशने की बजाय खेती कर रहा है। यह युवा किसान बिहार से आता है, जिसने नौकरी की जगह कृषि को चुना और आज वह वार्षिक लाखों का मुनाफा उठा रहे हैं। आजकल युवा अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद किसी बड़ी कंपनी में एक अच्छी नौकरी पाना चाहते हैं। परंतु, ऐसे युवा बहुत कम संख्या में हैं, जो कि नौकरी के बदले खेती को प्राथमिकता देते हैं। वह भी तब, जब किसी ने MBA जैसी बड़ी डिग्री हांसिल की हो। जी हां, ये कहने में तो आसान लगता है। परंतु, कुछ ऐसी ही कहानी है बिहार के शेखपुरा जनपद के रहने वाले प्रगतिशील किसान अभिनव वशिष्ट की। जिन्होंने अपनी MBA की पढ़ाई पूरी करने के बाद खेती में हाथ आजमाया और आज वह खेती से वार्षिक लाखों रुपये की आमदनी कर रहे हैं।

अभिनव वशिष्ट ने नौकरी के बजाय खेती को चुना

किसान अभिनव वशिष्ट ने बताया कि वह विगत करीब 19 साल से खेती कर रहे हैं। उन्होंने M-Com और डठ। तक अपनी पढ़ाई की है। अपनी पढ़ाई संपन्न करने के पश्चात उन्होंने नौकरी की बजाय खेती करना सही समझा और आज खेती से ही वह वार्षिक लाखों की कमाई कर रहे हैं, जो शायद ही उन्हें नौकरी में मिल पाता।

उन्होंने यह कहा कि उनके पास खेती के लिए 35 एकड़ भूमि है, जिसमें 4 एकड़ में उनका आम का बगीचाऔर 2 तालाब हैं, जो 1–1 बीगा में बने हुए हैं।

औषधीय पौधों की खेती की वजह से मिल रहा अच्छा खासा लाभ

उन्होंने बताया कि वह खेती के साथ–साथ फिश फार्मिंग और डेयरी फार्मिंग भी करते हैं। डेयरी फार्मिंग में उनके पास 25 गाय और 4 भैंस हैं। किसान अभिनव ने बताया कि उनके यहां 2004 के पहले से ही पारंपरिक फसलें उगाई जा रही हैं, जिसमें चावल, गेहूं समते कई दलहनी फसले शामिल हैं। लेकिन अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने औषधीय पौधों की खेती करनी भी शुरू की। जिससे उनका मुनाफा कई गुना तक बढ़ गया। इसके अलावा उनका मुख्य फोकस सुगंधित पौधों की खेती पर रहा है। किसान ने बताया कि वह सुगंधित पौधों में मिंट, सिट्रोनेला, तुलसी, लेमनग्रास और मेंथा की खेती किया करते हैं। जनपद के 5 से 6 लोगों ने मिलकर एक संगठन बनाया और धीरे–धीरे इन पौधों को संपूर्ण राज्य तक पहुंचाया है। किसान अभिनव का कहना है, कि सुगंधित पौधे की खेती करने के उपरांत एक यूनिट के जरिए प्रोसेसिंग पूरी की जाती है। 2005 में इस यूनिट को खरीदने में लगभग 5 लाख रुपये का खर्च आया था. मशीन को खरीदने में सरकार की तरफ से भी मदद मिली थी।

किसान वार्षिक लाखों का मुनाफा उठा रहा है

दरअसल, वर्षभर आने वाला खर्च और मुनाफे के विषय में बात करते हुए किसान अभिनव वशिष्ट ने कहा कि सुगंधित पौधे की खेती में अधिक खर्चा नहीं आता है। क्योंकि, एक बार इनके बीज या पौधा रोपने के पश्चात 7 से 8 वर्ष तक इन्हें बदलने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इनकी खेती में वर्षभर में करीब 1 एकड़ में 25 से 30 हजार रुपये तक की लागत आती है। इससे करीब 70 से 75 हजार रुपये की आमदनी हो जाती है। इसी प्रकार 1 बीघा में फिश फार्मिंग में करीब डेढ लाख रुपये तक का खर्चा आता है। डेयरी फार्मिंग में यह खर्चा काफी कम बैठता है। उन्होंने बताया कि उनके तबेले से हर रोज 200 लीटर तक दूध निकलता है, जिसको वह बेच देते हैं। उन्होंने बताया कि वह कृषि, मछली पालन और डेयरी उद्योग से वार्षिक 20 से 25 लाख रुपये तक का मुनाफा कमा लेते हैं। इस हिसाब से उनकी वार्षिक आमदनी 30 लाख रुपये से अधिक है।

बिहार के इस किसान ने मधु उत्पादन से शानदार कमाई कर ड़ाली है

बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जनपद के मूल निवासी किसान आत्मानंद सिंह मधुमक्खी पालन के जरिए वार्षिक लाखों रुपये का मुनाफा उठा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन उनका खानदानी पेशा है। उनके दादा ने इस व्यवसाय की नीम रखी थी, जिसके पश्चात उनके पिता ने इस व्यवसाय में प्रवेश किया और आज वह इस व्यवसाय को काफी सफल तरीके से चला रहे हैं।कुछ ही दिन पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने देश के किसानों को खेती के नए तरीके सीखने की सलाह दी थी। उन्होंने कहा था कि खेती में कुछ नया करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। उनकी यह बात बिहार के एक किसान पर पूर्णतय सटीक बैठती है। उन्होंने फसलों की अपेक्षा मधुमक्खी पालन को आमदनी का जरिया बनाया और आज वे वार्षिक लाखों का मुनाफा अर्जित कर रहे हैं। दरअसल, हम बात कर रहे हैं, बिहार के किसान आत्मानंद सिंह की जो कि मुजफ्फरपुर जनपद के गौशाली गांव के निवासी हैं। वह एक मधुमक्खी पालक हैं और इसी के माध्यम से अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं। अगर शिक्षा की बात करें तो उन्होंने स्नातक तक पढ़ाई की है।

मधु उत्पादक किसान आत्मानंद के पास मधुमक्खी के कितने बक्से हैं ?

उन्होंने बताया कि मधु उत्पादन के क्षेत्र में अपने काम और योगदान के लिए उन्हें बहुत सारे पुरस्कार भी हांसिल हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि वैसे तो वार्षिक उनके पास 1200 बक्से तक हो जाते हैं। परंतु, वर्तमान में उनके पास 900 ही बक्से हैं। उन्होंने बताया कि इस बार मानसून और मौसम की बेरुखी के चलते मधुमक्खियों को भारी हानि हुई है। इस वजह से इस बार उनके पास केवल 900 डिब्बे ही बचे हैं। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन एक सीजनल व्यवसाय है, जिसमें मधुमक्खी के बक्सों की कीमत बढ़ती है। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन के इस व्यवसाय को चालू करने में किसी ने भी उनकी सहायता नहीं की। उन्होंने स्वयं ही इस व्यवसाय को खड़ा किया और आज बड़े पैमाने पर मधुमक्खी पालन कर रहे हैं।

किसान आत्मानंद वार्षिक कितना मुनाफा कमा रहा है ?

उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन की वार्षिक लागत बहुत सारी चीजों पर निर्भर करती है। वैसे तो इसमें वन टाइम इन्वेस्टमेंट होती है, जो शुरुआती वक्त में मधुमक्खियों के बॉक्स पर आती है। इसके अतिरिक्त लागत में मेंटेनेंस और लेबर कॉस्ट भी शम्मिलित होती है। उन्होंने बताया कि ये सब बाजार पर निर्भर करता है। मधुमक्खियों के बॉक्स की कीमत सीजन के अनुरूप बढ़ती घटती रहती हैं। इसी प्रकार वर्षभर विभिन्न तरह की चीजों को मिलाकर उनकी लागत 15 लाख रुपये तक पहुँच जाती है। वहीं, उनकी वार्षिक आमदनी 40 लाख रुपये के करीब है, जिससे उन्हें 10–15 लाख रुपये तक का मुनाफा प्राप्त हो जाता है।

श्री राम
फर्टीलाइज़र्स एवं कृषि उद्योग
One-stop solutions for improving the crop and soil texture.
FIPRONIL 0.6% GR
COPPER OXYCHLORIDE 50% WP
COC-50
FARRATA PLUS
INSECTICIDE
Tanu
SULFR-90
SULPHUR 90% MICROGRANULES
FERTILIZER
ZINC
Alex
MAYOR
Silivet
TADKA
KHARA SONA
ORGANIC FERTILIZER

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010